For Private And Personal Use Only

श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी मंथमाला प्रथांक ५७-५८

प्रस्कृति श्री के कांत्रकोत्रहा भागमसासे स्टार्.

त्तथा

अध्यातमगीता.

श्री कुवरविजयजी (अमीकुवर) कृत टबासह.

द्या. छगनलाल लक्ष्मीचंद-वडुना. शा. प्रेमचंद दलसुक्क पाँदराना

> एमनी देव्यु हिम्बी छपार्टी प्रैसिंड करनार

श्री अधारिमज्ञानशसारीक, मंडळ.

हा. वकील म्ह्रीहनलाल हीम्चंद—पादरा सं. १९७८ सन्द-⊀र्पन्न

किमत ०-६-०

पुस्तक मळवानुं ठैकाणुः— वकील मोहनलाल हीमचंद म्र. पादरा (गुजरात).

वडोदरा-शियापुरामां छहाणामित्र स्टीम प्रेसमां विद्रलभाई भाशाराम ठक्करे प्रकाशकने माटे ता. २६-५-२२ ना रोज छापी प्रसिद्ध कर्युं.

प्रकेशस्त्र

अध्यात्मज्ञानरसीक द्रव्यानुयोगना समर्थ ज्ञाता श्रीमद देवचंद्रजी महाराजनं नाम भाग्येज कोइ जैनथी अजाण्युं हशे, आगम ज्ञाननी कुंचीरुप आगमसार नामनो ग्रंथ तेओश्रीए संवत १७७६ ना फागण मासमां मोटाकोट-मरोट-मां चोमासं रहीने बनावेल छै. आ ग्रंथनी उत्तमता ग्रंथ पोतेज सिद्ध करे छै तेनी प्रसंशा करवी ते सोनाने गील्ट करवा जेवुं छे जे ग्रंथ वांचवाथी जणाइ आवशे. आ ग्रंथ अध्यात्मज्ञानरसिक श्रीमद् बुद्धिसागर सुरिजी महाराजना सद्वदेशथी वडु ताळुके पादराना शा. छगनलाल लक्ष्मीचंद ता. पादराना शा.

प्रेमचंद दलसुखभाइए सं. १९६७ नी सालमां छपावी तेनी १०००) नकल भेट तरीके आपी हती तमाम नकल खपी जवाथी अने तेनी घणी मागणी चालु रहेवाथी उक्त स्रिजी महाराजना सदुपदेश्यथी तेनी आ बीजी आहती पोतानाज खर्चे छपात्रवा सदर बंने प्रइस्थोनी इच्छा थवाथी मंडळे आ अती उपयोगी प्रंथनी बीजी आहती बहार पाडी छे ते माटे ते बंने प्रइस्थोने धन्यवाद घटे छे.

आ ग्रंथ प्रकरण रत्नाकर पहेला भागमां छपायलो छे तेमां तथा पहेली आहतीमां प्रतिमापुजा तथा गुणस्थानक विचार नामना अगत्यना विषयो छपायला नहोता पण ते पछी श्रीमद् देवचंद्रजी महाराजना बनावेला

લ

तमाम ग्रंथो छपाववानी पहती करतां आगम-सार ग्रंथनी घणी पतो भेगी करी जेमां स्ररतना श्री मोहनलालजी महाराजना भंडार-मांथी वे प्रतो नं. ४०९-५६३ नी मळी तथा पं० श्री लाभविजयजी पासेथी एक पत तेमज पादराना भंडारमांथी एक पत मळी ते चारे प्रतोमां आ ग्रंथना पृष्ट ५५ नी पहेली लीटीथी श्रुरु थतो प्रतिमापूजानो तथा पृष्ठ २०४ थी श्वरु थतो गुणस्थानक विचार ए बंने विषयो टाखल हता तेथी आ ग्रंथमां ते जे ते स्थळे ढाखळ करी लेवामां आवेला छे पादराना भंडारनी प्रत तथा पं. लाभविजयजी वाळी पत तेओश्रीना पादराना संग्रहमां मोज़द छे.

हालनी मोघवारीना लीधे आ ग्रंथनी

દ્

पडतर किंमत ०-१०-० आवेल छतां तेनो विशेष लाभ लेवाय तेटला माटे मंडलना नियम मुजब पडतरथा ओछी मात्र रु. ०-६-० किंमत राखवामां आवी छे आत्मार्थी जनो तेनो सारी रीते लाभ लेशे एवी आशा छे.

आगमसारनी पहेली आद्यतीमां श्रीमद् देवचंद्रनी महाराजनो बनावेल अध्यात्मगीता ग्रंथ टबा सह दाखल कर्यो हतो पण हालमां सदर ग्रंथ उपर श्री कुवरविजयजी अपर नाम अमीकुवरजी माहाराजनो बनावेलो टबो मली आववाथी ने ते बिस्तारपुर्वक उत्तम रीते लखायलो होवाथी तेटबो आ ग्रंथमां दाखल करवा अमारा परोपकारी गुरु महाराज श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिजी महाराजे पेरणा करवाथी ते दाखल करेल छे ने ते एक वखत अवश्य वांची जवा आग्रहपुर्वक भलामण छे.

आ यंथ छपाववामां उमेटाना शेठ
फुलभाइ मानभाइ जेओ आत्मज्ञाननी रुची
वाळा छे तेओए रु. १००) आपेला छे तेमनो
तेमज गाम उछद्नी बाइ माणेक ते शाः
नेमचंद मोतीचंद्नी दीकरीए रु. ५०)
आपेला छे तेमनो आभार मानवामां आवे छे.

छेत्रदे आ उपयोगी ग्रंथ बहार पाडवा माटे पेरणा करनार परम पुज्य गुरू श्री बुद्धिसागरसूरिजी माहाराजनो उपकार मानी आ प्रस्तावना पुर्ण करवामां आवे छे.

पादरा-अक्षय } वकील मोहनलाल तृतिया १९७८. ही मचंद.

अनुक्रमणिका.

į	आगमसार				पृष्ट
	त्रणकरण .	•••	•••	•••	१
	ज्ञानस्वरूप	•••	•••	•••	Ę
	छ द्रव्यनु स्व	ह्रप	•••	•••	૭
	आठ पक्ष	"	•••	•••	१७
	सात नय	77	•••	•••	३६
	चार निक्षेप	"	•••	•••	५०
	प्रतिमा पूजा			•••	લ્ લ્
	चार प्रमाण	77	4 9 4	•••	१०७
	सप्तभंगी	75	•••	•••	१०९
	निगोद	"		•••	११८
	बार व्रत चारि	रेत्र ,,	•••	•••	१३४
	चार ध्यान	, , 77	•••	•••	१४६
	भावना	"	•••	•••	१६२
	समकित	39	•••	•••	१६८
	पंचसमवाय	"	•••		१९५
	गुणस्थानक वि	वेचार		•••	२०४
ર	अध्यात्मगीत				

ग्रुद्धिपत्रक.

δā	र्शिटी	अशुद्ध शुद्ध
१८	१३ गुण अ	नंता छे गुण एक छे गुण
		अनंता छे
१९	५ पर्याय	छे पर्याय छे ते अनेक-
		पणुं छे
२३	९ नथी	नथी, एमज आ-
		काशास्तिकायने विषे
		आकाशनाज स्व द्र-
		न्यादिक चार छे
		पण बीजामां पांच
		द्रव्यना नथी
३०	१४ द्रव्यक्षेत्र	स्वक्षेत्र

१०

३१	८ अलोकाश	अलोकाका रा
३३	१४ विछेडरेा	विछडशे
३६	११ द्रव्यार्थिक	ते नित्य द्रव्यार्थिक
३७	२ द्रव्ययम्	द्रव्यं
३७	११ द्रज्य ते	द्रव्य एक छे
३४	४ भव्यपणुं	भव्यपणुं सिद्धपणुं
88	२ एक विरति	एक सर्व विरति
90	५ द्रव्य	द्रव्य वचनथी प्रह्या
		जाय नहीं पण
99	१२ घोढा	घोडा
98	२ पण	पण नाम
५ ४	८ पाखे	साखे
१८	१४ भमवती	भगवती
८९	९ खास	साख

११

९१	५ एग	एम
९७	१४ (छेडे उमेखुं)	एम नयचक्रसारमां
		कह्यं छे
९८	११ नैगर्भ	झुद्ध नैगमे
१०३	१० निर्गुणगो	निर्गुणनो
१०६	२ माटे	माटे
११०	२ परद्रव्यना	परद्रव्यना
988	११ ग्रुगगत	गु गपत्
११५	१२ रह्यो छे	रह्यो छे तथा अध-
		र्मास्तिकायनो एक
		प्रदेश रह्यो छे
११५	१४ कोइ द्रब्य	कोइ द्रव्य कोइ द्रव्य
११६	७ धर्मास्किाय	धर्मास्तिकाय
१२४	९ सागरोपमना	सागरोपमनुं छे तेना

१४३	११ पोषाने	पोघीने
१४५	३ उस्सर्ग	उत्सर्ग अने ते
१६४	८ तेना	तेवा
१६७	७ चारित्रनुं	चारित्र ते मोक्षनुं
१७१	१३ ५ दे	५ गणिविजय ६ दे
२११	८ एहवी	एहनी
२१२	१३ तेडनो	तेहनो
२२१	११ अव्याक	अन्यापक
२५४	७ धन्य	स्कंध
२६१	७ पूर्ण	पूर्व

શ્રી અધ્યાત્મજ્ઞાનપ્રસારક મ'હળ તરફથી શ્રીમદ્દ છુદ્ધિમાગરમૂરિજી શ્રન્થમાળામાં પ્રગઢ થયેલા શ્રન્થા.

પ્ર ' શંક પુક	કિંમત
૧. क બંજન સંગ્રહ બાગ ૧લે. ૨૦૦	0-1-0
× ૧. અધ્યાત્મ બ્યાખ્યાનમાળા. ૨૦૬	080
× ર. ભજનસંગ્રહ ભાગ ૨ જો. ૩૩૬	060
× 8. ભજનસચંદ્ર ભાગ ૩ જો. ૨૧૫	060
× ૪. સમાધિ શતકમ્ ૩ ૪૦	62
× ૫. અનુભવ પશ્ચિશી, ૨૪૮	0(0
^૬ . આ _{લ્} મપ્રદીષ . ૭૧૫	0
× ૭. ભજનસ મહ લાગ ૪થાે ૭•૮	0- 20
૮. પરમાત્મદર્શન. ૪૩૨	०-१२-०
× ૯• પરમાત્મજ્યાતિ. ૫૦૦	०-१२-०
× ૧૦. તત્ત્વભિંદુ. ૨૩૦	0-83
× 11 ગુણાનુરાગ. (આવૃત્તિ બીજી) ૨૪	० ५ ०
x ૧૨–૧૩. લજનસંગ્રહ ભાગ પ મા	
તથા ન્રાનદીપિકા. ૧૯૦	0-5-0

Ą

🗴 ૧૪. તીર્થય ત્રાનું વિમાન (આ.ખીજી)૬૪ 🕒 ૦-૧-૦ × ૧૫. અધ્યાત્મ ભજનસંગ્રહ 960 0-6--0 × ૧૬. ગરૂખાધ. 992 0--8--0 × ૧૭. તત્ત્રનાનદીપિકા 928 0-- 8-0 ૧૮. ગહુલીસંગ્રહ ભા. ૧ ११२ ०--३--० 🗴 ૧૯--२० શ્રાવકધર્મસ્વરૂપ ભાગ ધુ--૨ (આદૃત્તિ ત્રીજી) 80-80-q-0 × ૨૧. ભજન પદ સંગ્રહ ભાગ ૬ ફેા. ૨૦૮ ૦-૧૨-૦ રર. વચતામૃત. 30/ 0-97-0 ૨૩. યાગદીપક્ર २६८ 0-98-0 ૨૪. જૈન ઐતિહાસિક રાસમાળા. ૪૦૮ ૧–૦–૦ × ૨૫. આનન્દ્રધન પદસંગ્રહ ભાવાર્થ સહિત. 101 2-c-0 🗴 ૨૬. અધ્યાત્મ શાન્તિ (આવૃત્તિબીછ)૨૩૨ ૦-૩-૦ ૨૭. કાવ્યસંત્રહ ભાગ ૭ મા. ૧૫૬ ૦-૮-૦ × ૨૮. જૈનધર્મની પ્રાચીન અને અર્વા-ચીન સ્થિતિ. ef 0-2 -- 0

x રહે. કુમારપાલ ચગ્ત્રિ (હિંદી) ૨૮૭	0=-5=0		
૩૦. થી ૩૪. સુખસાગર સુરૂગીતા. ૩૦૦	o-8-0		
•	•-X·0		
× ૩૬. વિજાપુર વૃતાંત. હત	0-8-0		
૩૭. સાભરમતી કાવ્ય ૧૯૬	0-5-0		
૩૮. પ્રતિજ્ઞા પાસન. ૧૧ ૦	0-4-0		
૩૯–૪૦–૪૧. જેનગચ્છમત પ્રખધ.			
સ'ઘપ્રગતિ. જૈતગીતા.	૧-૦-૦		
૪૨. જેન ધાતુપ્રતિમા લેખ સંત્રહ.	૧-૦-૦		
૪૩. મિત્રમૈત્રી.	0-4-0		
× ૪૪. શિષ્યાપનિષદ્	०-२-०		
૪૫. જૈનાેપરિષદ્. ૪૮	०२०		
૪૬૪૭. ધાર્મિક ગદ્યસંત્રહ તથા પત્ર			
સદુપદેશ. ભાગ ૧ લે!. ૯૭૬	3-0-0		
૪૮. ભજન સંગ્રહ ભા. ૮ ૯૦૪	3-0-0		
૪૯. શ્રીમદ્દ દેવચદ્ર ભા. ૧ ૧૦૨૮	२-०-०		
૫૦. કર્મધોગ ૧૦૧૨	3.0-0		

४

પ૧.	આત્મતત્વ દર્નાન	૧ુ કર	e-? o-o
પર.	ભારત સહ કાર શિક્ષણ	१६८	0-90-0
૫૩.	શ્રીમદ્દેવચંદ્ર ભા. ર	૧ ૨૦૦	3-2-0
પ૪.	ગહુલી સંગ્રહ બાર	૧૭૦	0-8-0
પપ.	ક્રમ પ્રકૃત્તિ ીકાભાષાંતર	(00	3-0-0
પ૬.	ગુરૂગીત ગુ ં હલી સંગ્રહ	૧૯૦	o-'; २ -०
પછ-પ્	આગમસાર અને અ ^{દ્} ય	ાત્મ-	
	ગીતા.	४७०	0-5-0

× આ નીશાની વાળા ગ્ર'થા સીલકમાં નથી ઉપરનાં પુસ્તકા મળવાતુ ઠેકાર્ણુ

> વકીલ માહનલાલ હીમચંદ (ગુજરાત) પહિરા

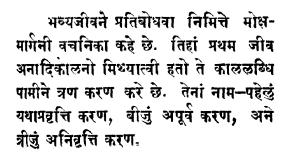
ဆိုင

॥ श्रीसर्वज्ञाय नमः ॥

[] अथ []

॥ श्रीमत्पंडितश्रीदेवचंद्रजीकृत ॥

आगमसार.



₹

आगमसार.

तेमां पहेलुं यथाप्रवृत्ति करण कहे छे. १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ वेदनीय, ४ अंतराय, ए चार कर्मनी त्रोस कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति छे. तेमांथी ओगणत्रीस कोडाकोडी खपावे अने एक कोडाकोडी बाकी राखे, तथा ? नामकर्म, २ गोत्रकर्म, ए वे कर्मनी वीस कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति छे, तेमांथी ओगणीस खपावे अने एक को-डाकोडी राखे, अने मोहनीयकर्मनी सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति छे. तेमांथी अगणोतेर खपावे, बाकी एक कोंडाकोडी शेष राखे। एवी रीते एक आयुकर्म वर्जीने वाकी साते कर्मनी एकपल्योपमना असंख्या-तमा भागेन्यून एक कोडाकोडी सागरोपमनी

स्थिति राखे, एवो जे वैराग्यरूप उदासी परिणाम तेने यथापद्यत्तिकरण कहिये. ए पहेळुं करण, सर्वसंज्ञी पंचेंद्रीजीव अनन्तीवार करे छे.

हवे वीजं अपूर्वकरण कहे छे. ते एक कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितिमां हेथी एक मुहूर्त अने अनादि मिध्यात्व जे अनंतानुबं-धीआनी चोकडी ते खपाववाने अज्ञान हेय ते छांडवं, अने ज्ञान उपादेय एटले आद्रवं, ए वांछारूप अपूर्व कहेतां पहेलां क्यारे न आव्यो एवो जे परिणाम ते अपूर्व करण कहीये, ए बीजं करण ते समकितयोग्य जीवने थाय.

हवे त्रीजुं अनिष्टत्ति करण कहे छे. ते इहुर्तरूप स्थिति खपावाने निर्मेस्न शुद्ध सम- ૪

कित पामे मिथ्यात्वनो उदय मटे त्यारे जीव उपशम समकित पामे, एवो जे परिणाम तें अनिवृत्ति करण कहिये. ए करण कीधाथी गंठीभेद थयो कहीये. उक्तंश्च आवश्यकनि-र्युक्ती " जा गंठी ता पढमं। गंठीसमय छेओ भवेबीओ ॥ अनिअद्दिकरणं पुण । समत्तपु-रक्खडेजीवे ॥ १ ॥ ऊसर देसं दृढृळियं च । विज्जाइ वणदवो पष्प इय ॥ मिच्छत्तस्साणुदए। उवसमसम्मं लहुइ जीवो ॥ २ ॥ एम मिथ्या-त्वनो उदय मट्याथी जीव समकित पामे, ते समिकतनी सद्दृशाना वे भेद छे, एक व्य-वहार समिकत सद्हणा, बीजी निश्चय सम-कित सदहणाः

देवश्रीअरिहंत देवाधिदेव, अने गुरु

6

मुसाधु ने सूधो अर्थ कहे ते, तथा धर्म केवलीनो प्ररूपो ने आगममां सातनय तथा एक
पत्यक्ष बीनुं परोक्ष ए वे प्रमाण अने चार
निक्षेप करी सददे, एवी सद्दरणा ते व्यवहार
समिकत कहिये. ए पुण्यनुं कारण तथा धर्म
पगट करवानुं कारण छे एवी रुचि ज्ञानिवना
पण घणा जीवोने उपने.

बीजुं निश्चयसमिकत ते आवी रीते जे निश्चय देव ते आपणोज आत्मा जीव निष्पन्न-स्वरूपी सिद्ध ते संग्रहनयनीसत्तागवेपतां, तथा निश्चयगुरु ते पण आपणो आत्माज तत्त्वरमणी, अने निश्चयपर्व ते आपणा जीवनी स्वभावज छे एवी सदहणा ते मोक्षतुं कारण छे केमके जीव स्वरूप ओल्रस्या विना कर्म स्वपे नहीं

एवी शुद्ध सद्दहणा ते निश्चयसमिकत.

हवे ज्ञाननुं स्वरूप कहे छे ते ज्ञानना वे भेद छे. एक व्यवहारज्ञान, बीजुं निश्चयज्ञान, तेमां अन्यमितनां सर्वशास्त्र जाणवां. अथवा जैनागममध्ये कह्या जे एकगणितानुयोग ते क्षेत्रमान, बीजो चरणकरणानुयोग ते किया-विधि, त्रीजो धर्मकथानुयोग ए त्रण अनुयो-गनुं जाणवापणुं ते सर्व व्यवहारज्ञान छे अथवा अन्तरउपयोगिवना जे सूत्रना अर्थ करवा ते पण व्यवहारज्ञान किह्यें.

हवे निश्चयज्ञान ते छ द्रव्य तथा तेना
गुण अने पर्याय सर्वने जाणे तेमां पांच अजीव
द्रव्य छे ते हेय-कहेतां छांडवायोग्य जाणी
छांडवा, अने एक जीवद्रव्य ते निश्चयेंकरी

4

सिद्धसमान मोक्षमयी मोक्षनो जाणनार मोक्षनुं कारण मोक्षनो जावावाछो मोक्षमांज रहे छे एहवो आपणो जीव अनंतगुणी अरूपी छे तेनेज ध्यावे ते निश्चयज्ञान कहियें.

हते एक धर्मास्तिकाय बीजो अधर्मास्ति-काय, त्रीजो आकाशास्तिकाय, चोथो पुद्गला-स्तिकाय, पांचमो जीवास्तिकाय, अने छट्टो काल ए छ द्रव्य शाश्वता छे. तेनुं ज्ञान कहे छे. ए छ द्रव्य मध्ये पांच अजीव द्रव्य छे अने एक जीव द्रव्य ते चेतनालक्षणवंत छे. उपादेय छे.

हते ए छ द्रव्यना गुण कहे छे. पहेलो धर्मास्तिकायना चार गुण एक अरूपी, बीजो

🗲 आग

अचेतन, त्रीजो अक्तिय, चोथो गतिसहायगुणः बीजा अधर्मास्तिकायना पण चार गुण छे. एक अरूपी, बीजी अचेतन त्रीजो अक्रिय, अने चोथो स्थितिसहायगुण. त्रीजा आका-शास्तिकायद्रव्यना चार गुण छे. एक अरूपी, बीजो अचेतन, त्रीजो अक्रिय, चोथो अवगा-हना दानगुण. हवे कालद्रव्यना चार गुण कहे छे. एक अरूपी, बीजी अचेतन, त्रीजो अक्रिय, चोथो नवापुराणवर्त्तनालक्षण. इवे पुद्रलद्रव्यना चार गुण कहे छे. एक रूपी, बीजो अनेतन, त्रीजो सक्रिय, चोथो मिलण-विखरणरूप पूरणगलन गुण. हवे जीवद्रव्यना चार गुण कहे छे. एक अनंतज्ञान, बीजो अनंतदर्शन, त्रीजो अनन्तचारित्र,

अनंतवीर्य, ए छ द्रव्यना गुण कह्या ते नित्य-भ्रुव छे.

हवे छ द्रव्यना पर्याय कहे छे. धर्मास्ति-कायना चार पर्याय छे. एक खंध, बीजो देश, त्रीजो प्रदेश, चोथो अगुरुछघु, अथर्मास्ति-कायना चार पर्याय एक खंध. वीजो देश. त्रीजो प्रदेश, चोथो अगुरुलघुः पुदुलद्रव्यना चार पर्याय. एक वर्ण, बीजो गंध, त्रीजो रस, चोथो स्पर्श अग्रहलघुसहितः तथा आकाशा-स्तिकायना चार पर्याय एक खंध, बीजो देश, त्रीजो पदेश, चोथो अगुरुछघु; काछ-द्रव्यना चार पर्यायः एक अतीत काल, बीजो अनागत काल, त्रीजो बत्तेमान काल, चोथो अगुरुलघु: अने जीव द्रव्यना चार पर्याय.

\$ 3

आगमसार.

एक अव्यावाध, वीजो अनवगाह, त्रीजो अमूर्त्तिक, चोथो अगुरुलघु. ए छ द्रव्यना पर्याय कह्या.

हवे छ द्रव्यना गुणपर्यायनं साधम्र्यपणुं कहे छे. अगुरु लघुपर्याय सर्वेद्रव्यमां सरीखो छे अने अरूपीगुण पांच द्रव्यमां छे. एक पदलद्रव्यमां नथी: तथा अचेतनगुण पांच द्रव्यमां छे. एक जीवद्रव्यमां नथी, अने स-क्रियगुण जीव तथा पुद्रल ए वे द्रव्यमां छे. बाकी चार द्रव्यमां नथी: तथा चलणसहाय-गण एक धर्मास्तिकायमां छे, बीजा पांच द्रव्यमां नथी: वली स्थिरसहायगुण एक अधर्मास्तिकायमां छे. बीजा पांच द्रव्यमां नथीः तथा अवगाहनाग्रुण ते एक आकागद्रव्यमां

आगमसार•

छे, बीजा पांच द्रव्यमां नथी: अने वर्तनागुण ते एक कालद्रव्यमांज छे. बीजा पांच द्रव्यमां नथी: तेमज मिलणविखरणगुण ते पुद्रलमां छे, बीजा द्रव्यमां नथी तथा ज्ञान-चेतना गुण ते एक जीव द्रव्यमां छे, पण वीजा द्रव्यमां नथी. ए मूलगुण कोइ द्रव्यना कोइ द्रव्यमां मिले नहीं एक धर्म बीजो अधर्म, त्रीजो आकाश, ए त्रण द्रव्यना त्रण गुण तथा चार पर्याय सरिखा छे अने त्रण गुणें करी तो काल द्रव्य पण ए समान छे.

हवे वली अग्यार वोले करी छ द्रव्यना गुण जाणवाने गाथा कहे छे.

परिणामी जीव मुत्ता, सपएसा एग खित्त किरिआय। निचं कारण कत्ता,सब्बगय

इयर अप्पवेसे । १।

अर्थ-निश्चयनयथी आप आपणा स्त्र-भावे छए द्रव्य परिणामी छे अने व्यवहारन-यथी जीव तथा पुरुछ ए वे द्रव्य परिणामी छे तथा एक धर्म, बीजो अधर्म, त्रीजो आकाश अने चोथो काल, ए चार द्रव्य अपरिणामी छे. तथा छ द्रव्यमां एक जीव द्रव्य ते जीव छे. बीजा पांच द्रव्य अजीव छे तथा छ द्रव्य-मां एक पुद्रल रूपी छे अने पांच द्रव्य अरूपी छे. छ द्रव्यमां पांच द्रव्य समदेशी छे. अने एक काल इच्य अबदेशी छे. तेमां एक धर्मा-स्तिकाय वीजो अधर्मास्तिकाय ए वे द्रव्य असंख्यात प्रदेशी छे अने एक आकाशद्रव्य अनंतपदेशी छे. जीव द्रव्य असंख्यात प्रदेशी

छे, पुद्गलपरमाणु * अनंतप्रदेशी छे, परमा-णुओ अनंता छे एम पांच द्रव्य सप्रदेशी छे अने छहो काल अपदेशी छे.

छ द्रव्यमां एक धर्मास्तिकाय, बीजो अधर्मास्तिकाय. त्रीजो आकाशास्तिकाय ए त्रण ते एकेक द्रव्य छे. तथा एक जीव द्रव्य बीजो पुद्रल द्रव्य त्रीजो कालद्रव्य ए त्रण अनेकअनेक छे. छ द्रव्यमां एक आकाशद्वव्य क्षेत्र छे. अने बीजा पांच द्रव्य क्षेत्री छे: निश्चयनयथी छ द्रव्य पोतपोताना कार्ये सदा प्रवर्ते छे माटे सिक्रय छे: अने व्यवहारनयथी जीव अने पुद्रल ए वे द्रव्य सिक्रय छे, तेमां पण पुद्रल सदा सिकय छे, अने जीव द्रव्य

^{*} पुद्गलास्तिकायना स्कन्धो पर्यायो अनन्तप्रदेशी छे.

तो संसारी थको सक्रिय छे; पण सिद्धअव-स्थायें थको संसारी क्रिया करवाने अक्रिय छे: तथा वाकीना चार द्रव्य तो अकिय छे: निश्चयनयथी छ द्रव्य नित्य छे. ध्रुव छे; अने उत्पादच्ययें करी अनित्यपणे पण छे तथा व्यवहारनयें जीव अने पुद्रल ए वे द्रव्य अ-नित्य छे, बाकीना चार द्रव्य नित्य छे, यद्यपि उत्पाद्ययञ्चवपणे सर्व पदार्थ परिणमे छे बोपण एक धर्म, बीजो अधर्म, त्रीजो आकाश, चोथो काल. ए चार द्रव्य सदा अवस्थित छे ते माटे नित्य कहां.

छ द्रव्यमां एक जीव द्रव्य अकारण छे अने पांच द्रव्य कारण छे. केमके पांचे द्रव्य जीवने भोगमां आवे छे माटे कारण कहिये.

રૃહ

केमके धर्मास्तिकाय चालवामां साह्य आपे छे. अधर्मास्तिकाय थिर रहेवामां साह्य आपे छे. आकाशास्तिकाय अवकाश आपे छे. प्रद्रला-स्तिकाय जीवने मधुरादि, सुरभिगंधादिक तथा सकोमल स्पर्शादिक भोगपणे थाय छे कालद्रव्य ते जीवने जरा, बास्न, तारुण्य अवस्था दिएछे, तथा अनादि संसा-री जीव भवस्थिति परिपाक छतां एक अंत-ग्रेहतेकालमां सकलकर्म निर्जरी मोक्ष पहोंचे तिहां सिद्ध अवस्थायें अनंतीकाल पर्यंत जीव अनंता सुखने विलसे माटे कालद्रव्य जीवने भोग थाय छे. पण एक जीव द्रव्य कोइने भोग आवतो नथी माटे अकारण क्षुं अने पांच द्रव्य भोग आवे माटे कारण

कबां तथा घणी पतोमां तो संक्षेपे एटछं छे जे छ द्रव्यमां एक जीव द्रव्य कारण छे. पांच द्रव्य अकारण छे ए पण वात घणी रीते मलती छे. माटे जे बहुश्रुत कहे ते खरुं. मारी धारणा प्रमाणे जीवद्रव्य कारण अने पांच द्रव्य अकारण एम संभवे छे " निश्च-यनयथी छए द्रव्य कर्त्ता छे अने व्यवहारनयें एक जीवद्रव्य कर्त्ता छे. दाकी पांच द्रव्य अकर्त्ता छे. छ द्रव्यमां एक आकाशद्रव्य सर्वव्यापी छे. अने पांचद्रव्य लोक व्यापी छे. छए द्रव्य एक खेक्रमां एकटां रह्यां छे पण एक बीजा साथे मली जाय नहीं ए छ द्रव्यनो विचार कहाो.

हवे एकेका द्रव्यमां एक नित्य, बीजो

अनित्य त्रीजो एक चोथो अनेक, पांचमो सत्, छहो असत्, सातमो वक्तव्य, आठमो अवक्तव्य, ए आठ आठ पक्ष कहे छे,

धर्मास्तिकायना चार गुण नित्य छे तथा पर्यायमां धर्मास्तिकायनो एक खंध नित्य छे. बाकीना देश प्रदेश तथा अगुरुलघु पर्याय अनित्य छे. अधर्मास्तिकायना चार गुण तथा एक लोकपमाण खंध नित्य छे अने एक देश, बीजो प्रदेश, त्रीजो अगुरु-छघ ए त्रण पर्याय अनित्य छे. तथा आका-शास्तिकायना चार गुण तथा लोकालोकप-माणखंध नित्य छे अने एक देश, बीजो प्रदेश, त्रीजो अगुरुलघु ए पर्याय अनित्य छे. तथा कालद्रव्यना चार ग्रुण नित्य छे

अने चार पर्याय अनित्य छे. पुद्गल द्रव्यना चार गुण नित्य अने चार पर्याय अनित्य छे. जीवद्रव्यना चार गुण तथा त्रण पर्याय नित्य छे अने एक अगुरुलघु पर्याय अनित्य छे. ए रीते नित्यानित्यपक्ष कह्यो.

हवे एक अनेकपक्ष कहे छे एक धर्मास्तिकाय वीजो अधर्मास्तिकाय ए वे द्रव्यनो
खंध छोकाकाश्वममण एक छे अने गुण अनेक छे पर्यायअनंता छे. प्रदेश असंख्याता
छे, तेणें करी अनेक छे, आकाशद्रव्यनो
छोकालोकप्रधाणखंध एक छे अने गुण अनंता छे. पर्याय अनंता छे. प्रदेशअनंता छे.
माटे अनेक छे, काल द्रव्यनो वर्तनाहप गुण
अनंता छे, पर्याय अनंता छे, केमके समय

अनंता छै. अतीत काले अनंतासमय गया अने अनागतकाले अनंता समय आवशे. तथा वर्त्तमानकाले समय एक छे माटे अनेक पक्ष छे. पुद्रलद्रव्यना परमाणु अनंता छे ते एकेक परमाणुमां अनंतागुण पर्याय छे अने सर्व परमाणुमां पुद्रलपणुं ते एकज छे माटे एक छे.

जीवद्रव्य अनंता छे. एकेका जीवमां भदेश असंख्याता छे. तथा ग्रुण अनंता छे. पर्याय अनंता छे ते अनेकपणुं छे पण जीवि-तव्यपणुं सर्वजीवनुं एकसरीखुं छे माटे एकपणुं छे. इहां शिष्य पुछे छे जे सर्व जीव एक सरीखा छे तो मोक्षनाजीव सिद्ध परमानंद-मयी देखाय छे अने संसारीजीव कर्मवश्च

आगमसार.

पड्या दुःखी देखाय छै अने ते सर्व जुदा जुदा देखाय छै ते केम ? तेहने गुरु उत्तर कहे छै के निश्चयनये तो सर्व जीव, सिद्ध समान छै माटेज सर्व जीव कर्म खपावीने सिद्ध थाय छै तेथी सर्व जीवनी सत्ता एक छै.

फरि शिष्य पुछे छे के जो सर्व जीव सिद्ध समान कहो छो तो अभव्य जीव पण सिद्ध समान छे एम टेरयुं (टर्यु) अने ते तो मोक्षे जता नथी, तेहने ए उत्तर जे अभव्यमां परावर्त्त धर्म नथी तेथी सिद्ध थता नथी माटे तेनो एहवोज स्वभाव छे जे मोक्षे जवुंज नथी अने भव्यजीवमां पराधर्त्त धर्म छे माटे कारण सामग्री मिले पलटण पामे, गुणश्रेणि चढी मोक्ष करी सिद्ध थाय पण जीवना मुख्य

२१

आठ रुचक प्रदेश जे छे ते निश्चयनयथी भव्य तथा अभव्य सर्वना सिद्ध समान छे माटे सर्व जीवनी सत्ता एक सरीखी छे केमके ए आठ प्रदेशने बिलकुल कर्म लागतां नथी ते "श्री आचारांग सत्त्रनी श्री सिलांगाचार्य कृत टी-काजा लोकविजयाध्ययने प्रथमोद्देशके साख छे तिहांथी सविस्तरपणे जोवुं."

हवे सत् तथा असत् पक्ष कहे छे. ए छ द्रव्य ते स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, अने स्वभावपणे सत् एटले छता छे अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल तथा परभावपणे असत् एटले अछता छे तेनी रीत बताववाने अर्थे छए द्रव्यना द्रव्य क्षेत्र काल भाव कहिये छैंये.

धर्मास्तिकायनो मूलगुण चलण सहाय-

पणो ते स्वद्रव्य, अधर्मास्तिकायनो मूळगुण स्थिति सहायपणो ते स्वद्रव्य, आकाशास्ति-कायनो मूळ गुण अवगाहपणो ते स्वद्रव्य, काळद्रव्यनो मूळ गुण वत्तेनाळक्षणपणो ते स्वद्रव्य, तथा पुद्रळनो मूळगुण पुरणगळन-पणो ते स्वद्रव्य अने जीवद्रव्यनो मूळगुण ज्ञानादिक चेननाळक्षणपणो ते स्वद्रव्य ए छद्रव्यनो स्वद्रव्यपणो कह्यो.

हवे स्वक्षेत्र ते द्रव्यनो प्रदेशपणो छे ते देखाडे छे तिहां एकधर्मास्तिकाय, बीजो अधर्मास्तिकाय. ए वे द्रव्यनो स्वक्षेत्र असंख्य प्रदेश छे अने आकाशद्रव्यनो स्वक्षेत्र अनंत प्रदेश छे कालद्रव्यनो स्वक्षेत्र समय छे. पुद्र-लद्रव्यनो स्वक्षेत्र एक प्रमाणु छे ते प्रमाणु

२३

अनंता छे. जीवद्रव्यनो स्वक्षेत्र एक जीवना असंख्याता प्रदेश छे.

हवे स्वकाल ते छए द्रव्यमां अगुरुलघु-नोज छे अने ए छ द्रव्यना पोतपोताना गुण पर्याय ते सर्व द्रव्यनो स्वभाव जाणवो. एटले धर्मास्तिकायमां पोतानाज द्रव्य क्षेत्र काल भाव छे पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. तथा अधर्मास्तिकाय द्रव्य मध्ये पण स्वद्रव्यादिक चार छे. पण बीजा पांच द्रव्यना नथी. काल-द्रव्यमां कालना द्रव्यादिक चार छे वीजापांच **द्रव्यना नथी अने पुद्रलना द्रव्यादिक चार ते** पुहरूमांज छे पण बीजा पांच द्रव्यना नथी रेथा जीव द्रव्यना स्बद्धव्यादिक चार ते जीवमां **छे पण बीजा पां**च प्रकास नथी.

आगमसार.

जे द्रव्य ते गुण पर्यायवंत, द्रव्यथी अभेद-पर्याय होय ते द्रव्य किहें ये तथा स्वधर्मनी आधारवंतपणो ते क्षेत्र किहें ये अने उत्पाद व्ययनीवर्त्तना ते काल किहें तथा विशेष गुण परिणति स्वभाव परिणति पर्याय प्रमुख ते स्वभाव किहें ए रीते छ ए द्रव्य स्वगुणे सत् छे अने पर गुणे असत् छे.

हवे वक्तव्य तथा अवक्तव्य पक्ष कहे छै. ए छ द्रव्यमां अनंता गुणपर्याय ते वक्तव्य एटले वचने कहेंचा योग्य छे अने अनंता गुणपर्याय ते अवक्तव्य एटले वचने कहा जाय नहीं एवा छे. तिहां केवली भगवंते समस्त भाव दीठा तेने अनंतमे भागे जे वक्तव्य एटले कहेंचा योग्य हता ते कहा। वली तेनो श्रनंतमो भाग श्रीगणधरे सूत्रमां गुंथ्यो तेना असंख्यातमे भागे इमणां आगम रह्यां छे ए आउपक्ष कह्या.

इहां १ भेद स्वभाव, २ अभेदस्वभाव ३ भव्यस्वभाव, ४ अभव्यस्वभावः ५ परम-स्वभाव. ए पांच स्वभाव कहेवा. तेमां द्रव्यना सर्व धर्मने पोतपोताना स्वस्वकार्यने करवे करी भेट स्वभाव छे अने अवस्थानपणे अभेट स्वभाव छे. अणपल्रहण स्वभावे अभव्य स्वभाव छे. तथा पलटण स्वभावे भव्य स्वभाव छे अने द्रव्यना सर्वे धर्म ते विशेष धर्मने अ-जयायीज परिणमे ते माटे ते परम स्वभाव कहियें. ए सामान्य स्वभाव जाणवा.

इवे नित्य तथा अनित्य पक्षशी चौभंगी

-आगमसार.

उपनी ते कहे छे एक जेनी आदि नथी अने अंत पण नथी ते अनादि अनंत पहेलो भांगी अने जेनी आदि नथी पण अंत छे ते अनादि सांत बीजो भांगो तथा जेनी आदि पण छे अंत एटले छेहेडो पण छे ते सादि सांत त्रीजो भांगो वली जेहने आदि छे पण अंत नथी ते सादि अनंत नामे चोथो भांगो जाणवो.

हवे ए चार भांगा छ द्रव्यमां फलावी देखाडे छे. जीव द्रव्यमां ज्ञानादिक गुण ते अनादि अनंत छे नित्य छे, अने भव्य जीवने कर्म साथे संबंध तथा संसारीपणानी आदि नथी पण सिद्ध थाय तेवारे अंत आव्यो तेथी ए अनादि सांत भांगो छे, अने देवता तथा

२७

नारकी प्रमुखना भव करवा ते सादि सांत भांगों छे अने जे जीव कमें खपावी मोक्ष गया तेनी सिद्धपणे आदि छे अने पाछो संसारमां कोइ काछे आवबुं नथी माटे अंत नथी तेथी ए सादि अनंत भांगों छे. ए जीव द्रव्यमां चौभंगी कही. जीव द्रव्यना चार गुण अनादि अनंत छे. जीवने कमें साथे संयोग ते अनादि सांत छे केमके केवारे पण कमें छूटे छे.

हवे धर्मास्तिकायमां चार गुण तथा खं-धपणो ते अनादि अनंत छे अने अनादि सांत भांगो नथी तथा १ देश २ प्रदेश ३ अगुरुलघु ए सादि सांत भांगो छे. तथा सिद्धना जीवमां धर्मास्तिकायना जे प्रदेश रहा छै ते प्रदेश आश्रयीने सादि अनंत भांगो छै

एवीज रीते अधर्मास्तिकायमां पण चौभंगी जाणवी अने आकाश द्रव्यमां गुण तथा खंध अनादि अनंत छे बीजो भांगो नथी अने १ देश २ प्रदेश तथा ३ अगुरुलघु सादि सांत छे तथा सिद्धना जीवनी साथ संबंध ते सादि अनंत छे.

पुद्गल द्रव्यमां गुण अनादि अनंत है. जीव पुद्गलनो संबन्ध अभव्यने अनादि अनंत है.* भव्य जीवने अनादि सांत है पु-द्गलना खंध सर्व सादि सांत है जे खंध बांध्या ते स्थिति प्रमाणे रही खरे है वली नवा बंधाय है माटे सादि अनंत भांगो पुद्गलमां नथी.

^{*} एसंततिपणे जाणजो-आ शब्दो जुनी प्रतमां छें.

कालद्रव्यमां गुण चार अनादि अनंत छे, पर्यायमां अतीतकाल अनादि सांत छे अने वर्तमानकाल सादि सांत छे; अनागतकाल सादि अनंत छे. ए कालनुं स्वरूप ते सर्व उपचारथी छे. ए रीते कालद्रव्यमां चौभंगी कही.

हवे द्रव्य क्षेत्र काल तथा भावमां चौ-भंगी कहे छे जीव द्रव्यमां स्वद्रव्यथी ज्ञाना-दिक गुण ते अनादि अनंत छे स्वक्षेत्रें जीवना प्रदेश असंख्याता छे ते सादि सांत छे तप्तोदक उद्वर्त्तनापणे फरे छे ते माटे अथवा अवगाहना माटे सादि सांत छे पण छतीपणे तो अनादि अनंत छे. स्वकाल अगुरु लघुने गुणे अनादि अनंत छे अने अगुरु लघु गुणनो उपजवो

तथा विणशवो ते सादि सांत छे. तथा स्वभाव (सर्व भाव) गुण पर्याय ते अनादि अनंत छे अने भेदान्तरे अगुरुलघु ते सादि सांत छे.

धर्मास्तिकायमां स्वद्रव्य जे चलण सहाय गुण ते अनादि अनंत छे अने स्वक्षेत्र असं-ख्यात प्रदेश लोक प्रमाण छे ते अवगाहनाएणे सादि सांत छे. स्वकाल ते अगुरुलघु गुणे करी अनादि अनंत छे अने उत्पाद व्यय ते सादि सांत छे स्वभाव ते चार गुण अगुरुलघ अनादि अनंत छे १ खंध २ देश ३ पदेश ते अवगाहनाने प्रमाणे सादि सांत छे एम अध-मीस्तिकायना पण द्रव्यादि चार भांगा जाणवा तथा आकाशास्तिकायमां स्वद्रव्य अवगाहना-दान ग्रण ते अनादि अनंत छे अने द्रव्यक्षेत्र

होकालोक प्रमाण अनंत प्रदेश ते अनादि अनंत है. स्वकाल ते अगुरुलघुगुण सर्वथापणे अनादि अनंत है अने उपजवे तथा विणसवे सादि सांत है स्वभावते चार गुण तथा खंध अने अगुरुलघु ते अनादि अनंत है तथा देश प्रदेश ते सादि सांत है ते आकाश द्रव्यना है भेद है एक चौद्राज लोकनो खंध लो-काकाश ते सादि सांत है बीजो अलोकाश-नों खंध ते सादि अनंत है.*

^{*} चउद्राज लोकनो खंघ लोकाकाश सादि सांत छे ते आवी रीतें जो लोकना मध्यभागें आठ रुचक प्रदेशथी मांडीने सादि छे जिहां चउद्राज लोकनो अंत आवे तिहां सांत तथा चउद्राज लो-कनो छेलो प्रदेश मूकीने पछे अलोकनी आदि

आगमसार.

काल द्रव्यमां स्वद्रव्य जे नवा पुराणव-त्तना गुण ते अनादि अनंत छे स्वक्षेत्र समय (काल) ते सादि सांत छे केमके वर्तमान समय एक छे ते मादे तथा स्वकाल ते अनादि अनंत छे. स्वभाव ते गुण चार अने अगुरुलघु अनादि अनंत छे. अतीत काल अनादि सांत छे अने वर्तमानकाल सादि सांत छे अनागत काल सादि अनंत छे

पुद्रल द्रव्यमां स्वद्रव्य ते द्रव्यपणे जे पूरणगलन धर्म ते अनादि अनन्त छे अने स्वक्षेत्र परमाणु ते सादि सांत छे. स्वकाल स्थित अगुरुलघु गुण ते अनादि अनंत छे.

होवी पण अहोकतो अंत् नथी माटे सादि अनंत कह्यं हो.

33

अगुरूलघुनो उपजवो विणसवो ते सादि सांत छे. स्वभावते गुण चार अनादि अनंत छे. वर्णादि पर्याय चार एटले वर्ण गंघ रस स्पर्श ते सादि सांत छे. ए द्रव्यादि चारमां चौभंगी कही.

हवे छ द्रव्यना संबन्ध आश्री चौभंगी
कहे छे, तिहां प्रथम आकाश द्रव्य छे
तेमां अलोकाकाशमां कोइ द्रव्य नथी
अने लोकाकाशमां छ द्रव्य छे, तिहां लोकाकाश द्रव्य तथा बीजं धर्मास्तिकाय द्रव्य अने
त्रीजं अधर्मास्तिकाय द्रव्य ते अनादि अनंत
संबंधी छे जे लोकाकाशना एकेक प्रदेशमां
धर्म द्रव्य तथा अधर्म द्रव्यनो एकेक प्रदेश
रहों छे ते पण किवारे त्रिछेडसे नहीं मादे

आगमसार.

अनादि अनंत संबंधी छे. आकाश खेत्र लोक सर्व अने जीव द्रव्यनो अनादि अनंत संबंध छै, अने संसारी जीव कर्म सहित तथा लोकना प्रदेशनो सादि सांत संबन्ध छै. लोकांत सिद्ध क्षेत्रना सिद्ध जीवोनो आकाश भदेश साथे सादि अनंत संबन्ध छे. लोका-काश अने पढ़ल द्रव्यनो अनादि अनंत सं-बन्ध छै, आकाश प्रदेशनी साथे पुद्रल पर-माणुनो सादि सांत संबन्ध छै। एम आकाश द्रव्यनीपरे धर्मास्तिकाय तथा अधर्मास्ति कायनो पण सर्व संबन्ध जाणवो. जीव अने पुद्रलना संबन्धमां अभव्य जीवने पुद्रलनो अनादि अनंत संबंध छे, केमके अभव्य जीवनां कर्म किवारें खपशे नहीं माटे, अने भव्य

जीवने कर्मनं लागवं अनादि कालनं छै पण ते किवारेक छटशे माटे भव्य जीवने पुहल संबंध अनादि सांत छे. तथा निश्चयनयेकरी छ द्रव्य स्वभाव परिणाम परिणम्या छे ते परिणामीपणो सदा शाश्वतो छे ते माटे अ-नादि अनंत छे अने जीव तथा पदल बेह द्रव्य मिल वंध भाव पामे है ते पर परिणा-मीपणो छे ते परपरिणामिपणो अभव्य जी-बने अनादि अनंत है अने भव्य जीवने अनादि सांत छै अने प्रद्रछनो परिणामी पणो ते सत्ताये अनादि अनंत छै अने पुट्ट-लनो मिलवो विछडवो ते सादि सांत छै एटले जीव द्रव्य पुद्रल साथे मिल्यो सक्रिय के अने पुद्रल कर्मथी रहित थाय तेवारें जीव

द्रव्य अक्रिय छे अने पुद्रस्त द्रव्य सदा सः क्रिय छे

हवे एक, अनेक-पक्षथी निश्चय ज्ञान कहेवाने नय कहे छे. सर्वे द्रव्यमां अनेक स्वभाव छै, ते एक वचनथी कह्या जाय नहीं माटे मांहोमांहे नये करी संक्षेपपणे कहे छै. तिहां मूल नयना वे भेद छे, एक द्रव्यार्थिक बीजो पर्यायार्थिक, तेमां उत्पाद व्यय पर्याय गौणपणे अने प्रधानपणे द्रव्यनो गुण सत्ताने ग्रहे ते द्रव्यार्थिक नय कहियें तेना दश भेद छे, सर्वे द्रव्य नित्य छे, द्रव्यार्थिक २ अग्ररु लघु अने खेत्रनी अपेक्षा न करे मूल गुणने पिंडपणे ग्रहे ते एक द्रव्यार्थिक ३ ज्ञानादिक गुणे सर्व जीव एक सरीखा छै माटे सर्वने

एक जीव कहे, स्वद्रव्यादिकने ग्रहे ते सत द्रव्यार्थिक, जेम सत्लक्षणं द्रव्ययम् ४ द्रव्यमां कहेवा योग्य ग्रुण अंगीकार करे ते वक्तव्य द्रव्यार्थिक ५ आत्माने अज्ञानी कहेवो ते अशुद्ध द्रव्यार्थिक ६ सर्वे द्रव्य गुण पर्याय सहित छे एम कहेवुं ते अन्वय द्रव्यार्थिक 9 सर्व जीव द्रव्यनी मुल सत्ता एक छे ते पर-मद्रव्यार्थिक नय ८ सर्व जीवना आठ परेश निर्मल छे ते शुद्ध द्रव्यार्थिक नय ? सर्व जीवना असंख्यात प्रदेश एक सरीखा छै तै सत्ता द्रव्यार्थिक नय, १० गुणगुणी द्रव्य ते परमभावग्राहक द्रव्यार्थिकः जेम आत्मा ज्ञान-रूप छे. इत्यादिक ए हव्यार्थिक नयना दश भेद कहा।

आगमसार,

हवे पर्यायार्थिक नयना छ भेद कहे छैं। जे पर्यायने ग्रहे ते पर्यायर्थिक नय कहिये. तेना छ भेद छे १ द्रव्य पर्याय ते जीवने भव्यपणुं कहेवं, २ द्रव्य व्यंजन पर्याय ते द्रव्यतं प्रदेशमान, ३ गुण पर्याय जे एक गुणथी अनेकता थाय जेम धर्माधर्मादिद्रव्य पोताना चलण सहकारादि गुणथी अनेक जीव तथा पुद्रलने सहाय करे, ४ गुण व्यं-जन पर्याय जे एक गुणना घणा भेद छे ५ स्वभाव पर्याय ते अगुरुल्यु पर्यायथी जाणवो. ए पांच पर्याय सर्वे द्रव्यमां छै अने छट्टो विभाव पर्याय ते जीव पुद्रस्ठ ए वे द्रव्यमां छे. तिहां जीव जे चार गतिना नवा नवा भव करे ते जीवमां विभाव पर्याय तथा पुदस्त्रमां

संधपणुं ते विभाव पर्याय जाणवोः

हवे पर्यायना बीजा छ भेद कहे छे ? अनादि नित्य पर्याय ते जेम पुद्रल द्रव्यनो मेरु प्रमुख, २ सादि नित्य पर्याय ते जीव द्रव्यनुं सिद्धपणुं, ३ अनित्य पर्याय ते समय समयमां द्रव्य उपने विणशे छे, ४ अशुद्ध अनित्य पर्याय ते जन्म मरण थाय छे तेणे करी कहेनुं, ५ उपाधि पर्याय ते कमे संबंध, ६ शुद्ध पर्याय जे मूल पर्याय सर्व द्रव्यना एक सरीखा छे ए पर्यायार्थिकनुं स्वरूप कहुं.

हते सात नय कहे छे ? नैगम, २ संग्रह, ३ व्यवहार, ४ ऋजु सूत्र, ५ शब्द, ६ समभिरुट, ७ एवं भृत-ए सात नयना नाम जाणवां, तेमां पहेलो नैगम नय कहे छे.

नथी एक गमो ते नैगम कहियें. गुणनी एक अंश उपन्यो होय तो नैगमनय कहियें. दृष्टान्त जेम कोइक मनुष्यने पा**ली लाववानो** मन थयो, ते वारें जंगलमां लाकडुं लेवा चाल्यो, रस्तामां कोइक मनुष्य मल्यो तेणे पुछत्यं तुं क्यां जाय छे, तेवारें तेणें कहां जे पाली लेवा जाउं छुं. ते पाली तो हजी घडी नथी पण मनमां चितवी ते थइ एम गण्युं तेम नैगम नय, सर्व जीवने सिद्ध समान कहे, केमके सर्व जीवना आठ रुचक प्रदेश निर्मेल सिद्ध रूप छे तेथी एक अंशे सिद्ध छे ते माटे सिद्ध समान सर्व जीव कहा। ते नैगम नयना त्रण भेद छे ? अतीत नैगम २ अनागत नैगम ३ वर्तमान नैगम, ए नैगम तय कहाो.

हवे संग्रह नय कहे छे. सत्ताग्रहे ते संग्रह. जे एक नाम लीघाथी सर्व गुण पर्याय परिवार सहित आवे ते संग्रह नय जाणवो तेनो ष्ट्रान्त-जेम कोइक मनुष्ये प्रभातें दातण करवाने अर्थे पोताना घरना बारणे बेशीने चाकर पुरुषने कहा जे दातण लइ आवो, ते वारें ते चाकर मनुष्य पाणीनो छोटो तथा रुमाल अने दातण एम सर्व चीज लड आव्यो. हवे बोटें तो एक दातण नाम लड़ने मंगाव्यं इतं पण सर्वनो संग्रह करी चाकर छइ आव्यो तैमज द्रव्य एवं नाम कहां तो द्रव्यना पर्याय सर्वे आव्या. ए संग्रह नयना वे भेद है. एक जे द्रव्यपणो सामान्यपणे बोस्रतां जीव तथा अजीव द्रव्यनो भेट पड्यो नही ते

पेहेलो सामान्य संग्रह, तथा बीजो विशेषताने अंगीकार करे छे, जे जीव द्रव्य एम कहुं तो अजीव सर्व टल्या ते विशेष संग्रह.

हवे व्यवहार नय कहे छे. जे बाह्यस्वरूप देखीने भेदनी वेंहेचण करे अने जे बाहेर देखता गुणनेज माने पण अंतरंग सत्ता न माने एटले ए नयमां आचार क्रिया मुख्य छे. अंतरंग परिणामनो उपयोग नथी केंग्रेक नैगम तथा संग्रह नय ते ज्ञान रूप ध्यानना परिणाम विना अंश तथा सत्ता ग्राही छे. तेम इहां करणी मुख्य छे ते व्यवहारनये (पणे) जीवनी व्यवस्था अनेक प्रकारे हैं. तिहां नैगम तथा संग्रह नये करी सर्व जीव सत्तायें एक रूप छै पण व्यवहार नयथी जीवना बे

धर्

भेद छे. एक सिद्ध, बीजा संसारी. ते वली संसारी जीवना वे भेद छे. एक अयोगी चौदमा गुणटाणावाला तथा बीजा सयोगी ते सयोगीना वे भेद एक केवली बीजो छद्म-स्थ. छद्यस्थना वे भेद. एक क्षीण मोही बारमा गुणठाणे वर्त्तता मोहनीय कर्म खपाच्यं ते, बीजो उपशान्तमोहते उपशान्त मोहना वली वे भेद, एक अकषायी इग्यारमा गुण-टाणाना जीव; बीजा सकषायीना वे भेद है, एक सुक्ष्म कषायो दशमा गुणठाणाना जीव बीजा बादर कषायी. ते बादर कषायीना बली वे भेट छै एक श्रेणि प्रतिपन्न, बीजो श्रेणि रहित ते श्रेणी रहितना वे भेद. एक अप्रमादी बीजो प्रमादी ते प्रमादीना वे भेद

एक विरति परिणामि बीजो देश विरति, देशे विरतिना वे भेद, एक विरति परिणामि अमे बीजा अविरति परिणामि, अविरतीना बे भेद एक अविरति समकीति बीजा अविरति मि-ध्यात्वी ते मिध्यात्वीना बे भेद, एक भव्य बीजा अभव्याते भव्यना व भेद एक ग्रंथिभेदी बीजा ग्रंथी अभेदी (अभेद ग्रन्थि) एवी रीते जे जीव जेवो देखाय तेने तेवो माने ए व्यवहार नय छे, एमज पुद्रलना भेद करवाते कहे छै. पुद्रल द्रव्यना वे भेद छे. एक परमाण बीजो खंध. खंधना वे भेट एक जीवने लाग्या ते जीव सहित. बीजा जीव रहित ते घडो मम्रख अजीवनो खंध, हवे जीव सहित खंधना ब भेद छे एक सुध्म खंध बीजो बादर खंध

ઇંદ

इहां वर्गणानो विचार लखीये छैयें. तिहां पुद्रलनी वर्गणा आठ छे १ औदारिक वर्गणा २ वैक्रिय वर्गणा ३ आहारक वर्गणा ४ तैजस वर्गणा ५ भाषा वर्गणा ६ श्वासो-च्छास वर्गणा ७ मनो वर्गणा ८ कार्मण वर्गणा-ए आठ वर्गणानां नाम कहां. वे परमाणु भेला थाय त्यारे द्वयणुकखंध कहेवाय. त्रग परमाणु भेला थाय तेवारे ज्यणकखंध थाय. एम संख्याता परमाणु मिले संख्याता-णुकलंव थाय, तेमज असंख्याते असंख्याता-पुक्रखंध थाय, तथा अनंता परमाण मिले अनंताणुकखंध थाया ए खंध ते सर्व जीवने अग्रहण योग्य छे, अने जेवारें अभव्यथी अनंतगुण अधिक परमाणु मेला थाय तैवारे

आगमसार,

औटारिक शरीरने लेवा योग्य वगर्णा थाय एमज औदारिकथी अनंतगुणा अधिक वर्गणामां दल भेलां थाय तेवारे वैक्रिय वर्गणा थाय. वली वैकिय थकी अनंतगणा परमाण मिले तेवारं आहारक वर्गणा थाय. एम सर्व वर्गणाना एकेकथी अनंतगुणा अधिक परमाण मिले तेवारें ते वर्गणा थाय. एटले पहेलीथी बीजी वर्गणा, बीजीथी त्रीजी एम सातमी मनोवर्गणाथी आठमी कार्मण वर्ग-णामां अनंतगुण परमाणु अधिक छे. इहां १ औदारिक, २ वैक्रिय, ३ आहारक, ४ तैजस, ए चार वर्गणा बादर छे तेमां पांचवर्ण-बे गन्ध-पांच रस, आठ स्पर्श ए वीस गुण है. तथा १ भाषा २ श्वासोच्छ्वास ३ मन ४

कामेण ए चार वर्गणा सूक्ष्म छे एमां पांचवर्ण वे गन्ध, पांचरस—चार स्पर्श—ए सोल गुण छे, अने एक परमाणुमां एक वर्ण—एक गंध— एक रस—वे स्पर्श ए पांच गुण छे. एम पुहल खंधना अनेक भेद छे.

ए व्यवहार नयना छ भेद है. १ शुद्ध व्यवहार ते आगला गुणठाणानुं छोडवुं अने उपरना गुणठाणानुं ग्रहण करवुं अथवा ज्ञान— दर्शन—चारित्र गुण ते निश्वयनय एकरूप छे. पण ते शिष्यने समजाववाने जृदा जूदा भेद कहेवा ते शुद्ध व्यवहार छे. २ जीवमां अज्ञान राग द्वेष लाग्या छे ते अशुद्धपणुं छे माटे अशुद्ध व्यवहार. ३ जे पुण्यनी किया करवी ते शुभ व्यवहार. ४ जेथकी जीव पापरूप

४८ आगमसारः

अशुभ कर्म करे ते ५ अशुभ व्यवहार. धन-घर-कुटुंब प्रत्यक्ष सर्व आपणाथी जुदा जुदा छे पण जीवें अज्ञानपणे आपणा करी जाण्या छे ते उपचरित व्यवहार. ६ शरीरादिक पर-वस्तु यद्यपि जीवथी जुदी छे तोपण परिणा-मिकभाव लोलीपणे एकडा मिली रह्या छे तेने जीव आपणा करी जाणे छे ते अनुपचरित व्यवहार जाणवो. ए व्यवहार नय कह्यो.

हवे ऋजु सूत्र नयनो विचार कहे छै. जे अतीत काल अने अनागत कालनी अपेक्षा न करे पण वर्त्तमान काले जे वस्तु जेवा गुण परिणामे वर्त्ते ते वस्तुने तेवेज परिणामे माने माटे ए नय परिणामग्राही छै. जेम कोइक

आगमनार.

ઇર

जीव गृहस्थ छै पण अंतरंग साधुसमान परि-णाम छे तो ते जीवने साध कहे अने कोडक जीव साधने देषे छे पण मनना परिणाम विषयाभिलाष सहित छे तो ते जीव अत्रतीज छे एम ऋज सुत्रनुं मानवुं छे. ते ऋज सुत्रना वे भेद छे एक सुक्ष्म ऋज सूत्र ते एम कहे जे सदाकाल सर्व वस्त्रमां एक वर्त-मान समय वर्चे हे एटले जे जीव गया काले अज्ञानी हतो अने अनागत काले अज्ञानी भावे अज्ञानी थशे एम बेह कालनी अपेक्षा न करे पण एक वर्त्तमान समये जे जेवो तेने तैवो कहे ते सुक्ष्म ऋजुसूत्र कहियें अने महोटा बाह्यपरिणाम ग्रहे ते स्थूल ऋजु सूत्र नय जाणवो एटले रुज़ सूत्र नय कहारे.

4,0

आगमसार.

हवे शब्दनय कहे छे. जे वस्तु गुणवंत अथवा निर्मुण ते वस्तुने नाम कही बोला-वियें जे भाषा ार्गणाथी शब्द पर्णे वचन गोचर थायते शब्दनय जे कारणे अरूपी द्रव्य वचनथी कहेत्रा ते शब्दनय कहियें. इहां जे शब्दनो अर्थ होय ते पणो जे वस्तुमां वस्तपणे पामियें ते वारे ते वस्त शब्दनय कहियें जेम घटनी चेष्टाने करतो होय ते घट. ए शब्दनयमां व्याकरणथी नीपना अने बीजा पण सर्व शब्द लीधा ते शब्दनयना चार भेद छै ? नाम २ स्थापना ३ द्रव्य ४ अने भाव चार निक्षेपाना पण एहिज नाम छे.

? पहेलो नाम निक्षेपो ते आकार तथा

गुणरहित वस्तुने नाम करी बोलावबों. जे एक लाकडीनों कटको लेडने कोइके तेहने जीव एवं नाम कहां ते नाम जीव जाणवं जेम काली दोरीने सापनी बुद्धियें करी घावे हणे तेहने सापनी हिंसा लागे ए नाम सर्प थयं. एवीज रीते नाम तप अथवा नाम सिन्छ जेम वड प्रमुखने सिद्धवड एम कही बोलावे छैं ते नाम निक्षेपों कहियें ए सुत्र साखें छै.

२ स्थापना निक्षेपो कहे छै. जे को इक वस्तुमां कोइक वस्तुनो आकार देखीने तेहने ते वस्तु कहे जेम चित्रामण अथवा काष्ट पा-षाणनी मूर्त्ति तेने घोढा-हाथीनो आकार छै तो ते घोडा-हाथी कहेवाय ते स्थापना जा-णत्री. ए स्थापना निक्षेपो नाम निक्षेपें सहित

आगमसार.

होय जैम स्थापना सिद्ध जिनमतिमा प्रमुख ते सद्राव स्थापना पण होय अने असद्राव स्था-पना पण होय. अक्रत्रिम जिन प्रतिमा ते नं-दीश्वरद्वीप प्रमुखने विषे अने जेह इहांनी जिन प्रतिमा ते कृत्रिम ते सर्व स्थापना जाणवी. जेम चित्रामनी स्त्री जिहां मांडी होय तिहां साधु रहे नहीं. कारणके स्थापना स्त्री छै ते स्त्री तुरुय जाणत्री. तेमज जिन प्रतिमा जिन समान जाणवी. इहां कोइक अज्ञानी जीव कहे है जे, स्थापनामां ज्ञानादि गुण नथी तेथी स्थापनाने मानवी पूजवी नहीं तेने उत्तर कहे छे के स्थापना रूप स्त्रीमां स्त्रीपणाना गुण नथी तो पण ते विकारनुं कारण थाय छे. तेमज जिनमतिमा पण ध्याननुं कारण छे अने

ओंगमसार.

५३

र्ज एम पुछे के हिंसा थाय छे अने भगवंते तो दयाने धर्म कहा। छे तेहने एम कहेबुं जे पर-देशी राजा केसी गुरुने वांदवाने अर्थे बीजे दीवर्से मोहोटा आइंरथी आव्यो ते वंदनामां हिंसा थइ पण लाभ कारण गणतां त्रोटो न थयो. वीजो मिल्लनाथजीयं छ मित्र प्रतिबोध-वाने प्रतलीनो दृष्टान्त कह्यो, ते हिंसा तो घणी थइ पण ते छाभना कारणमां गणी छै एम भाव शुद्ध होय तिहां हिंसा लागती नथी. अथवा कोडक एम कहे छे जे अमे आपणे स्थानके बेठा नमुध्युणं कहिस्रं अमने लाभ यासे ते खरो पण भगवती सत्रमां भगवानने षंदनाने अधिकारे तो तिहां जइ वंदना कर-बाउं फल मोडं कहां छे तथा निक्षेपाने अधिन

आगमसार,

कारें कहां जे भाव निक्षेपो एकलो थाय नही पण स्थापना तथा द्रव्य ए त्रण मिल्या भाव निक्षेपो थाय माट स्थापना अवस्य मानवी. हवे जे स्थापना न माने तेने कहियें जे चित्रा-मनी मूर्ति ते हिंसाना परिणामथी फाडे तेहने हिंसा लागे छे तेमज जिनवरना व्याने जिन-प्रतिमा पूजतां लाभ थाय छे एम युक्ति करतां तथा आगमनी पाखे पण जिन मतिमाने जिन समान माने है आराधक अने जे जिन प्रति-माने न माने तेणे स्थापना निक्षेपो उथाच्यो अने स्थापना उथापी तो द्रव्य तथा भाव नि-क्षेपो स्थापना विना थाय नही माटे द्रव्य तथा भाव पण उथाप्यो एम त्रण निक्षेपा उथाप्या ते वारें सिद्धान्त उथाप्यांज मादे जे जिनम-

દ્ધું દ

तिमाने नहीं माने ते विराधक जाणवो. तथा कोइ पुछे जे प्रतिमानो पूजा तो पहेला आस्रव मध्ये लखी है तेने कहीये जे तमहे मुपाबाद बोलो छो. इहां प्रश्न व्याकरण सत्रमां पाठ इम छे नही तिहां पाठ छे ते लिखीये छे।। अविजाणओ परिजाणओ विसयहेड इमेहिं कारणेहिं किं ते करीसण पोरकरणी वा विव-ष्पणीक्वसरतलाग चितिवेति खाति आराम विहार, थ्रभ पागार, दार गोपूर अहालगच-शीय सेत्रसंकमपासायविकप्पभवणघरसरणिले-णञावणचेडयदेवक्रलचित्तसभाष्ट्रवाञायतणव-सई भूमिघरमंडवाणं कए हीं संति=इहां पांच था-धरना पांच आलावा छै तेहने छैडे कोहा. भाणा, माया, लोभा, हिंसा, रती इत्यादि

अगमसार,

पाट छै. ते जे जीव इंद्रीना सवादने माहे चेईअ कहेतां पतिमादिक करे ते आश्रव खाते ए पाठ छे पण पूजानो पाठ नथी ते मुषाष्ये (शा माटे) बोलो छो, तथा प्रश्न व्याकरण-सुत्रे बीजे संवरद्वारे जे आलावो छे ते लिखीये छे. खवगयवत्ति आयरीय उवज्झाय सेह साहंमीए तबसि सिस बुहू कुछ गण संघ चेईयहे निज्झरठी वेयावचं अणस्सीओदसवि-हंबहुविहंकरेई एआलावे आचारज प्रमुखचेईय कहेतां जिनप्रतिमानो वैयावच करे निर्काराना अर्थी अणस्सीओ कहेतां जस कीर्तिनी वांछा रहितथको वैयावच दश प्रकार तथा अनेक मकारनो करे, इहां चेईय कहेतां प्रतिमा छै तो खोटी कलपना स्यामाटे करो छो ? तथा बीजे

द्ध

पश्चे पूछचो जे अहिंसानां ६० नाम कहाां छै. अभओसबस्सविअनाघाओचुरकाय वित्तीपूरा विमलप्पभा निम्मलकरीत्ति एव माइणीनिय-गुणनिम्मियाइं पज्जयनामाणिहंतिअहिंसाए॥ तिहां प्रतिमा तथा पूजानो नाम नथी तेहनो उत्तर तिहां अहिंसानो नाम जाणो तेहनो अर्थ देवपूजा छे पूजा एहवो दयानो नाम छे तो अजाण्योइमस्यें प्ररुपणा करो छो ? बीर्जु पू-जातो श्रीअरिहंत प्रतिमानी ते तो विनय तथा वैयावच ते अभ्भितर तपना भेद छे. ते तप मोक्षनो मार्ग छे. र्श्नाउत्तराध्ययन सूत्रे २८ मे अध्ययने तपने मोक्षनां च्यार कारण कह्यां ते मध्ये गण्यो छै. तथा तो पस्ये प्रछचो जे बो-छनी खबर न हुने ते विचारी बोलीयः तथा

आगमसार.

श्रावके कोणे देहरां कराव्यां ? तथा प्रतिमा पूजी ? तेहनो उत्तर श्रीसमवायांगसूत्रे तथा नंदीसूत्रे सर्व आगमनो नुंध छ तैमध्ये ए पाठ छै तिहां उपासकदशानी नोंध छै ते आलावी छे ते लखीए छे. सेकिंते उवासगदसाओ उवा-सगदसासुणं समणोवासगाणं नगराईउज्झाणाई चेइआइं वणसंहाई समोसरणाई रायाणीअ-म्मापियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइ आ पारलोईया इहिविसेसा भोगापर आड सुअपरिग्गहोआ त्योवहाणाइसी ब्रह्मयगुणवेर-मणपचरुखाणपोसहोववासपडिवज्झणापडिमा-ओ उवसग्गसंलिहणाओ भत्तपचरकाणइयाउ-वगमणं देवलोगगमणं सुक्रलपचायापुणबोहि-लाभो अंतुकिरीयाआघरिज्झंति ए पाट छे.

आगमनार.

ઉ ઉ

इहां चेइयाइशब्द देहरा तथा जिन प्रतिमा जाणज्यो. इहां चेइय एहना अर्थ वीजो थाये नहीं, जे वननो अर्थ करे तेतो उद्यानवनखं-डनो पाठ जदो छै. कोइ साधुनो अर्थ करे ते धम्मायरीया ए पाठ जदो छे. ज्ञाननो अर्थ करे ते सुयए पाठ जुदो छे. तैमाटे चेइय शब्दे जिनप्रतिमानो अर्थ छै तथा तम्हे पुछो जे द्वारकां राजग्रहमें देहरा तथा प्रतिमानो पाठ किहां छे ? तेहनो उत्तर नंदीसूत्रे अणुत्तरो-ववाइ तथा अंतगडना नोंधनो पाठ जोज्यो. तथा तुम्हे कहेस्यो इतला बोल उपासकदशा-श्रमुखे दीसता नथी तेहनो उत्तर जे नंदी तथा समब्रायांगमे जे पाठ तेहनो कोण उत्थापी भक्ते ते जोज्यो तथा पुछचुं जे किणे श्रावके

€0

आगमसारः

प्रतिमा पुंजी छे ? तेहनो उत्तर घणे आवके प्रतिमा पुंजी छै. ते पाठ श्रीभगवतीसूत्रे तुंगीया नगरीना श्रावको वरणव्याः तिहां अभिगय-जीवाजीवा इत्यादिक पाठ घणा छे. तिहां एहवो पाठ छे. असहिङ्झदेवासुरनागसुवस्नजर-कररकसर्किञ्चरकिप्ररिसगरुलगंधव महोरगादी-एहिं देव गणेहिं निग्गंथाओपावयणाओ अणतिकम्मणिज्झा निग्गंथे पात्रयणेनिस्संकीया निकंखीया लद्धहा गहीयहा इत्यादि जे श्रावक कोई जातिना देवतानो सहाज वांछता नथी तो कोई बीजा देवतानी पूजा किम करे? एहवा श्रावक जे देवने देव बुद्धि मानता हवे तेहनेज पूजे ते श्रावक, थिवर आव्या तेवारे एकवार सर्वे एकटा मिल्यां एहवो विचार

कह्यो जे एहवानिग्रंथनो नाम सांभहयानो पिण महा लाभ हो तो तेहने वांदवा जातां सेवा करतां तो महानिज्झेरा महापर्यवसान कहेतां मोक्ष थयो इम विचारी पोते पोताने घरे गया पछी सूत्रे पाठ छै. ण्हायाकयबल्डि-कम्मा कयको उयमंगलपायिलता शुद्धाप्पावे-साइपवरपरिहीआ अप्पमहग्वाभरणालंकीय-श्ररीरा सवाओ गिहाओ पडिनिरकमति तिहां नाह्या ते अंघोल कीधा, कयबलिकम्माते देव पूजा कीधी: कयकोडयमंगल ते तिलकादिक कर्या पछी बस्त्र पेहरीने आभरणअलंकार पहेर्या, घरधी निकल्या ए रीते सिन्हार्थ राजा तथा रुखभदत्त, सुदरशन शेठ इम सुभद्द श्चत्र श्रावकसंखपुष्कली श्रावक कार्तिक शेद

आगमसार,

वांदवा गया छे तेवारे कयबलिम्मा तथा पछी घरे आवी साहमीवछल करीने दीक्षा लेवा निकल्या तेवारे न्हाया कयवलिकम्मा ए पाठ छे. इत्यादिक श्रावक अन्य देवनी पूजा न करे गोत्रज न पूजे, अरिहंत देवनेज पूजे, तथा कोइ कहेस्ये कयबल्किम्मा पाठ कठीयारा प्रमुख अनेक थानके छे तेमां स्याना छै ? पोते जेहने देवबद्धे याने ते तेहने पंजे तथा देवदत्त बालके कीम पुंजा करी हशे तेतो वालकने मावीत्रे पुंजा करावी तो कांन करे ? आज पण बालक पुंजा करता दीसे है तो कयवळीकम्मा ए पाउनो बीजो अर्थ शाने करो छो ? तथा दीक्षा महोच्छव घणा दीसे छे पण तिहां देहरा प्रतिमानो पाउ नथी.

६३

तेहनो उत्तर जे दीक्षाने उतावला थया तेवाँ साधने वहोराववा ग्हा नथी तो देहरां करा-ववा तो घर स्याने रह ? अने पहेळां देहरां प्रतिमा छे तेतो नंदीसत्रे आगमनोधनो पाठ जोर ो तो सर्व समा पडशे. तथा तुम्हे पुछयुं जे तीर्थंकरग्रहस्थपणे छतां साघ सार्घा श्रावक श्राविकाए बांद्या नथी तेनो उत्तर घणाए बांद्या छे. ते पाठ ज्ञानागुत्रमां छे तथा तमे छख्या जे प्रतिया एके न्द्रदल है तेहवी बचन संसारनो नहने भग न हवे ते बोले ? ने कारणे श्रीभग ग्रीजी ता जिलपडिमा कही बोलार्वा है. देहराने सिद्धायतन कही बोलाब्यो हो तमे कटोर वचन स्थाने बोलो छो ? तथा हुमें दिसी बंदना करो छो ते दीसी तो अजीव

દ્દં છ

आगमसार.

छे तो कीम वांदो छो ? तिहां तुम्हे कहेस्यो जे आम्हारा मनमें तो सिद्ध छे तो जिनपडिमा वांदतां पिण अमारा मनगां सिद्ध है. तथा स्रत्रमध्ये गुरुनी पाटनी आशातना टालवी कही छै, ते पाट अजीव छै. तेवीण सर्व गुरुनो बहुमान छे, प्रतिमाने बहुमाने सिद्धनो बहु-मान छे तथा सुधर्मासभागाहि जिननी दाहा छै ते वंदनीक पूजनीक छै. तेतो अजीव स्कंध छै तथा तुमे लख्यो जे परदेशा राजाए प्रतिमा कांन करी ? ते परदेशी श्रावक थया पछी केटलोक जीव्या छे ते तथा सर्वे श्रावक एकज करणी करे ए स्यो नियम छै ? तथा परदेशीए तथा आणंद श्रावके कोइक साधने पडिलाभ्या नथी ते मादे तुझे साधुनी वीहराव्यामे दोप

84

मानस्यो ? ए विचारी ज्यो ज्यो, तथा छख्युं छे जे सुरीआभे जे प्रतिमा पूजी ते राजधा-नीना मंगलीक माटे पूजा करी तेतो स्वोडं बोलो छो, ए पाठ सूत्रमें नथी. सूत्रमें तो एहवो पाठ छे "हीयाए सहाए खेमाए निस्से-साए आणुगानीयत्ताए भविस्सइ निश्रेयस कहेता मोक्षभणी ए अर्थ छे. तथा पच्छा शब्दे जे इहलोकनो अर्थ छै इंग कहे छे ते मृढ छे, दर्दर देवताने अधिकारे पच्छा शब्दे आवता भवनो अर्थ छै तथा आचारांगसूत्रे जस्सपू-द्वियनो तस्सपछायिनो इहां पूर्व शब्दे पुंठलो भव पछा शब्दे आवतो भव लोघो छे. तथा ग्रभवे समकितनो लाभ ते घणो छे तथा क्षिर्धकर वांद्याना फलनो पाट उत्रवाइमध्ये

દ્દ

आगमसार.

तथा पंचमहाव्रत पाल्यानी पाठ आचारांग मध्ये तिहां पण हियाए इत्यादिक पाठ छे ते बे ठेकाणे लाभ मानो छो तो जिनप्रतिमा ठामे ना स्याने कहो छो ? अने किहां जिन-प्रतिमा पूजानो पाप कह्यो नथी अने होय तो देखाडो. तुंसे लिख्युं जे भगवंते हिंसानी ना कही छे तेतो अमे किहां कहुछं जे हिंसा क-रवी, पण भगवंते किसे सुत्रे प्रतिमा पूजानी ना कही नथी. प्रतिषानी १७ प्रकारनी पुजा सुत्रे कही छे.तथा तुमे प्रतिमानी पूजा हिंसामें गणो छो ते इस नथी. प्रतिमानी पूजा तो विनय तथा वैयावच धर्ममां छे. तथा प्रजा हिंसामे गणी तो डाणांगे नदीमें पडती ध्वीने साध काढे तेमां हिंसा गणी नहीं, तथा

80

आचारांगमुत्रे बीजा साधु अजाणे पण शर्क-रानी भूछे छण वीहरीने पछे जाणे जे छण वीहराच्यों ते जाणी ते पोते खाये ते पोते पीये. तथा वोजा साधु संभोगीने आपे ते खाये पीए तथा विषमवाटे बेलने रूखने लताने गुछाने अवलंबी उत्तरे जे पाठ आचारांग-सूत्रे है. तथा भगवती सूत्रमे साधुना हरस काढे तेहने कियाकर्म लागे नहीं. तथा षष्ठिनाथजी पूतलीमे कवल मुक्या तेमाटे धर्म माटे हिंसा करी तथा सुबुद्धि मंत्रिए पाणी पलटाव्यो ते धर्म माटे करी पिण मंदर बुद्धी न कह्या छे भगवतीसूत्रे २५ मे शतके साध शासन माटे तेजोलेक्या मुके तेहने आ-राधक कहा, तथा जंबद्वीपपन्नतीए निर्वाण

EL

आगमसार.

महोच्छव कर्यो छे. थुभकर्यातेजिणभत्तिए धम्मे-त्तिए पाठ छे. इंम केटला पाठ लीखीए? अनेक पाठ छे॥ तथा नंदी सुत्रे जे आगम कह्यों ते उत्थापीने ३२ मानो छो ते केनी आज्ञा छे ? तथा आवश्यक सूत्रपडिकमणा विना साधपणो श्रावकपणो हवेज नहीं ते तुम्हे आवश्यक सूत्रपडिकमणो मानता नथी तो श्रावकपणो ने साधुपणो केम धरावो छो? श्रीभगवतीसूत्रे साधु साध्वी श्रावक श्राविका पंचमआराना छेहडा पर्यंत कहा। छे ते तुमारी श्रद्धामें हिवणां साधु साध्वी कोण छे ? तथा सुत्रे आचारज उपाध्याय कुलगणनीनिश्राये विचरे ते आराधक ते तमे कोनी निश्राये विचरो छो ? ते लिखज्यो, तथा श्रीभमवती-

६९

स्त्रे गाथा छै।। पढमोगीयत्थविहारो बीयो-गीयत्थनिसीओभणिओ । इत्तोतइयविहारो नाणुकाओजिणवरेहिं ॥ १ ॥ एहनो अर्थ गीतार्थ होय ते पाते विहार करे अथवा गीता-र्थनी निश्राये विहार करवो एथी तिजा विहा-रनी अरिहंते आज्ञा दीधी नथी ते माटे तमे किस्या गीतार्थनी निश्राये विहार करो छो ? तथा योग उपाधानवहींने सिद्धांत भणे तेपण श्रावक आचारांगादिक सुत्र भणे नहीं तै निशीथमां कह्यो छे। जे भित्रखअन्नत्थीयं वा गारित्थयंवा वायणं वायज्ञत्तं साइज्जति तस्म-चोमासीयपरिहारठाणं जे ग्रहस्थने सूत्र वंचावे अथवा वांचताने अनुमोदे तेहने चारमासनो पारयो चारित्र जावे तथा प्रश्न व्याकरणसूत्रे

OO

आगमसार.

अहकेरिसीयंप्रणसबन्त्रभासियवं जस्थद्धेहि-गुणेहिपज्जवेहि कम्मेहि बहुविहेहि आगमेहि नामरकाय निवाय उवसम्म तद्धिअ समास संधिपद जोग उणादि कीरीयावीहीणसरधाउ-सर विभत्ति वन जुत्तं भासियवं तथा अनुयो-गद्वारे ७ नय ४ निक्षेपाकाल तिन, लिंग तीन, जाण्या विना उपदेश देवा ते मारग नथी इत्यादिक अनेक बोल है. ते गीतार्थनी सेवनाथी पामीए इतिभद्रं ॥ जे केइ श्रीजिन-प्रतिमानी पूजा मध्ये फ़ुल पूजानी शंका करे तेहने कहीये जे श्रीरायपसेणीसत्रे १७ भेद पूजाना पाठ छे. पुष्फारुहणं २ मालारुहणं २ तहवन्नयारुहणं ३ तथा पुष्फपगिह ४ पुष्फप-गरं ५ एतली पूजा फूलनी है तेगांटे पूजा

फुलनी ते प्रमाण छे. तथा श्रीभगवतीसूत्रे पण सरीआभनी पेरे पूजानी भलामणना पाठ अनेक छै. तथा ज्ञातासूत्रे द्रौपदीने अधिकारे १७ प्रकारी पूजाना पाठ छै. समवायांगसूत्रे चोत्रीस अतिशयने अधिकारे " जलय थलय भासरदसद्धवन्नेणंजाणुस्सेहप्पमाणमित्तेणं पुष्फ-पूजोवयारकरेइ इत्यादि पाठ छे " इहां सम-वायांग सत्रमे देवता मनुष्यनो नाम कहाो नथी. तथा श्रीउववाईसूत्रे कोणिकने अविकारे श्रीवीर समोसर्या तैवारे अनेकजन चंपाथी निकल्या जे " अप्पेगइयावंदणवत्तियाए अ-ष्पेगइयाप्यणवत्तियाए अष्पेगइयासुयंस्यस्सा-मो अप्पेगइयाविजलाइ अहाओहेओआई अ-**धि**णाइगहिस्सामी " इत्यादि पाउ छै. तिहां

आगमसार.

पुयणवत्तीयाए ए पाठनो अर्थ टीकामध्ये पूज-नं पुष्पमालादिना इंम कह्यो छै. इहां श्रीतीर्थ-करने पूष्पनी पूजा दीसे छे ए पाठ श्रीभग-वतीसत्रे पण छे. तथा नंदीसत्रे अतज्ञानने पाठे जेडमं अरिहंतेहि भगवंतेहि उपमनाणदंसण-धरेहिं तिल्लकनिरक्लीय महीअपुईएहं पाठनो अर्थ टीकाकारे पिण महीय शब्दे चंदनादि. पुडएहिं पुष्फमालादिके करीने ए पाठ अनु-योगद्वारमध्ये पण छे. इंम पुरफपूजाना अनेक पाट छे, ते माटे शंका न कर्बी. वली केइक इम कहे छे जे फूल रेचाता जडे ते चढाववा पण पोते चूंटी चढाववां नही तेपण अजाण्युं कहे छे जे " श्रीजीवाभिगमसूत्रे " ततेणं से विज्ञएदेवे पोत्थयरयणंगिण्हड पो. २ गि.

63

पोरथयरयणंग्रयति पो. २ त्ता पोत्थयरयणं-विहाडेति पो. २ त्ता पोत्ययरयणंवाइए पो. २ त्ता धम्मियंववसायंषिगेण्हेति ध. २ त्ता पो-त्थयरयणंपडिनिरुखमति पो. २ त्ता सीहास-णतोअम्भ्रद्वेति सी. २ त्ता ववसायसभातोष्र-रित्थिमिल्लेणंदारेणंपडिनिष्व्यमः प्र. २ त्ता जेणेव णंदापुक्खरणी तेणे व उवागच्छति उ. २ त्ता णंदापुरुखरिणं अणुष्पयाणिकरमाणे पुरस्थिमिल्लेणं तोरणेणं अणुपविसति अ. २ ता पुरिव्यमिल्लेणं तिसोपाणेपडिरूवेणं पची-रुद्दति प० २ त्ता दृत्थपादं परुखालेति ह. २ त्ता एगंमहंसेतंरजतामयं विमलसलिलपुण्णमत्त-गयमहामुहागिइं समाणंभिगारं पगिण्हति पः २ ता जाइंतत्थउप्पलाइपउमाइजावसत्तपत्ताइसह-

હછ

आगमसार,

स्सपत्ताई ताई गेण्हित २ त्ता णंदातो पुरुखः रिणिओ पच्छत्तरेइ प. २ ता जेणेवसिद्धाय-तणे तेणेवपाहारेत्थगमणाइ तएणंतिविजयंदेवं-चत्तारि सामाणियसाहस्सीओजावअण्णेवहवे-वाणमंतरादेवादेवीओ अप्पेगतिया उप्पलहत्थ-गता जाव सतसहस्सपत्तहत्थगया विजयदेवं-पिठ्ठओअणुगच्छइता "

इहां फूल चूंटी लीघां छे. ए आल।वे विजयदेवे पोते वावडीभें उतरीने फूल चूंटी लीघां तथा सामानिक देवता तथा बीजे देवताये पिण फूल पोताना हाथथी लीघां छे. इहां कोइ पूलस्ये जे तिहां कोइ माली नथी ते माटे पोते लिधां तेहनो उत्तर जे माली नथी पिण देवता चाकर लोक घणा छे,

١٥٤

तेहनेज पासे कां न मंगाते ? जो पुष्प आण्यानो विधि होते तोपण पोताना हाथथी
लीधानो विधि छे तेमाट पोते वावडी मध्ये
उत्तरी लीधां छे तथा श्रीरायपसेणीसूत्रे सूरीआभाधिकारे

"ततेणं से सूरियामेंदेवे पोत्थरयणंगिण्हइ, पो. र. गि. ता पोत्थरयणं मुयइ, पोत्थस्यणंविहाडेइ, ता २ पोत्थरयणंवाएति, ता
२ धिम्मयंववसायंगिण्हइ, २ ता पोत्थरयणंभ पिडणिकखमित २ ता सिंहासणाओ अब्भुडेइ २ ता ववसायसभाओ पुर्रात्थिमिल्छेणं दारेणे पिडणिकखमइ २ ता जेणेव णंदापोरकरिणि तेणेव उवागच्छइ २ ता णदापोकखरिणी पुरिस्थमछुणं तोर्णेणंतिसोयाणपिडिक्वेणं प-

आगमसार.

चोरुहसि २ ता हत्थपायंपकखालेइ २ ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए एगंसेयमहर्यया-मयं विमलसलिलपुण्णं मत्तगयमुहागितिसमा-णभगारं पिगण्हांति पच्चोरुहड २ त्ता जाइंत-त्थउष्पलाइंजावसयसहस्सपत्ताइंगिण्हंति णंदा-ओ पुक्खरिणीओ पचीरुहइ २ ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेगमणाए तएणं तं सूरियाभंदेवं चत्तारिसामाणियसाहस्सीओ जाव सोलस्यायरक्लदेवसाहस्सीओ अण्णेयबहर्षे सरियाभविमाणे जाव देवा देवीओ अप्पेगइया उप्पलहत्थगया जावसत्तसहस्सपत्तहत्थगया सृरियाभं देवंपिद्वओसमणुगच्छंति ततेणं सृरि-याभंदेवंबहतेआभिओगिय देवाय देवीओ य अप्पेगइयाकलसहत्थगयाओ जावअप्पेगइया

66

धृवकडच्छहत्थगया हृद्वतुद्वाजावजास्ररियाभं देवंपिद्वओसमणुगच्छंति तेतेणं णे सृरियाभेदेवे चउहिं सामाणियसाहर्साहिं जावअण्णेहिंयब-हहिंसुरियाभविमाणवासीहिं देवेहिं देवीहिंय-सद्धि संपरिवृद्धे सन्वृद्धीए जाव णाइयरवेणं जेणेव सिद्धाययणे तेणेव उवा गच्छइ सिद्धाय-णंपुरित्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसंति २ त्ता जेणेव जिण पहिमाउ तेणेव उवागच्छड, जिण-पडिमाणं आलोच पणामंकरेति २ त्ता लोमह-त्थर्गागिण्हइ २ त्ता जिणपडिमाणं लोमहत्थएणं पमज्झइ २ त्ता जिणपडिमाओसरभिणागंधो-दएणंण्हाणेति ण्हाणित्ता सरसेणं गोसीसचंद-णेणंगायाणं अगुलिप्पइ २ त्ता जिणपहिमाणं-भहियांदेवदृसाइं जुयलाइं णियंसेइ २

आगमसार.

पुष्फरुहणं मञ्जारुहणं चूण्णारूहणं गंधारुहणं वण्णारुहणं चण्णस्हणं वत्थारुहणं आमरुहणं करेइ करेत्राआसत्तासत्तविउलवग्वारियम्लदा-मंकलावं करेइ २ चा कयग्गहगहित्तकरयल पभ्भष्ट विष्पभुक्षणं दसन्द्रवण्णेणं कुसुमेणं मुकपुष्फपुंजोवयारकलियं करेति करेता जिण-पिंडमाणं पुरतोअच्छेहिं सण्हेहिं सप्हिं रय-णामप्हि अच्छरसतंदुलेहि, अट्टटमंगले आ-लिहइ तंजहासित्थयजावद प्पणतया**णं तरंचणं**-चंदप्पहरयणवड्रनेरुलियविमलदंडकंचणम्बि-रयणभत्तिचित्तकालागुरुपवरकुंदरुक तुरुक्कधु-वमधमधंतगंधत्तामाणुचिहंति ध्ववहिविणिमु-यंतं नेरुलियमयंकडुछखं पग्गहियपयतेणं धृवं-द। अणं जिणवराणं अइसयविसुद्धगंधजुत्तेहि

अपुणरत्ते हैं महाचित्ते हिं संश्वगह सत्तहपया हिं पचोरू हइ १ त्ता वामं जाणे अंचे इ दाहिणं जाणे घरणितलं सिनिह इहित क्सूतो मुद्धाणं घरणितलं सि णिव्यो है ति २ त्ता इसंपच्चूणण- मइ इसिंपच्चूणि मित्ता करयलपरिग्गहियं सि-रसावत्तं मत्थण्यं जं एवं वयासी णमोत्थणं अरि-हंताणं जावसंपत्ताणं वंदित ण मंस इ २ त्ता

ए रायपसेणीसूत्रे पाठ छे. सूरीयाभे पोते हाथे फूल चृंटी लीवां छे, सामानीक प्रमुख पासे मंगाच्या नथी. तथा जंबुद्वीपपन्न-तीमे जन्माभिषेक जेणेवरखीरोदसमुद्दे तेणेव आगमखीरोदमं गिण्हंति २ त्ता जाइंतत्थउष्प-छाइं पउमाइ जावसहस्सपत्ताइं ताविगण्हंति २ श्वा इत्या दूल

लेवाना है. तथा कोइक कहेसे जे एता चुट्या नथी सहेजे पडचा छीधां छै तेहने कहीये छै. जे हज्जारगमे सहेजे पड्यां वावडीमध्ये हवेज नहीं, तथा निगाइने अधिकारे निगाइ राजाए आंबानी मांजरीयो पोते चुंटी लीधी तेबारे कटक बधे चंटी छीधी ते पाठ उनवायीमध्ये जोजो. अन्नयाणुजुत्तनिग्गओपछः कुसुमाचुअ-राइणायेगामंजरोगहीयाएवंरकंधावरेणंळयतेणं मंजरीपत्त पवाललयाइ कट्टाविसेसो कओ पडिनियत्तओपुच्छइ कहे सोरुक्खोअमचणा-दंसाओ कहए सयावेत्थोभणइ तुम्हेहि एगा-मंजरीगहीयापच्छसव्वणंगहेतेणं एवंकओ ॥ इहां गहीय शब्दे चुठ्यानो अर्थ छे, तथा कोइ कहेस्ये ने एतो देवताये कर्यों है ते श्रावके

68

करचानो किहां पाठ नथी, तेहने कहीय जो देवतानी करणी ताहरे न करवी तो शक्रस्तव किम करे छे? तथा स्नात्र कॅम मानो छो ? स्नात्र नो कलस ढोलो छो ते देवतानी करणीज छे, तथा सुरीयाभनी पूजानी भलामण द्रौपदीने पाठे हैं. देवतानी पूजाकरणी तथा मनुष्यनो पाठ एकज छै तैमाटे देवतानी करणी श्रावक करे ए श्रद्धाप्रमाण है तथा जे फुल चुंटवानी ना कहे ते वींटना जीवनि कीलामना माटे तैवारे फूलनी पूजा किम करी शके ? अने फुलनी पूजानो तो सुत्रे पाठ छै. तथा जे प्रजाने हिंसामें गणे तेहने कहीये जे श्री प्रश्नव्याकरण सूत्रे प्रथम संवरद्वारे अहि-साना ६० नाम कहां छे तिहां पूजा ते द्या

आगमसार.

कही छै. ते पाउ लिखीइ छे. अभजसम्बस्स विअनाघाओ चुरकाषव्यत्तीप्रयाविमलप्पभा-निम्मलकरति एवमाइणिनियगुणनिम्मियाइ-पज्झायनामाणिहंति अहिंसाए भगवइए इत्यादि पाठे पूजा ते अहिंसामें गणी छै, तो त्रम्हे हिंसामें किम गणो छो ? तथा भगवती स्त्रे " सुभयोगपडुचअणारंभा " ए पाउ श्रभयोग प्रवृत्तिने आरंभनी ना कही छै. विनय तथा वैयावच ते तपना भेद हे. तप ते मोक्षमार्गमध्ये श्रीउत्तराध्ययने २८ मे अध्य-यने कह्यो, ते तुमें हिंसामें केम कहो छो ? तथा विवहारस्त्रे सिद्धवेयावचेणं महानिज्ज-रामहापज्झवसाणंभवति " तेमाटे सिद्धवै यावच ते पूजा छे, तथा कोइ पूछे जे श्रावके प्रतिमा

किहां पुंजी छे ?तेहने केहवो जे श्रीभगवतीसत्रे तुंगीया नगरीने श्रावके पूजा करी छै. शंख पुष्कलीये पूजा करी है. तथा समवायांगसूत्रे द्वादशांगीनी हुंडीने अधिकारे उपासकद्वानी हंडीमध्ये दश श्रावकनां चैत्य एहवो पाड है. ए पाडमे चैत्य तो साध थाय नहीं, ज्ञान थाय नहीं ते सर्वना पाठ जदा है, तथा नंदीसत्रे पिग पाठ छै तथा नंदीमध्ये जे आगम कह्या ते सर्व माने तेज समकिती जाणवो श्रीअनुयो गद्वारसत्रे निर्यक्तिनी हा कही छै ते निर्यक्ति-मध्ये पुजाना अनेक अधिकार छै, तथा तंदुरुवेयान्त्रीपयन्नानी टीकामध्ये समवसरणना क्कल सचित्त ते उपर साधु साध्वी चाले. अवचनसारोद्धार टीकाये पण ए मत छै. तथा

आगमसार.

कोइ कहेस्ये जे फूलने मोइ (परोववा) नहीं तेहने कहीये जे हीरपश्चमध्ये पाठ छै. तथा वसगंधोवमेहेंचेति: श्लोकच्याख्यायते श्राद्ध दिनकृत्ये प्रोतप्र पजाक्षराणिवर्त्तते आद्यपक्षेत् जिनवल्लभसूरि कृत पुजाकुरुकेऽपि त्रोत पुष्पाक्षराणि संति तथा हरिभद्रस्रि कृत पूजा पंचासके जहरें हई तकीरइ ''. ए गाथाना आसयथी पिण पोया फलनी हा जणाय छे. तथा उमास्वातिवाचक कृत पूजा पटलमांपिग एमज जणाय छे. ते स्थापना इतर अने यावतकथिक ए वे भेदें छै

३ द्रव्य निश्लेषो कहे छै, जेनो नाम पण होय तथा आकार थापना गुण पण होय अने स्क्ष्मण होय पण आत्मोपयोग न मिले ते

24

द्रच्य निक्षेपो जाणवो एटले अज्ञानी जीव ते जीव स्वरूपना उपयोग विना द्रव्य जीव छै " अणुवओगो दबं " इति अनुयोगद्वार वच-नातु. वली कहां छे जे सिद्धान्त वांचतां पूछतां पद अक्षर मात्रा शुद्ध अर्थ करे छे अने गुरु म्रुखे सद्दहे छे ते पण शुद्ध निश्चये सत्ता ओ-छएया विना सर्व द्रव्य निक्षेपामां छै. जे भाव विना द्रव्यपणो छे ते पुण्य बंधनं कारण छे पण मोक्षनं कारण नथी एटले जे करणी रूप कब्र तपस्या करे छै अने जीव अजीव सत्ता ओलखी नथी तेने भगवती सूत्रमां अत्रती तथा अपचरुखाणी कहा है, तथा जे एकली शाब करणी करे छे अने पोते साधु कहेबरावे है ते मृषवादी छे एम उत्तराध्ययन सत्त्रमां

आगमसार.

कहां छे ''न मुणी रन्नवासेणं'' ए वचनें ''ना-णेण य मणी होइ '' ए वजनथी जे ज्ञानवान् ते म्रनि छे अने जे अज्ञानी ते मिथ्यात्वी छे. तथा कोइक गणितानयोगना नरक देवताना बोल अथवा यति श्रावकनो आचार जाणीने कहे जे अमे ज्ञानी छैयें ते पण ज्ञानी नथी, पण जे द्रव्य गुण पर्याय जाणे तेने ज्ञानी क-हियें. श्री उत्तराध्ययने मोक्ष मार्गे कहा छे. गाथा, एयं पंच विहंनाणं दब्वाणय गुणाणय, पज्जवाणय सबसि, नाणं नाणी हि दंसियं ११ माटे वस्तु सत्ता जाण्या विना ज्ञानी नही अने नवतत्त्व ओलखे ते समकीति अने एहवा ज्ञान दर्शन विना जे कहे के अमे चारित्रिआ छैयें ते पण मृषावादी छे, कारण के श्री उत्तराध्ययन

20

सत्र मध्ये कह्युं छे जे "नादंसणस्सनाणं नाणेण विणा न हुंति चरण गुणा " ए वचन छे ते माटे आज केटलाक ज्ञानहीन कियानो आंडबर देखाडे छे ते ठग छे तेहनो संग करवो नही. ए बाह्य करणी अभव्य जीवने पण आवे माटे ए बाह्य करणी उपर राचवुं नही अने आत्मानं स्वरूप ओल्रख्या विना सामा-यक पडिकमणा पचछखाण करवां ते सर्व द्रव्यनिक्षेपामां प्रण्याश्रव हे पण संवर नथी. श्रोभगवती सूत्र मध्ये कहां छे के "आया खल्ज सामाइयं '' ए आळावाथी जाणजो तथा जीव स्वरूप जाण्या विना तप संयम पुण्य प्रकृति <u>ते देवताना भवनं कारण छे " पुच्च तवेणं</u> पुरुव संयमेणं देवलोए खबबर्ज्ञात नो चेवणं

आगमसार.

आय भाववत्तव्ययाए " ए आलावो भगव-तीमां कहाो छे. तथा जे कियालोपी आचार हीन अने ज्ञानहीन छे मात्र गच्छनी चालें सिद्धान्त भणे छे वांचे छे त्रत पच्चख्खाण करे छे ते पण द्रव्य निक्षेपो जाणवो. एम श्री अनुयोगद्वारमां कहाँ छे.

जे इमे समण गुणमुक्कजोगी छकाय निरणुकंपा ॥ हयाइव उद्दामा ॥ गयाइव निरं-कुसा ॥ घट्टामट्टातुप्पोठा ॥ पंडुरयाउरणा जि-णाणं आणाए सच्छंद विहरिउण उभओ-कांलं आवस्सग्गस्स उवटंति ॥ तं लोगुत्तरियं दच्यावस्स्सयं ॥

अर्थ—जेने छ कायनी दया नथी, घो-डानी पेरें उन्मत्त छे, हाथीनी पेठे निरंकुश

छै. पोताना शरीरने धोवतां मसलता उजले कपडे शिणगार करी गच्छना ममत्वभाने मा-चतां स्वेच्छाचारी वीतरागनी आज्ञा भांजता जे तप क्रिया करे छे ते पण द्रव्य निक्षेपामां है. अथवा ज्योतिष वैद्यक करे है अने पो-ताने आचार्य उपाध्याय कहेवरावीने लोक पासे महिमा करे (करावे छे) छे ते पत्रीवंध खोटा रूपैया जेवा छे. घणा भव भमसे अवं-दनीक छै ए खास उत्तराध्ययनमध्ये अनाथी म्नीना अध्ययनथकी जागवी अने सूत्रना अर्थ गुरुप्रसे शिख्या िना तथा नय प्रमाण जाण्या विना निश्चय आत्मातं स्वरूप ओल-ख्या विना निर्युक्ति विना उपदेश आपे ते पोते तो संसारमां बुड्या छे पण जे तेमनी

आगमसार.

पासे बेसे छे तेमने पण संसारमां बुढावे छै एम प्रश्न व्याकरण सृत्र तथा अनुयोगद्वार सूत्रमां कह्युं छे '' अज्जुत्थ चेव सोल समं '' इत्यादि अने भगवती सृत्रमां पण कह्युं छे ''सुतत्थो खल्ज पढमो, वीओ निजुत्ति मिसओ भणिओ, इत्तो तईअणुओगो, नाणुझाओ जिणवरेहिं '' अने केटलाक एम कहे छे जे अमे सूत्र उपर * अर्थ करिये छैयें तो निर्युक्ति

^{*} श्री भगवती सूत्रमां "सुतत्थोखलु पढमो, बीओनिज्जित्ति मिसओ भणिओ ॥ इतो तईयणु-ओगो, नाणुत्राओजिणवरेहिं " एवी रीते आगम-सारनी जुढ़ी जुढ़ी त्रण प्रतोमां स्रुक्युं हतुं माटे में पण तेमज स्रुक्युं छे पण बीजा ठेकाणे ए भग-वतीनी साख दीश्री छे तिहां तो " सुतस्थो खकु-

तथा टीका प्रमुखतुं शुं काम छे ते पण मृषा-बाद छे केमके श्रीप्रश्रव्याकरणमां "वयणतियं हिंगतियं " इत्यादिक जाण्या विना अने नय निक्षेप जाण्या विना जे उपदेश आपे ते मृषा-बादी छे एग अनेक सूत्रमां कह्युं छे माटे बहु-श्रुत पासे उपदेश सांभलवो. श्री उत्तराध्ययन मध्ये बहुश्रुतने मेरुनी तथा समुद्रनी अने कल्पन्नक्षादि सोल उपमा दीधी छे ए द्रव्य निक्षेपो कह्यो.

४ भाव निक्षेषो कहे छे. जे नाम स्था-पना अने द्रव्य ए त्रण निक्षेषा ते एक भाव

पढमो, बीओनिज्जुत्ति मिसओ भणिओ ॥ तइओय निर्विसेसो, एस विहि होई अणुओगो " एवो पाठ छे ते खरो जणाय छे पछे बहुश्रुत कहे ते खरुं.

आगमसार.

निक्षेपा विना अश्रद्ध छे जे नाम तथा आकार लक्षण गुण सहित वस्तु ते भाव निक्षेपो जा-णवो " उवओगो भाव " इति वचनात एटले पूजा, दान, शील, तप, किया, ज्ञान ए सर्व भावनिक्षेपे सहित लाभनं कारण छै इहां कोड कहेरो जे मनना परिणाम इह करीने जे करियें तेने भाव कहियें एम कहे छे ते जुटा छे एतो सुखनी वांछायें मिध्यात्वी पण घणा करे छे ते गणवं नहीं. इहां सूत्रनी साखे वीतरागनी आजाए हेय उपादेयनी परीक्षा करी अजीवतत्त्व तथा आस्रवतत्त्व अने बन्ध-तत्त्व उपर हेय कहेतां त्याग भाव अने जीवना स्वगुण जे संवर निर्जरा तथा मोक्ष तत्त्व ऊपरें उपादेय परिणाम ते भाव कहिये एटले रूपी-

गुण ते द्रव्य निक्षेप छे अने अरूपीगुण ते भावनिक्षेप छे एटले मन वचन काया लेक्या- दिक सर्व द्रव्य निक्षेपामां छे अने ज्ञान दर्शेन चारित्र वीर्य ध्यान प्रमुख सर्व गुण भाव निक्षेपामां छे. ए भाव निक्षेपो ते नामस्थापना तथा द्रव्य सहित होय एटले चार निक्षेपा कहा.

हते चार निक्षेपा पटार्थ ऊपर लगाडी देखाडे के नाम जीव ते चेतना अथवा मांचाना एक बाणने जीव कही बोलावे के ते नाम निक्षेपे जीव. मूर्ति मसुख थापियें ते स्थापना जीव. एकेंद्रियथी पंचेद्रिय पर्यंत सर्व जीव के पण उपयोग मिले नहि ते द्रव्य जीव. अने मूर्तिमां जीव स्वरूप ओलखी समकितना

आगमसार.

उपयोगमां छे ते भाव जीव. एम धर्मास्तिकायादिक द्रव्यमां पण जाणवुं. नामधी धर्मास्तिकाय कही बोलाववो ते नाम धर्मास्तिकाय.
धर्मास्तिकाय एहवा अक्षर लखवा अथवा
दृष्टांत कारणे कांइक वस्तु थापवी ते स्थापना
धर्मास्तिकाय तथा धर्मास्तिकाय जे असंख्यात
प्रदेशी धर्म द्रव्य छे ते द्रव्य धर्मास्तिकाय. ए
धर्मास्तिकायने जे वारं चलण सहाय गुणनी
अपेक्षा सहित ओलखियं ते भाव धर्मास्तिकाय.

हवे कोइकनो साधु एहवो नाम छै ते नाम साधु अने स्थापना करियें ते स्थापना साधु तथा जे पंच महात्रत पाले क्रिया अनु-ष्टान करे सुजतो आहार लिये पण ज्ञानध्या-ननो जेवो उपयोग जोइए तेवो उपयोग न

आगमसार,

९५

होय ते द्रव्य साधुः जे भाव संवरमोक्षनो सा-धक थइ भाव साधुनी करणी करे ते भाव निक्षेपे साधु कहियेः

कोइकनो अरिहंत नाम छे ते नाम अरि-हंत अने अरिहंतनी प्रतिमा ते थापना अरि-हंत जेटला सुत्री छबस्थ अवस्था ते द्रव्य अरिहंत अने केवल ज्ञान पाम्या पर्छे लोका-लोकनो भाव जाणे देखे ते भाव अरिहंत एम सिद्धमां पण कहेवो

कोइ जीवनो ज्ञान एहवो नाम अथवा भावें अजीवनो नाम ते नाम ज्ञान तथा जे ज्ञान पुस्तकमां लख्युं छे ते स्थापना ज्ञान. ज उपयोग विना सिद्धांतनो भणवो अथवा अन्य मितना सर्व शास्त्र भणवा तथा ज्ञशरी-

आगमसार.

रादिक ते सर्व द्रव्य ज्ञान जे नवतत्त्वनुं जाणवुं ते भावज्ञान

तथा कोइकतुं तप एहतुं नाम ते नाम
तप तथा पुस्तकमां तपनी तिथिनुं लेखन ते
थापना तप अने पुण्यरूप मासखमणादिक
करवो ते द्रव्य तप ज परवस्तु ऊपर त्यागनो
परिणाम ते भाव तप एम संवरादिक सर्वमां
चार चार निक्षेपा जाणवा तथा श्री अनुयोगद्वार मध्ये कहुं ले—यतः " जत्थयजं जाणिजाः, निरुखेवं निरुखेवं निरवसेसं॥ जत्थयनो
जाणिजाः, चडकयंनिरुखेवं तत्थ ॥ १। ए
चार निक्षेपा कहा एटले शब्दनय कहाः.

हर्ने छट्टो समभिरूढ नय कहे छै जे वस्तुना केटलाक गुण प्रगटचा छै अने

९ ७

केउलाक गुण प्रमच्या नथी पण अवश्य प्रम-दश एहवी वस्तुने वस्तु कह ते वस्तुना नामांतर एक करी जाणे. जेम जीव चतन तथा आत्मा एहनोक्ष एक अर्थ कहे ते सम-भिरुद नय कहिये, ए नय एक अंश ओछी वस्तुने पूरेपूरी वस्तु कहे, जेम तेरमा गुण-ठाणे केवली होय तेहने सिद्ध कहे ए नयना भेद विलक्षल नथी ए समिभिरूद नय कहो।

हवे एवंभूतनय कहे छे जे वस्तु पोताने गुणे संपूर्ण छे अने पोतानी किया करे छे तेने ते वस्तु कही बोलावे जेम मोक्सस्थानके ने जीव पहोतो तैने सिद्ध कहे. जेम पाणीथी

^{*} एकार्थवाची नामोनां नामभेदे भिन्न भिन्न अर्थ करे छे तेने समभिरूद नय कहे छे.

आगमसार.

भेरेलो स्त्रीना माथा उपर आवतो जल धारण किया करतो तेने घडो कहे. ए एवंभृत नय कह्यो

हवे सात नयना द्रष्टान्त श्री अनुयोगः द्वारा सूत्रथी लखियें छैयें. जेम कोइक प्ररुषे बीजा कोइक पुरुषने पुछत्युं जे तमे किंहां वसो छो तेवारें ते पुरुषें कहुं हुं लोकमां वसं छं ए अश्रद्ध नैगम, वली पुछयं जे लोकना त्रण भेद हैं, ? अधोलोक, २ त्रिछो-लोक ३ ऊर्ध्वलोक तेमां तं किहां रहे छै तेवारें नैगमें कहां जे त्रिछास्रोकमां रहुंछुं. वस्री पुछयुं जे त्रिछालोकमां असंख्याता द्वीप सम्रद्ध छे तेमां तं कया द्वीपमां रहे छे तेवारें विश्रद्ध नैगमें कहा जे जंबुद्दीपमां रहे छं. तै

जंबद्वीपमां खेत्र घणा छे, तेमां तुं कया खेत्रमां रहे छे, तेवारें अतिशुद्ध नैगम बोल्यो जे भर-तक्षेत्रमां रहुंछुं, ते भरतक्षेत्रना छ खंड छे ते मांहेळा कया खंडमां रहे छे तेवारें कहां जे मध्यखंडमां रहं छुं एम ऋमें पूछतां छेल्ले कहां जे आपणा देशमां रहं छं, तेवारें फरी पुछ्यं जे देशमां तो नगरगाम घणा छै तो तुं किहां रहे छै. तेवार्रे कह्यं जे हुं अमुक गाममां रहं छं, ते गाममां वली अम्रक पाडो तथा अग्रक घर बताच्यं तिहां सुधी नैगम नय जाणवो.

अने संग्रह नय वालो बोल्यो जे मारा पोताना शरीरमां वसुं छुं, तथा व्यवहारनय-बास्रो बोल्यो जे संथारे बेठो छुं तेटलाज

आगमसार.

विछानामां रहुं छुं, अने ऋजुस्त्र नयवाले कहां जे मारा आत्माना असंख्याता प्रदेशमां रहुं छुं. वली शब्दनय कहे जे मारा स्वभावमां रहुं छुं, तेमज समभिरूदनय कहे जे हुं मारा गुणमां रहुं छुं, अने एवंभूतनयवादी कहे जे ज्ञानदर्शन गुणमां वसुं छुं. ए दृष्टांत कहा तेम सर्व वस्तुमां कहेवुं.

तथा कोइक प्रदेशमात्र क्षेत्र अंगीकार करी पुछयुं जे ए प्रदेश कया दृश्यनो छे तैयारें नैगमनय बोल्यो जे छए दृश्यनो प्रदेश छे केमके एक आकाश प्रदेशमध्ये छ दृश्य भेला छे तेयारें संग्रह नय बोल्यो जे कालदृश्य तो अपदेशी छे ते माटे सर्व लोकमां एक समय छे पण ते एक आकाश दृश्यना प्रदेशमां

अगमसार,

१०१

जुदो नथी माटे काल विना पांच द्रव्यनो प्रदेश छे तेवारें व्यवहारनय बोल्यो के जे इच्य मुख्य देखाय छे तेहनो प्रदेश है तेवार्रे भज़सूत्रनय बोल्यों के जे द्रव्यनो उपयोग देइ पुछियें ते द्रव्यनो प्रदेश छे. जो धर्मास्ति-कायनो उपयोग देइ पुछियें तो धर्मास्ति-कायनो पदेश छै. जो अधर्मास्तिकायनो उपयोग देइ पुछियें तो अधर्मास्तिकायनो महेश है. तेवारे शब्दनय बोल्यो के जे द्रव्यनो नाम लड़ पुछियें ते द्रव्यनो प्रदेश छै. हवे समभिरूदनय वोल्यो ने एक आकाश प्रदेश मध्ये धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश छे, अधर्मास्ति-क्रायनो एक प्रदेश छै अने जीवना अनंता भ्रोक हे. पुहलना अनंता पर 🌶ाण प्रमुख

आगमसार.

अस्तिकायनो एक प्रदेश छे, तेवारे एवं भूत नय बोल्यो, जे प्रदेश द्रव्यनी क्रियागुण अंगोकार करी देखीयें ते समयमां ते प्रदेश ते द्रव्यनो गणिये ए प्रदेशमां सात नय कहा।

हवे जीवमां सात नय कहे छे. प्रथम नैगमनयने मते जे गुण पर्यायवंत श्रास् सहित ते जीव एटले शरीरमां जे बीजा पुहल तथा धर्मास्तिकायादिक द्रव्य छे ते सर्व जीव-मांज गण्या तेवारे संग्रहनय वोल्यो जे असं-ख्यात प्रदेशी ते जीव एटले एक आकाशना प्रदेश टल्या बीजा सर्व द्रव्य एमां गणाणा तेवारे व्यवहारनय बोल्यो, जे विषय ला काम वात संभारे ते जीव इहां धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाश तथा बीजा पुहल

१०३

सर्व टल्या पण पांचे उन्द्रीय तथा मन अने लेश्या ए पुद्रल छे ते जीवमां गणाणा, कार-णके विषयादिकतो इंद्रियो ले छे ते जीवथी न्यारा छे पण इहां व्यवहारनयमते जीव भेला लीघा छे तेवारे ऋजुसुत्रनय वोल्यों जे उपयो गवंत ते जीव इहां इंद्रियादिक सर्वे टल्या पण अज्ञान तथा ज्ञानना भेद टल्या नहीं. हरे शब्दनय वोल्यो जे नामजीव, स्थापना जीव द्रव्यजीव भाव जीव इहां जीवमां गुण निर्गुणगो भेद पड्यो नहीं, तेवारें समभिरू-ढनय बोल्यो जे ज्ञानादिगुणवंत ते जीव तेवारें मतिज्ञान श्रुतज्ञान इत्यादिक साधक अवस्थाना गुण ते सर्व जीव स्वरूपमां आव्या. हवे एवंभ्रतनयबोच्यो जे अनंतज्ञान, अनंतदर्शन,

आगमसार.

अनंत सारित्र, शुद्धसत्तातंत ते जीव. ए नये जे.सिद्ध अवस्थामा गुण हता तेज ग्रह्मा ए सात'नये जीव-द्रव्य कहा।

हवे सातनयें धर्म कहे छे. नैगमनय बोल्यों जे सर्व धर्म छै केमके सर्व प्राणी धर्मने चाहे छे. ए नय स्वरूप धर्म नाम धर्म ने धर्म कहे. हवे संग्रहनय बोल्यो जे बडेरायें आदरचो ते धर्म, एणे अनाचार छोड्यो पण कुलाचारने धर्म कहाो, व्यवहारनय बोल्यो जे सुखतुं कारण ते धर्म एणे प्रण्य करणीने धर्म करी मान्यो. ऋजुसूत्रनयमते जे उपयोग सहित वैराग्यरूप परिणाम ते धर्म कहियें. ए नयमां यथाप्रवृत्तिकरणना परिणाम प्रमुख सर्व धर्ममां गण्या ते मिथ्यात्वीने पण

अगुमस्रह

tole

होय. हवे शब्दनकारोह्या जे धर्मतं मूल्सम्मिकत हे माटे समकित**ार्थ धर्म जेखेरे समकिरूक्ष** बोल्यो जे जीव अजीव 📆 वत्रे तथा द्रव्यने ओलखीने जीवसत्ता घ्याने अजीवर्ना त्याग करे एहवो ज्ञान दर्शन चारित्रनो शुद्ध-निश्चय-परिणाम ते धर्म. ए नये साधक सिद्ध परिणाम ते धर्मपणे छीधा. एवंभूतनय बोल्यो जे शुक्क ध्यान रूपातीत परिणाम क्षपक श्रेणि कर्म क्षयना कारण ते साधन धर्म जे जीवनो मूळ स्वभाव ते वस्तु धर्म जे मोक्षरूप कार्य नीपने सिद्धमां रहे ते धर्म. ए साते नयें धर्म कहाो.

हवे सातनयें सिद्धपणो कहे छे. नैगम-नयनी मते सर्व जीव सिद्ध छे केमके सर्व

आगमसार.

जीवना आठ रुचक प्रदेश सिद्ध समान नि मेल छे माट संग्रहनय कहे जे सर्व जीवनी सत्तासिद्ध समान छे एणे पर्यायार्थिक नयेंकरी कर्म सहित अवस्था ते टालीने द्रव्यार्थिक नयेंकरी अवस्था अंगीकार करी तेवारें व्यव-हारनय बोल्यो जे विद्या छिंदिय प्रमुख गुणे करी सिद्ध थयो ते सिद्ध ए नये बाह्य तप प्रम्रख अंगीकार करचा, हवे ऋजुमुत्रनय बोल्यो के जेणे पोताना आत्मानी सिद्धपणानी सत्ता ओछखी अने ध्याननो उपयोग पण तेज वर्त्ते छे ते समयें ते जीव सिद्ध जाणवो. ए नये समकीति जीव सिद्ध समान हे एम कहां हवे शब्दनय वोल्यो जे शुद्ध शुक्क ध्यान परिणाम नामादिक निश्लेपे ते सिद्धः तेवारें

आगमसार•

समभिरूदनय बोल्यों जे केवलज्ञान केवल-दर्शन, यथाख्यातचारित्र ए गुणे सहित ते सिद्ध जाणवा. ए नये तेरमा चडदमा गुणठा-णाना केवर्छाने सिद्ध कह्या अने एवंभूतनय कहे है के जेना सकल कमें क्षय थया लोकने अंते विराजमान अष्टग्रण संपन्न ते सिद्ध जाणवा. ए रीते सिद्ध पदे सात नय कहा. एम सात नय मिल्या समकीति छे अने जे एक नयने ग्रहण करे ते मिध्यात्वी छै. ए साते नय सिन्ह ते वजन प्रमाण छे अने ए सात नयमां कोइ पण नयने उत्थापे तेनं वचन अव्रमाण है.

हवे प्रमाणनो विचार कहे छै प्रमाणना वे भेद छै. एक प्रत्यक्ष प्रमाण बीर्ज परोक्ष

आगमसार.

प्रमाण तेमां जे जीव पोताना उपयोगथी
द्रव्यने जाणे ते प्रत्यक्ष प्रमाण कहियें. जेम
केवली छ द्रव्य प्रत्यक्ष प्रमाणे जाणे तथा
देखे ते माटे केवलज्ञान ते सर्वथी प्रत्यक्ष ज्ञान
छे, अने मनः पर्यवज्ञान ते मनोवर्मणा प्रत्यक्ष
जाणे तथा अवधिज्ञान ते पुद्रल द्रव्यने प्रत्यक्ष
जाणे माटे ए वे ज्ञान देश प्रत्यक्ष छे. वीजं
छग्नस्थज्ञान ते सर्व परोक्ष प्रमाण छे.

हवे परोक्ष ममाण कहे छै. मितिझाननो अने श्रुतझाननो उपयोग परोक्ष ममाण छे केमके जे शास्त्रना वल्लथी जाणे ते परोक्ष ममाण कहियें. ते परोक्ष प्रमाणना त्रण भेद छे. १ अनुमान प्रमाण, २ आगम प्रमाण, ३ उपमान प्रमाण. तेमां अनुमान एउले कोइक

809

सहिनाण देखीने जे ज्ञान थाय. जेम धुमाडो देखीने अग्निनं अनुमान थाय अने आगम एटले शास्त्रनी साखधी जे वात जाणियें. जेम देवलांक तथा नरक निमोद विमोरेनो विचार आगमधी जाणियें छैये ते आगमप्रमाण अने कोइक वस्तुनो दृष्टान्त आपीने वस्तुने ओलखाववी ते उपमान प्रमाण जाणवो. ए प्रमाण कहा. हहे सत् असत् पक्षधी सप्तभंगी कहे छे.

? स्यात् केहतां अनेकांतपणे सर्व अ-पेक्षा छेइ जीवद्रव्यमां आपणो द्रव्य आपणो स्वेत्र आपणो काल आपणो भाव एम आपणे गुण पर्यायें जीव छे तेम सर्व द्रव्य आपणे गुणपर्यायें छे ते स्यात् अस्ति नामा पहेलो भागो थयो.

२ जे जीवमां बीजा पांच द्रव्यना १ द्रव्य २ खेत्र ३ काल ४ भाव ते पद्रव्यना गुणपर्याय जीवमां नथी एटले परद्रव्यना गुणनो नास्तिपणो सर्व द्रव्यमां छे. ए स्यात् नास्ति बीजो भांग थयो.

३ द्रव्य स्वगुणे अस्ति अने पर गुणे नास्ति ए वे भांगा एक समये द्रव्यमां छै. जेम जे समये गुद्ध स्वगुणनी अस्ति छे तेज समयें परगुणनी नास्ति पण छे, माटे अस्ति नास्ति ए वेहु भांगा भेला छे तेस्यात् अस्ति नास्ति त्रीजो भांगो थयो.

४ अस्ति अने नास्ति ए बेहु भांगा एक समयमां छे तो वचने करी अस्ति एटलो बोलतां असंख्यता समय लागे तेथी नास्ति

भागों तेज वखते कहेवाणों नहीं अने जो नास्ति भागों कहां तो अस्तिपणों नाव्यों माटे एकज अस्ति कहेतां थकां नास्तिपणों तेज समये द्रव्यमां छे ते नहीं कहेवाणों माटे मृषा-वाद लागे तेमज नास्ति कहेतां अस्तिनों मृषावाद लागे माटे वचने अगोचर छे एक समयमां बेहु वचन बोल्या जाय नहीं कैमके एक अक्षर बोलतां असंख्याता समय लागे छे माटे वचनथीं अगोचर छे ते स्यात् अव-क्तव्य ए चोथों भांगों कहां.

५ ते अवक्तव्यपणो ए वस्तुमां अस्ति-धर्मनो पण छे माटे स्यात्अस्ति अवक्तव्य पांचमो भांगो कह्यो.

६ तेमज नास्ति धर्मनो पण अवक्तव्य-

आगमसार.

पणो वस्तु मध्ये छै माटे स्यात् नास्ति अव क्तव्य छहो भांगो जाणवो.

७ ते अस्तिपणो तथा नास्तिपणो बेहु धर्म एकसमये वस्तु मध्ये छे पण वच-नथी अवक्तव्य छे माट स्यात् अस्तिनास्ति-युगपत्अवक्तव्य ए सातमो भांगो कह्यां.

हते ए सात भांगा नित्य तथा अनित्यपणामां लगाडे छे १ स्यात् नित्यं २ स्यात्
अनित्यं ३ स्यात्नित्यानित्यं ४ स्यात् अवक्तव्यं ५ स्यात्नित्यं अवक्तव्य ६ स्यात् अनित्यं
अवक्तव्यं ७ स्यात् नित्यानित्यं युगगत् अवक्तव्यं, एमज एक अनेकना सात भांगा कहेवा तथा गुणपर्यायमां पण कहेवा केमके

सिद्ध मध्ये नय नथी तोपण सप्तभंगी तो सिद्धमां है.

हवे सत्ता ओलखाववाने त्रिभंगी कहे छे. १ मिथ्यात्व दशा ते वाधकदशाः २ सम-कित गुणठाणार्था मांडीने अयोगी केवळी गु-णडाणा सुधी साधक दशा जाणवी. ३ सर्व कर्मथी रहित ते सिद्ध दशा. १ ज्ञाननो जाग-पणो ते जीव गुण २ तेनो ज्ञाता ते जीव. ३ ज्ञेय ते सर्व हुट्य, १ ध्यान ते जीवना स्व-रूपनो २ ते ध्याननो ध्याता जीव ३ ध्येय आत्मानो स्वरूप. १ कर्ता ते जीव २ कर्म ते एक मोक्ष वीजो बन्ध ३ क्रिया ते एक संवर वीजी आखव. ? कमे ते चेतनाने कमे वंधना परिणाम २ कर्मतुं फल ते चेतनाने

आगमसार.

जे कर्म उदयना परिणाम ३ ज्ञान चेतना ते जीवनो स्वग्रण ते आत्माना त्रण भेद छे १ अज्ञानी जीव शरीरादिक परवस्तुने आत्म-बुद्धियें करी माने छे ते पहेलो बहिरात्मा २ जे देह सहित जीव छे ते पण निश्चये सत्तागुण सिद्ध समान छै एटले पोताना जीवने सिद्ध समान करी ध्यावे तेवीजो अंतरात्मा जाणवो. ३ कर्म खपावी केवलज्ञान पाम्या ते अरिहंत तथा सिद्ध सर्वे परमात्मा जाणवा. ए त्रिभं-गीनो विचार कहा। एटले आठ पक्षनो वि-चार कहारे.

हवे एकेक द्रव्य मध्ये छ सामान्य गुण छै ते कहे छे. पहेलो अस्तित्व ते जे छ द्रव्य आपणा गुण पर्याय प्रदेश करी अस्ति छै

तैमां धर्म, अधर्म, आकाश अने जीव ए चार द्रव्यनो असंख्याता प्रदेश मिल्या खंध थाय छै अने पुद्रलमां खंध थवानी शक्ति छै माटे ए पांच द्रव्य अस्तिकाय छै अने छट्टो काल द्रव्यनो समय कोइ कोइथी मिलतो नथी के-मके एक समय विणस्या पछे बीजो समय आने छै माटे काल अस्तिकाय नथी. द्रव्यमां ए अस्तित्वपणो कह्यो.

२ वस्तुत्व कहेतां वस्तुपणो कहे छै ते द्रव्य छए एकटा एक क्षेत्र मध्ये रह्या छै, एक आकाश प्रदेशमां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश रह्यो छैतथा अनंतात्माना अनंता प्रदेश रह्या छै. पुद्रस्त परमाणु अनंता रह्या छै ते सर्व पोतानी सत्ता स्त्रीधा थका रह्या छै पण कोइ द्रव्य

आगमसार.

साथे मिली जातो नथी ते वस्तुपणीः

३ इच्यत्व केहतां इच्यपणो ते सर्वे इच्य पोतपोतानी क्रिया करे एटले धर्माहितका-यमां चलनग्रण ते सर्व प्रदेश मध्ये है सदा कालें प्रदेल तथा जीवने चलाववारूपिक्रया करे छै, इहां कोइ पुछे जे लोकानत सिद्धक्षे-त्रमां धर्मास्किाय छे ते सिद्धना जीवने चला-ववापणो करतो नथी तेतुं केप ? तेने उत्तर कहे छे जे सिन्हना जीव अक्रिय है माटे चालता नथी पण ते क्षेत्रमां जे सक्ष्म निगी-दना जीव तथा पुरुल छे तेहने धर्मास्तिकाय चलावे छै माटे पोतानी क्रिया करे छै, तैमज अधर्मास्तिकाय जीव तथा पुद्रहने स्थिर रा-खवानी किया करे छे, तथा आकाश द्रव्य

११७

ते सर्वे द्रव्यने अवगाहनारूपकार्य करे छे. इहां कोइ पूछे जे अलोकाकाशमांतो बीजुं कोइ द्रव्य नथी तो अलोकाकाश कया द्रव्यने अवगाहदान आपे छे तेने उत्तर कहे छे जे अलोकाकाशमां अवगाह करवानी शक्ति तो लोकाकाश जेवीज छै परंतु तिहां अवगाहनो दान लेनार द्रव्य कोइ नथी माटे अवगाहदान करतो नथी अने पुद्रल द्रव्य मिलवा विख-खारूप क्रिया करे छै तथा कालद्रव्य वर्त्तना रूप क्रिया करे छे अने जीव इब्य ज्ञान छ-क्षण उपयोगरूप किया करे छे एम सर्व द्रव्य पोताने परिणामी स्वसत्तानी किया करे छै ए द्रव्यत्वपणो कह्यो.

४ ममेयत्वं कहेतां ममेयपणो जे छ द्र-

आगमसार.

व्यमां प्रमेयपणो छे, तेनो प्रमाण केवली पो-ताना ज्ञानथी करे छे, जे धर्मास्तिकाय तथा अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय एकेक द्रव्य छे अने जीवद्रव्य अनंता छे तेहनी गणति कहे छे संज्ञी मनुष्य संख्याता छे. असंज्ञी मनुष्य असंख्याता छे, नारकी असंख्याता छे, देवता असंख्याता छे, तिर्येच पंचेन्द्रिय असं-ख्याता छे, बेइंन्द्री असंख्याता. तेईंन्द्री चौरेंद्रीय असंख्याता छे पृथ्वीकाय असं-ख्याता, अपकाय असंख्याता, तेउकाय असंख्याता, वायुकाय असंख्याता, प्रत्येक वनस्पति जीव असंख्याता, ते थकी सिद्धना जीव अनंता ते थकी बादर निगोदना जीव अनंतागुणा एटले बादर निगोद ते कंदमूल

आद सुरण प्रमुख एहने सुइने अग्रभागें अ-नंता जीव छे ते सिद्धना जीवथी अनंतगुणा छे अने स्रध्मनिगोद सर्वथी अनंत गुणा छे. स्रक्ष्मिनगोदनो विचार कहे छै जेटला लो-काकाशना प्रदेश तेटला गोला छे ते एकेक गोलामां असंख्याता निगोद है. निगोद शब्दनो अर्थ ए छे जे अनंता जीवनो पिंड भूत एक शरीर तेहने निगोद कहियें ते एकेकी निगोदमध्ये अनंता जीव छे ते अतीत कालना सर्वे समय तथा अनागतकालना सर्वे समय अने वर्तमान कालनो एक समय तेने भेला करी अनंत गुणा करीये एटला एक निगोदमां जीव छे एटले अनंता जीव छे ए ए संसारी जीव एकेकाना असंख्याता प्रदेश

आगमसार.

छे अने एकेका प्रदेशे अनंति कमें वर्गणा लागी छे. ते एकेक वर्गणा मध्ये अनंता पुद्रल परमाणु छे एम अनंता परमाणु जीव साथे लाग्या छे ते थकी अनंत गुणा पुद्रल परमाणु जीवथी रहित छुटा छे.

> गोलाय असंखिज्जा, असंख निगोयओ हवइ गोलो ॥ इिककंमि निगोए, अणंतजीवा मुणेयद्या ॥ १ ॥

अर्थ—लोक मांहे असंख्याता गोला छे, एकेका गोला मध्ये असंख्याति निगोद छे. एकेक निगोदमां अनंता जीव छे॥

सत्तरस समहियाकिरी । इगाणुपाणुंमि हुंति खुडुभवा ॥

सगतीससयतिहुंत्तर । पाणु पुण इम मुहुत्तंमि ॥ १ ॥

अर्थ—िनगोदिया जीव ते मनुष्यना एक उसासमां सत्तर १७ भव जाजेरा करे छै अने सडत्रीससो तिहुंतेर ३७७३ श्वासो-च्छ्वासे एक मुहूर्तमां थाय.

पणसिंह सहस्स पणसय ।
छित्तसा इग मुहुत्त खुडुभवा ॥
आवित्याणं दो सय ।
छपना एग खुडुभवे ॥ १ ॥
अर्थ—निगोदना जीव एक मुहूर्तमां
६५५३६ भव करे अने निगोदनो एक भव
२५६ आवलीनो छे. खुछक भवनो ए

आगमसार.

अत्थि अणंताजीवा, जेहिं न पत्तो तसाइपरिणामो ॥ उवज्जंतियचयंति य, पुणोवि तत्थेव तत्थेव ॥ १ ॥

अर्थ-निगोदमां अनंता जीव एहवा छे. जे जीव त्रसपणो पहेला किवारें पाम्या नथी अनंतो काल पूर्वे गयो अने अनंतो काल जाशे पण ते जीव वारंवार तिहांज उपजे छे अने तिहांज चवे छे एम एक नि-गोदमां अनंता जीव छे ते निगोदना वे भेद छै. एक व्यवहार राज्ञी निगोद अने बीजो अव्यवहारराशी निगोद. तेमां जे बादर एकें-न्द्रियपणो भावें त्रसपणो पामीने पाछा निगो-दमां जाइ पड्या छे ते निगोदिया जीवने

१२३

व्यवहार राशिया कहियें, अने जे जीव कोड पण काले निगोदमांथी निकल्या नथी ते जीव अव्यवहारराशीया कहियें अने इहां मनुष्य-पणाथी जेटला जीव कर्म खपावीने एक समयमां मोक्ष जाय छे तेटला जीव तेज समये अन्यवहारराञ्ची सुक्ष्म निगोदमांथी निकलीने उंचा आवे छे. जो दश जीव मोक्ष जाय तो दश जीव निकले. कोइक वेलाए भव्य जीव ओझा निकले तो ते ठेकाणे एक वे अभव्य निकले पण व्यवहारराशीमां जीव कोड वधे घटे नहीं. एवा निगोदना असंख्याता लोक-मांडेला गोला ते छदिशीना आव्या पुदलने आहारादिपणे ले छे ते सकल गोला कहेवाय अने छोक अंतना प्रदेशे जे निगोदना

आगमसार.

गोला रह्या छे तेने त्रण दिशीना आहारनी फरशना छे माटे विकल गोला कहियें. ए सुक्ष्म निगोदमां पांच थावरना सृक्ष्म जीव ते सर्व लोकमां काजलनी क्रंपलीनी पेरं भरचा थका व्यापी रहा है अने साधारणपणी ते मात्र एक वनस्पतिमांज छे पण चार थाव-रमां नथी. ए सूक्ष्म निगोदमां अनंत दुःख छै तेनं उदाहरण कहे छे. सातमी नरकनं आयुष्य तेत्रीस सागरोपमना जेटला समय थाय तेटला वखत सातमी नरकमां उत्कृष्टी तेत्रीस साग-रोपमने आयुषे कोइक जीव उपने तेटला (असंख्याता) भवमां जेटलं छेदन भेदनतं दःख थाय ते सर्व एकड़ं करियें तेथी अनंत-गणुं दुःख निगोदना जीव, एक समयमां भो-

गवे छै. दृष्टान्त जेम कोइक मनुष्यने साडा त्रण कोड लोढानी सुइने अग्निथी तपावीने कोइक देवता समकाले चांपे तेने जे वेदना थाय तेथी अनंत गुणी वेदना निगोद मध्ये छै अने भव्य जीवने निगोदनुं कारण ते अज्ञान दशा छै माटे तेहनो त्याग करो. ए निगोदनो विचार कहाो. ए सर्व प्रमेयनो प्रमाता आत्मा पोताना ज्ञान गुणे करी प्रमेयनो प्रमाण करे ए प्रमेथपणो कहाो.

५ सन्वपणो ते छ इव्य एक समयमां उपने विणक्षे छे अने स्थिरपणे छे. उत्पाद व्यय ध्रुवपणो तेहिन सत्पणो उत्पाद व्यय- ध्रुवपणो सत् इति "तत्त्वार्थ वचनात्" ते विस्तारथी कही देखाडे छे. ने धर्मास्तिका-

आगमसार.

यना असंख्याता प्रदेश छे तिहां एक प्रदेशमां अगुरुलघु असंख्यातो छे अने बीजा प्रदेशमां अनंतो अगुरुलघु छै, त्रीजा पदेशमां संख्यातो अगुरुलघु छे एम असंख्याता प्रदेशमां अगुरुल-घपर्याय घटतो वधतो रहे छेते अगुरुलघु पर्याय चल है ते जे प्रदेशमां असंख्यातो है ते प्रदेशमां अनंतो थाय है अने अनंताने टेकाणे असं-ख्यातो थाय छे एम लोकप्रमाण असंख्यात प्रदेशमां शरीखो समकार्छे अगुरु लघु पर्याय फिरे छे ते जे पदेशमां असंख्यातो फिटीने अनंतो थाय छे ते प्रदेशमां असंख्यातपणानो विनाश है अने अनंतपणानो उपजवो है अने अगुरुलघुपणे गुण ध्रुव छै एम उपजवी वि-णसवो अने ध्रुव ए त्रणे परिणाम छे. अधर्मा-

१२७

स्तिकायमां पण ए त्रणे परिणाम असंख्यात पदेशे सदा समय समयमां परिणमी रहा है. तेमां पण उपजे विणशे अने थिर रहे छै. एम आकाशना अनंता प्रदेशमां पण एक समये त्रण परिणाम परिणमे छे अने जीवना असं-ख्याता प्रदेश छे ते मध्ये पण उपजे विणशे थिर रहे (छे.) तथा पुद्रल परमाणुमां पण समये समये थाय छे अने कालनो वर्त्तमान समय फिटीने अतीतकाल थाय छे तो ते समयमां वर्त्तमानपणानो विनाश छै अतीतपणानो उपजवो छै काल पणे ध्रुव छे. ए स्थूल थकी उत्पाद व्यय ध्रुवपणो कहा। अने वस्तुगते मूलपणे ज्ञेयने पलटवे ज्ञाननो पण ते भासनपणे परिणमवो थाय

आगमसार.

ते पूर्व पर्याय भासननो व्यय अने अभि-नव ज्ञेयना पर्याय भासननो उत्पाद तथा ज्ञानपणानो ध्रुव ए रीते सर्व ग्रुणना धर्मनी प्रवृत्तिरूप पर्यायनो उत्पाद व्यय श्रीसिद्धभ-गवन्तमां पण थइ रह्यो छे. एमज धर्मास्तिका-यना प्रदेशे ते क्षेत्र गत प्रहल तथा जीवने पहेले समये असंख्यात चलण सहायीपणो परिणमतो हतो अने बीजे समये अनन्त पर-माण तथा अनन्ता जीव प्रदेशने चलन सहायी थयो तैवारं असंख्याता चलन सहायनो व्यय अने अनंता चलन सहायनो उपजवी अने गुणपणे श्रव एम धर्मद्रव्यमध्ये उत्पाद ब्यय थइ रह्यो छे. तेमज अधर्मादिक द्रव्यने विषे पण भाववं. तथा वली कार्य कारणपणे

१२९

उत्पाद व्यय तथा अगुरुलघुना चलननो उत्पाद व्यय पंचास्तिकायने विषे कहेवो. तथा कालद्रव्य ते उपचार छे तेनं स्वरूप सर्व उपचारथीज कहेवुं. ए रीते सर्वे द्रव्यमां सतपणो छै जो अगुरुछपुनो भेद न थाय तो पछे प्रदेशनो मांहोमांह भेट केम थाय ? ते माटे अगुरुलघुनो भेद सर्वमां छै अने जेनो उत्पाद व्यय रूप सत्पणो एक छै ते द्रव्य एक छै. तथा जेनो उत्पाद व्यय सत पणो जुदो ते द्रव्य पण जुदो छे एटले सत केहतां सस्वपणो कह्यो.

६ अगुरुलघुपणो कहे छै. जे द्रव्यनो अगुरुलघु पर्याय छे ते छ पकारनी हानि इन्द्रिकरे छे. तेमां छ पकारनी टुन्डि छे.

आगमसार.

१ अनन्त भागवृद्धिः २ असंख्यातभागवृद्धिः ३ संख्यातभागदृद्धि, ४ संख्यातगुणदृद्धि, ५ असंख्यातगुणदृद्धि, ६ अनंतगुणदृद्धि. हवे छ प्रकारनी हानि कहे छे. ? अनंतभागहानि. २ असंख्यातभागहानि, ३ संख्यातभागहानि. ४ संख्यातगुणहानि, ५ असंख्यातगुणहानि. ६ अनंतग्रणहानि. ए रीते छ प्रकारनी वृद्धि तथा छ प्रकारनी हानि ते सर्वे द्रव्यमां सदा समय समय थइ रही छे. दृद्धि ते उपजवो अने हानि ते व्यय कहियें. ए अग्रुरुलघपणो कह्योः नहीं गुरु तथा नहीं छछ ते अगुरु छछ स्वभाव कहियें. ए सर्व द्रव्य मध्ये छै, ते श्री भगवती सुत्रें " सन्वदन्वा सन्वगुणा सन्वप-एसा सन्वपज्जवा सन्बद्धा अगुरुलहुआए "

१३१

अगुरुलघु स्वभावने आवरण नथी तथा आत्या मध्ये जे अगुरुलघुगुण ते आत्माना सर्व प्रदेशे क्षायिक भाव थये सर्व गुण सामान्यपणे परिणमे पण अधिका ओछा परिणमे नहीं ते अगुरुलघुगुणनुं प्रवर्तन जाणवुं ते अगुरुलघु गुणने गोत्रकर्म रोके छे ए अगुरुलघु स्वभाव ते सर्व द्रव्यमां छे.

हवे गुणनी भावना कहे छै. तिहां जेटला छए द्रव्यमां सरीखा गुण छे ते सामान्य गुण किहर्षे, अने जे गुण एक द्रव्यमां छे अने बीजा द्रव्यमां नथी ते विशेष गुण किहर्षे. जे गुण कोइक द्रव्यमां छे अने कोइक द्रव्यमां नथी ते साधारण असाधारण गुण किहर्षे. एम ए छ द्रव्यमां अनंतगुण, अनन्त पर्याय,

आगमसार,

अनन्त स्वभाव सदा जाश्वता छै. जेम श्री केवली भगवंते प्ररूप्या ते सर्व जे रीतें छै ते रीतें सद्दरणा पूर्वक यथार्थ उपयोगथी श्रुत-ज्ञानादिकथी यथार्थपणे जाणवा. सद्ददवा ए निश्चयज्ञान मोक्षनुं कारण छै. जे जीव ज्ञान पाम्यो ते जीव विरति करे छे ते चारित्र कहियें. ज्ञाननुं फल विरतिपणो छे ते मोक्षनुं तत्काल कारण छै.

हवे निश्चय चारित्र अने व्यवहार चा-रित्रनो विचार कहे छे. तेमां प्रथम व्यवहार चारित्र ते जे पाणातिपातिवरमण प्रमुख पंच-महाव्रतरूप ते सर्व विरति कहियें अने स्थूल-पाणातिपातिवरमण व्रतादिक श्रावकना बार व्रत ते देश विरति चारित्र जाणवुं. ए व्यव-

आगमसार-

हार चारित्र सुखनुं कारण छे एवी करणीरूप श्रावकना बार ब्रत अने यतिनां पांच महाब्रत ते अभव्यने पण आवे तेथी देवतानी गति पामे पण सकाम निर्ज्जरानं कारण न थाय. इहां कोइ पूछे के मोक्षतुं कारण नथी तो एटछं कष्ट शा वास्ते करियें ? तेने उत्तर जे त्याग बुद्धि निश्चय ज्ञान सहित चारित्र ते मोक्षनुं कारण छे माटे निश्रय चारित्र स-हित व्यवहार चारित्र पालवं ते निश्चय चारित्र कहे छे. शरीर, इन्द्रिय, विषय, कषाय, योग ए सर्व प्रवस्त जाणी छोडवा तथा आहार ते पुद्रस्र वस्तु जाणी छांडवो. आत्मा अणा-हारी छै ते मांटे मुजने आहार करवो घटे नहीं. आहार ते पुद्रल छे, आत्मा अपुद्रली

आगमसार.

छै ते माटे त्याग करवो. तद्रूप जे तप ते तप निश्चय चारित्रमां जाणवुं. चारित्र कहेतां चंचलता रहित थिरताना परिणाम अने आ-त्मस्वरूपने विषे एकत्वपणे रमण तन्मयता स्वरूप विश्रांति तन्वानुभव ते चारित्र कहियें. ते चारित्रना वे भेद छे एक देशविरति, बीजं सर्व विरति. तिहां देश विरति कहेतां श्राव-कनां वार वत ते वार वत निश्चय तथा व्य-वहारथी कहे छै.

? प्राणातिपात विरमण व्रत ते परजी-वने आपणा जीव सरीखो जाणी सर्व जीवनी रक्षा करे ते व्यवहार दया थइ माटे व्यवहार प्राणातिपात विरमण व्रत जाणवुं अने जे आपणो जीव कर्म वृश्च पड्यो दुःखी थाय छे ते आपणा जीवने कर्मबंधनथी मुकाववुं अने आत्म गुण रक्षा करी गुण दृद्धि करवी ते स्वद्या वंधहेतु परिणति निवारि स्वरूप गुणने प्रगटपणे करवा जे गुण प्रगट थयो ते राखवो एटले ज्ञाने करी मिथ्यात्व टाली आपणा जीवने निर्मल करे ते निश्चयथी प्राणातिपात विरमण वत कहियें.

२ मृषाबाद विरमणव्रत कहे छै. जूढ़ं वचन बिलकुल बोलबुं नहीं ते व्यवहार मृषा-वाद विरमणव्रत, हवे निश्रय कहे छै जे पर पुत्तलादिक वस्तुने आपणी कहेबी ते मृषावाद वचन छै. अने जीवने अजीव कहे तथा अजी-वने जीव कहे इत्यादिक अज्ञान ते भाव मृषावाद छै. अथवा सिद्धान्तना अर्थ खोटा

आगमसार.

कहे ए मृषावाद जेणे छांड्यो ते निश्रय मृषा-वाद विरमणत्रत कहियें, एटले बीजा अदत्ता-दानादिक व्रत जो भांजे (भांगे) तो तेनो मात्र चारित्र भंग थाय पण ज्ञान दर्शननो भंग न थाय अने जेणे निश्चय मुषावाद विरमणनो भंग करचो तेणे समकित तथा ज्ञान अने चारित्र ए त्रणेनो भंग करचो. तथा आगममां एम कहां छे जे एक साध्यें चोथो व्रत भंग करयो अने एक साध्यें बीजो मुषावाद व्रत भंग करचो तो जेणे चोथो व्रत भंग करचो ते आलोयण लेइ ग्रुद्ध थाय पण जे सिद्धान्तना अर्थनो मृषा उपदेश आपे ते आलोयण लीधे पण शुद्ध थाय नहीं.

३ अदत्तादान विरमण व्रत कहे छै.

जे पारकं धन वस्तु छपावे: चोरी करे: ठग-बाजी करी लीये ते चोरी छे, एटले पारकी वस्त धणीना दीधा विना लेवी नही ए व्य-वहारथी अदत्तादानविरमण व्रत जाणवं अने जे पांच इंद्रियना त्रेवीस विषय, आठ कर्म-वर्गणा इत्यादिक परवस्त लेवी नहीं तथा तेनी वांछा न करवी ते आत्माने अग्राद्य छे माटे ते निश्चयथी अदत्तादानविरमण व्रत कहियें. इहां कोइ पूछे जे विषयनी अने कर्मनी बांछा कोण करे छे ? तेने उत्तर जे पुण्यने भेलो लेवा योग्य कहे छै ते जीव कर्मनी वांछा करे छे. जे प्रण्यना ४२ भेद छे ते चार कमेनी श्रभ प्रकृति छे एटले जे व्यव हार अटचाटान तो नथी लेता पण अंतरंग

आगमसार.

पुण्यादिकनी वांछा छे तेने निश्चय अदत्तादान लागे छे.

४ मैथन विरमणवत कहे छे. जे पुरुष परस्त्रीनो परिहार करे तथा जे स्त्री परपुरुषनो परिहार करे. इहां साधुने स्त्रीनो सर्वथा त्याग छे अने गृहस्थने परणेली स्त्री मोकली छै.पर-स्त्रीनो पचस्वाण छे ते व्यवहारथी मैथुनतं विरमण कहियें अने जे विषयना अभिलाष्तुं तथा ममता तृष्णानो त्याग,परभाव वर्णादिक परद्रव्यना स्वामित्वादिक तेनो अभोगीपणो आत्मा स्वगुण ज्ञानादिकनो भोगी है अने ए पुद्रलखंध ते अनंता जीवनी एंट छे तेने केम भोगवे ? ए रीते त्याग निश्चयथी मैथन विरमण कहियें, जेणे बाह्य विषय छांड्यो छे अने

अंतरंग छाछच छुटी नथी तो तेहने ते मैथु-नना कर्म छागे छे.

५ परिग्रह परिमाणत्रत कहे छे. परिग्रह धन-धान्य-डास-दासी-चतुष्पद-जमीन -वस्त्र आभरणनो त्याग तेमां साधुने तो सर्वथा परिग्रहनो त्याग छे तथा श्रावकने इच्छा परिमाण छे जेटछी इच्छा होय तेटलो परि-ग्रह मोकलो राखे बीजानी विरति करे ए व्यवहारथी कह्यो अने जे भाव कर्म रागद्वेष अज्ञान द्रव्य कमे ज्ञानावरणीय प्रमुख आठ कर्म अने शरीर इन्द्रियनो परिहार एटले कर्मने जाणी छांडवो ते निश्चयथी परिग्र-हनो त्याग एटले परवस्तुनी मुर्छा छांडवी जेणे मूर्छा छोडी तेणे परिग्रह छोडचोज

आगमसार.

छे एम जाणवुं.

६ दिशिपरिमाण व्रत कहे छै. तिहाँ
तिरिद्ध चार दिशी पांचमी अधो छट्टी उर्ध्व
ए छ दिश्विना क्षेत्रनो मानकरी मोकलो राखे
ते व्यवहारथी दिशिपरिमाण कहियें अने चारगतिमां भटकबुं ते कर्मनुं फल छै एम जाणी
तेथी उदासीपणो अने सिद्ध अवस्था (नो)
शुं उपादेयपणो ते निश्चय दिशिपरिमाण व्रत
कहियं.

७ भोगोपभोगपित्माण त्रत कहे छै. जै एकवार भोगववुं ते भोग अने जे वारंवार भोगववुं ते उपभोग तेनो पिर्माण करे ते व्यवहार भोगोपभोगत्रत कहियें, अने जे व्यव-हारनयें कर्मनो कर्त्ता भोक्ता जीत्र छे अने

निश्चयनये तो कर्भनो कत्तां कर्म छे. आत्मा अनादिनो परभाव भोगी थयो छै तैथी पर-भावग्राहक अने परभावरक्षक थयो एटले आ-त्मानी ज्ञायकता, ग्राहकता, भोग्यता, रक्षकता बीगड़े कर्त्ता पणो बीगडचो तेवारे परभाव कर्त्ता थयो तेथी परभाव रंगीपणें आठ क-र्मनो कर्त्ता थयो छै पण सत्तार्ये तो स्वभावनो कत्ती छे पण उपकरण अवराणा तेथी स्वकार्य करी शकतो नथी। विभावने करे छै, अज्ञान-पणे जीवनो उपयोग मत्यो है. पोताना ज्ञाना-दिक गुणनो कर्त्ता भोक्ता छे एहवो स्वरूपा-नुयायी परिणाम ते निश्चयभोगोपभोगत्रत त्याग जाणवो.

८ अनर्थदण्डविरमणत्रत कहे छे. काम्

आगमसार.

विना जीवनो वध करवोः पारका वास्ते आ-रंभ प्रमुख करवानी आज्ञा प्रमुख आपवी ते व्यवहार अनर्थदंड अने ग्रुभाग्रुभ कर्म ते मिथ्यात्व अविरति कषाय योगथी वंधाय छे तेने जीव आपणा करी जाणे ए निश्चयथी अनर्थदंड.

९ सामायिक व्रत कहे छे. जे मन वचन कायाने आरंभथी टालीने तेने निरारंभपणे वर्त्तावे ते व्यवहार सामायिक जाणवो. अने जे जीव ज्ञान, दर्शन, चारित्र गुण विचारे सर्व जीव सत्ता गुण एकसमान जाणी सर्व स्युं समतापरिणाम ते निश्चय समतारूप सामा-यिक कहियें.

१० देशावगाशिक व्रत कहे छे. जे मन

वचन काय योग एक ठोर करी एकस्थानकें बेसी धर्म ध्यान करवो ते व्यवहार देशावगा- शिक किहियें अने जे श्रुतज्ञाने करी छ द्रव्य ओठखीने पांच द्रव्यनो त्याग करे अने ज्ञान- वंत जीवने ध्यावे ते निश्चय देशावगाशिक व्रत किहियें.

११ पौषध त्रत कहे छे. जे चार पहोर अथवा आठ पहोर सुधी समता परिणामें सावद्य छोडी निरारंभपणे सझायध्यानमां प्र-वर्ते ते व्यवहार पोशह कहिये अने पोताना जीवने ज्ञान ध्यानथी पोषाने पुष्ट करे ते निश्च-यथी पौषध त्रत कहियें. जीवने पोताना स्य-गुणे करी पोषीजे तेणे पौषध कहियें.

१२ अतिथिसंविभाग व्रत कहे छे. जे

आगमसार.

पोशहने पारणे अथवा सदा सर्वदा साधने तथा जैनधर्मिश्रावकने पोतानी शक्ति प्रमाणे दान देवुं ते व्यवहार अतिथिसंविभाग कहियें अने पोताना जीवने अथवा शिष्यने ज्ञाननं दान ते भणवं, भणाववं, स्रुणवं स्रुणाववं, ते निश्चयथी अतिथिसंभाग व्रत कहियें एटले श्रावकना बार व्रत कह्यां ते समिकत सहित जे निश्चय तथा व्यवहारथी बार व्रत धारे ते जीवने पांचमे गुणठाणे देशविरति श्रावक कहियें देश केंद्रतां देशथकी थोडीशी व्रति-पणो है मारे अने यतिने सर्वथी व्रतिपणो छे तेथी पांच महात्रत छे. साधने पांच महा-त्रतमां सर्वे त्रत आच्यां. ए निश्चय त्यागरूप ज्ञान ध्यान संवर निर्क्करामां थिरताना परि-

१४५

णाम ते निश्रय चारित्र तेना एक उत्सर्ग बीजो अपवाद ए वे मार्ग छे तेमां जे उत्कृष्ट तीक्ष्ण परिणाम ते उत्सर्ग राखवाने कारण-रूप ते अपवाद-उक्तंच ॥ " संघरणंमि अ-सन्द्रं. दुन्नवि गिन्ह तदेतयाणहियं ॥ आउर दिइं तेणं. ते चेवहीयं असंघरणे '' ॥ १ ॥ ष्टले ज्यां सुधी साधक भावने वाधक न पहे त्यां सुधी जेहनी ना कही ते आदरवो नहीं अने जो साधक परिणाम रहेता न दीठा तेवारे जेहनी ना ते आचरे तेने अपवाद मार्ग कहियें. जे आत्मगुण राखवाने करवो ते अपवाद अने गुणीने रागे भक्तियें करवी ते प्रशस्त ए वे तो साधन छे अने जे औदिय-कने अखमवाथी करवुं ते अतिचार छै तथा

आगमसार.

सवलो अने औदयिक माटे,आसक्तपणे करबुं ते पडिवाइ छे ते मध्ये अपवाद मार्ग ते परि-णाम दृढ रहे तेम आज्ञायें करवो.

हवे चार ध्यान कहे छै. १ आर्तध्यान. २ रौद्रध्यान. ३ धर्मध्यान, ४ शुक्रध्यान. तिहां पहेला वे ध्यान ते अशुभ कहियें अने पाछला वे ध्यान ते शुभ छै. जे एक ध्येयने विषे अंतर् मुहूर्त चित्तनो उपयोगनो तन्पय एकाग्रपणे थीर रहेवो ते ध्यान अने केवलीने योगनो रोकवो ते ध्यान उक्तंच: अंतो मुह-त्ता मित्ता चित्ताबत्थाणमेग वध्धुर्मिम, छउमत्थाणं झाणं, जोगनिरोहो जिणाणंतु. तिहां मनमां आहट्ट दोहट्टना परिणाम ते आ-र्तध्यान कहियें तेना चार पाया छे. १ भाइ,

१८७

मित्र, सज्जन, माता, पिता, स्त्री, पुत्र, धन, प्रमुख इष्ट वस्तुनो वियोग थयाथी विलाप करे ते पहेली इष्ट वियोगनामा आर्तध्यान तथा २ अनिष्ट जे भुंडां दुःखनां कारण, दुश्मन दरिद्रीपणो, तथा कुपुत्रादि मलवाथी मनमां दुःख चिंता उपजे ते अनिष्ट संयोग नाम आर्तध्यान. ३ शरीरमां रोग उपना थका दु:ख करे, चिंता घणी करे ते 'रोगचिं-तानाम आर्तध्यान. ४ मनमां आगळना वख-तनो शोच करे जे आ वर्षमां आ काम करशुं, आवता वर्षमां अमुक काम करशुं तो अमुक ह्याभ थरो अथवा दान बीहर तपनुं फहर मांगे जे आ भवमां तप कीधो छे माटे आवते भवें इंद्र चक्रवर्तिनी पदवी मले पहवी आगला

आगमसार.

भवनी वांच्छा ते अग्रशोचना परिणाम उपजे अथवा नियाणानो करवो ते निदान आर्त-ध्यान कहीये, ए धर्म करणीनां फलनुं नियाणुं समिकती न करे. ए आर्तध्याननो चोथो पायो जाणवो. ए आर्तध्यानना चार भेद कहा ए तिर्यंच गितना कारण छे. ए ध्यानना परिणाम ते पांचमा अथवा छहा गुण-ठाणा सुधी होय.

२ जे कटोर परिणामनुं चितवन ते रौ-द्रध्यानः तेना चार भेद छे. ? जीवहिंसा क-रीने हर्ष पामे अथवा वीजो कोइ हिंसा क-रतो होय तेने देखी खुशी थाय अथवा युद्धनी अनुमोदना करे ते हिंसानुबंधी रौद्र-ध्यानः २ जूटुं बोल्लीनं मनमां हर्ष पामे के

१४९

जुओ में केवो कपट केळव्यो. मारा जुटाप-णानी खबर कोइने पड़ी नहीं, एवो मुषावाद रूपपरिणाम ते मृषानुबंधी रौद्रध्यान. ३ चोरी करी अथवा ठगाइ करी मनमां खुशी थाय के मारा जेवो जोरावर कोण छे, हुं पारको माल खाऊं छं एवो। परिणाम ते चौरानुबंधि रौद्रध्यानः ४ परिग्रह धन धान्य परिवार घणो वधवानी लालच होय ते धन अथवा इदंबने माटे गमे तेवुं पाप करे अथवा घणो परिग्रह मिल्याथी अहंकार करे ते परिग्रहरक्ष-णातुबंधी रौद्रध्यान. ए रौद्रध्यानना चार भेद कहा। ए ध्यान नरक गति पमाडवाने कारण छे. महा अञ्चभकर्भनुं कारण छे. ए प्रांतमा गुणवाणा सुधी छे अने छहे गुणवाणे

आगमसार.

पण एक हिंसानुबंधीरौद्रव्यानना परिणाम कोइक जीवने होय.

हवे धर्मध्यान कहे छे. जे व्यवहार कि-यारूप ते कारण धर्म तथा श्रुतज्ञान अने चा-रित्र ए उपादानपणे साधन धर्म तथा रतन-त्रयी भेदपणे ते उपादान शृद्ध व्यवहार उत्स-र्गाऽनुयायी ते अपवाद धर्म जाणवो अने अ-भेद रत्नत्रयी ते साधन शुद्ध निश्रयनयें उ-त्सर्ग धर्भ अने (धम्मो बत्ध सहावो) जे वस्तुनो सत्तागत शुद्ध पारिणामिक स्वगुण प्रदृति कर्त्रादिक अनंतानंद रूप सिद्धावस्थायें रह्यो ते एवंभृत उत्सर्ग उपादान शुद्धधर्म, ते धर्मनुं भासन रमण एकाग्रपणे चितन तन्मय-मानो उपयोग एकत्वनो चितववो ते धर्म ध्यान कहियें. तेना पाया चार छे ते कहे छे.

? आज्ञाविचयधर्मध्यान ते जे वीतराग देवनी आज्ञा साची करी सद्दे एटले भगवंते छ द्रव्यनुं स्वरूप नय प्रमाण निक्षेपा सहित सिद्ध स्वरूप, निगोद स्वरूप जे कह्या तेम सद्दे, वीतरागनी आज्ञा नित्य अनित्य स्या-द्वादपणे निश्चय व्यहारपणे माने सद्दे ते आज्ञा प्रमाणे यथार्थ उपयोग भासन थयो तेने हर्षे करी ते उपयोग मध्ये निर्धार, भासन, रमण अनुभवता, एकता, तन्मयपणो ते आज्ञाविचय धर्मध्यान कहियें.

२ अपायविचयधर्मध्यान ते जीवमां अ-शुद्धपणे कर्मना योगथी संसारी अवस्थामां अमेक अपाय कहेतां दूषण छे ते अज्ञान,

आगमसार.

राग, द्वेष, कषाय, आस्रव ए मारा नथी. हुं एथकी न्यारो छं. हुं अनंतज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्यमयी, शुद्ध, बुद्ध, अविनाशी छुं. अज, अनादि, अनंत, अक्षर, अनक्षर, अचल, अकल, अमल, अगम्य, अनामी, अरूपी, अकम्मी, अवंधक, अनुदय, अनु-दीरक, अयोगी अभोगी, अभेदी, अवेदी, अछेदी, अखेदी, अकषायी, असखाइ, अले-शी, अश्वरीरी, अणाहारी, अव्याबाध, अन-वगाही, अगुरुलघु, अपरिणामी, अतीन्द्रिय, अप्राणी, अयोनि, असंसारी, अमर, अपर, अपरंपार, अव्यापी, अनाश्रित, अकंप, अ-विरुद्ध, अनाश्रव, अलख, अशोकी, असंगी, लोकालोकज्ञायक, एवो शुद्ध चिदानंद मारो

जीव छै, एहवो एकायतारूप ध्यान ते अपा-यविचयधर्मध्यान जाणवो

३ विपाकविचय धर्मध्यान कहे छे. जे एइवो जीव छै तोपण कर्मवर्शे दःखी छै ते कर्मनो विषाक चिंतवे जे जीवनो ज्ञानगुण ते बानावरणीय कर्में दाव्यों छे अने दर्शना-बरणीय कर्में दर्शनगुण दाब्यो छे, एम आठ कमें जीवना आठ गुण दाब्या छै एटले आ संसारमां भमतां थकां जीवने जे सुखदःख छे ते सर्व कर्मनां कीथां छे. माटे सुख उपने रा-चवुं नहीं अने दु:ख उपने दिलगीर थवुं नहीं. कर्म स्वरूपनी प्रकृति, स्थिति, रस, अने प्रदेशनो बंध, उदय, उदीरणा, तथा सत्ता, ्षितवन एकाग्रता परिणाम ते विपाकविचय

आगमसार.

धर्मध्यान.

४ संस्थानविचयधर्मध्यान कहे छे. ते चउद राजमान लोकतं स्वरूप विचारे जे ए लोक ते चंडदराज ऊंचो छे ते मध्ये सातराज अधोलोक छे. विचमां अहारसो योजन मनुष्य क्षेत्र त्रिछो लोक छे ते ऊपर कांइक ऊणो मातराज ऊर्ध्वलोक है तेमां सर्व वैमानिक देवता वसे छे अने ऊपरें सिद्ध शिला सिद्ध क्षेत्र छै. ए रीते लोकतं प्रमाण छै. ए लोकतं संस्थान वैशाख छे. अनंतो काल आपणा जीवें संसारमां भमतां सर्व लोकने जन्म मरण करी फरस्यो छै, एवं जे लोक स्वरूप लोकने विषे पंचास्तिकायनं अवस्थान परिणमन द्रव्य मध्ये गुणपर्यायतुं अवस्थान

तेनो जे एकाग्रताये तन्मयर्चितवन परिणाम
एहवुं जे ध्यान ते संस्थान विचय धर्मध्यान
कहियें. ए धर्मध्यानना चार पाया कह्या. ए
धर्मध्यान चोथा गुणटाणाथी मांडीने सातमा
गुणटाणा सुधी छे.

हवे शुक्रध्यान कहे छे. शुक्क केहतां नि-मेल, शुद्ध, पर आलंबन विना आत्माना स्वरूपने तन्मयपणे ध्यावे एहवुं ध्यान तेने शुक्रध्यान कहियें. तेहना पाया चार छे ते कहे छे.

? पृथक्तवितर्कसमिविचार-ते पृथक्तव केहतां जीवयो अजीव जूदा करवा, स्वभाव विभाव तेने जूदा पृथक्पणे वहेंचण करवी स्वरूपने विषे पण द्रव्य तथा पर्यायनो पृथक्-

आगमसार.

पणे ध्यान करी, पर्याय ते गुणमां संक्रमांवे अने गुण ते पर्यायमां संक्रमण करे ए रीते स्वधमने विषे धर्मातरभेद ते पृथक्त्व कहियें अने तेनो वितर्क ते जे श्चतज्ञाने स्थित उपयोग अने समिवचार ते सिवकल्पोपयोग एटले एक चिंतन्या पछी बीजो चिंतववो तेने विचार कहियें एटले निर्मल विकल्प सिहत पोतानी सत्ताने ध्यावे ते पृथक्त्व वितर्कसम विचार पेहेलो पायो ए आठमा गुणटाणाधी मांडी अग्यारमा गुणटाणा सुधी है.

२ एकत्व वितर्कअपविचार नामा बीजो पायो कहे छे जे जीव आपणा गुणपर्यायनी एकता करी ध्यावे ते आवी रीते के जीवना गुणपर्याय अने जीव ते एकज छे, अने महारो

१५७

जीव सिद्धस्वरूप एकज छै एवो एकत्व स्व-रूप तन्मयपणे अनेता आत्म धर्मनो एकत्वपणे ध्यानवितर्क केहतां श्रुतज्ञानावस्रंबीपणे अने अप्रविचार केहतां विकल्प रहित दर्शन ज्ञाननो समयांतरें कारणता विना रत्नत्रयीनो एक समयी कारण कार्यतापणे जे ध्यान वीर्य उपयोगनी एकाग्रता ते एकत्ववितर्क अप-विचार जाणवो. ए पायो बारमा गुणठाणे ध्यावे. ए वेहु पायामां श्रुतज्ञानावलंबनीपणो है. पण अवधि मनःपीयव ज्ञानोपयोगें वर्तता जीव कोइ ध्यान करी सके नहीं, ए वे ज्ञान पराजयायी छे. माटे ए ध्यानथी घनघातियां चार कर्म खपावे. निर्मल केवल ज्ञान पामे पर्छे तेसें ग्रणटाणे ध्यानंतरीकापणे वर्त्ते छे. तेर-

आगमसार.

माना अंते अने चउदमे गुणटाणे वाकीना वे पाया ध्यावें

३ सूक्ष्मिक्रया अप्रतिपति पायो कहे छे. ते सूक्ष्म मन, वचन कायाना योग रुंघे, शै-छेशी करण करी अयोगी थाय ते जे अप्रति-पाति निर्मलवीर्य अचलतारूप परिणाम ते सूक्ष्मिक्रयाअप्रतिपाति ध्यान जाणवुं, इहां स-त्ताये ८५ प्रकृति रही हती ते मध्ये ७२ खपावे.

४ उच्छिन्निक्रयानुष्टत्ति पायो कहे छे. जे योग निरुंध कीधा पछे तेर प्रकृति खपावे, अकर्मा थाय, सर्व क्रियाथी रहित थाय ते, सम्रुच्छित्र क्रियानिष्टत्ति शुक्रध्यान कहियें ए ध्यान ध्यावतां शेष, दल्ल, खरणरूप क्रिया

१५९

उच्छेदे. अवगाहना देहमानमांथी त्रीजो भाग घटाडे, शरीर मुकी इहांथी सातराज ऊपर लोकने अंते जाय, सिद्ध थाय. इहां शिष्य पूछे जे चौदमे गुणठाणे तो अक्रिय छे. तो सात राज उंचो गयो ए क्रिया केम करे छै ? तेने उत्तर जे सिद्ध तो अक्रिय छै. परंत पूर्व प्रेरणार्ये तुंबीने दृष्टान्ते जीवमां चाळवानो गुण छे. धर्मास्तिकायमध्ये प्रेरणा गुण छे. तेथी कर्मरहित जीव मोक्षे जतां लोकने अंते जइ रहे. इहां कोइ पूछे जे आगळ उंचो अ-लोक छै तिहां किम जातो नथी ? तेने उत्तर जे आगल धर्मास्तिकाय नथी माटे न जाय. वली कोइ पृछे जे तो अधोगतियें अथवा तिरच्छी गतियें केम नथी जातो ? तेने

आगमसार.

उत्तर जे कर्मना भारथी रहित थयो, इछ्बो थयो, माटे नीचो तथा डाबो जिमणो न जाय, कारण के प्रेरक कोइ नथी तथा कंपे नहीं केमके अक्रिय छे माटे तथा कोइ पूछे जे सिद्धने कर्म केम लागता नथी ? तेने कहे छे जे कर्म तो जीवने अज्ञानथी तथा योगथी लोग छे, ते सिद्धना जीवने अज्ञान तथा योग नथी, माटे कर्म लागे नही. ए चार ध्याननो अधिकार कहां।

हवे वली बीजा चार ध्यान कहे छै. १ पदस्थ, २ पिंडस्थ, ३ रूपस्थ, ४ रूपातीत. तेमां पहेलुं पदस्थ ध्यान कहे छे. जे अरि-हंतादीक पांच परमेष्ठीना गुण संभारे, तेनी चित्तमां ध्यान करे ते पदस्थध्यानः २ पिं

१६१

इस्थ केहतां शरीरमां रह्यो जे आपणी जीव तेमां अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधपणाना ग्रण सर्व छे एहवो जे ध्यान ते पिंड कहेतां जीव द्रव्य अथवा आकार अथवा स्थापना तेन अवलंबन पामी गुणीना गुण मध्ये एकत्वता उपयोग करवो ते पिंडस्थ ध्यान. ३ रूपमां रह्यो थको पण ए मारो अरूपी अनंत गुणी छै, जे वस्तुनो स्वरूप अतिशयावलंबी थया पछे आत्मानुं रूप एक-तापणो एहवो जे ध्यान ते रूपस्थध्यान. ए त्रण ध्यान धर्म ध्यानमां गणवां. ४ निरंजन. निर्मल, संकल्पविकल्प रहित अभेद एक शुद्ध सत्तारूप चिदानंद तत्त्वामृत, असंग, अलंड, अनंतग्रुण पर्यायरूप, आत्मस्वरूपतुं

आगमसार.

ध्यान ते रूपातीत ध्यान जाणवुं. इहां मार्ग-णागुणठाणा नयममाण मति आदिक ज्ञान क्षयोपञ्चमभाव सर्व छांडवा योग्य थया. एक सिद्धना मूल गुणने ध्यावे ते रूपातीत ध्यान जाणवो एटले मोक्षनुं कारण जे ध्यान ते कह्युं.

हवे भावना कहे छै. तेमां धर्म ध्याननी चार भावना कहे छै. ? मैत्री भावना ते सर्व जीव साथे मित्रतानो भाव चिंतववो, सर्वनुं भछुं चाह्र्वुं पण कोइनुं माठुं चिंतवबुं नहीं सर्व जीव ऊपर हित बुद्धि राख्वी ते मैत्री भावना. २ गुणवंत अने ज्ञानादिक गुण ऊपरें राग जे गुणी श्री अरिहंतादिकनो

१६३

योग मिल्ये जे अनंत गुण मोक्षना कारण तस्वभोगी तस्वविलासी एवा अद्भत प्रभुजी अहो प्रभ्रजी अहो प्रभ्रजीनी उपकारता अहो प्रभूनी निःसंगता एहवो जे परिणाम ते अ-दुञ्जतता वली दुःखे करी मोहाधीन मोहमयी पुद्रगल रंगी पराधीन मने एहवा परमात्मा प्रभ अथवा यथार्थ वादी ग्रह तथा स्याद्वाद धर्मनो योग मिल्यो, आज मुजने चिंताम-णिनी कोडी मिलि आज माहरा मननो मनोरथ सफल थयो, एहवी आश्चर्यता तथा वली रखे मने एहवा कारणनो विरह पडे एइवो कायरता परिणाम ते बीजी प्रमोदभा-वना. ३ जे धर्मवंत ऊपर राग अने मिथ्या-ऊपर राग नहीं तेम

नही कारण के हिंसक ऊपरें पण उत्तम जी-वने करुणा ऊपजे. जो उपदेश थकी सारा मार्गे आवे तो तेने शुद्ध मार्गे आणवो, कदा-चित मार्गे न आवे तो पण द्वेष न राखवो केमके ते अजाण छे एम समजवुं एहवा जे प-रिणाम ते मध्यस्थ भावना. ४ सर्व जीवने पोताने तस्य जाणी दया पाले. कोइने हणे नहीं तथा जे दुःखी अथवा धर्महीन तेना जीव उपर करुणा तेना दःख टाळवानो परि-णाम तथा धर्महीन जीव देखीने एवो चिंतवे जे ए जीव किवारें धर्म पामग्ने, यथार्थ आत्म-साधन पामी स्वरूप धर्मने किवारें (क्यारे) अवलंबशे एवी परिणाम ते चोथी करुणा केइतां दया भावना. ए चार भावना कही.

आगमसार.

? हवे बार भावना कहे छै. शरीर. क्रदंब, धन, परिवार सर्व विनाशी छे. जीवनो मूल धर्म अविनाशी छे. एम चिंतवबुं ते प-हेळी अनित्य भावनाः २ संसारमां मरण समये जीवने शरण राखनार कोइ नथी. एक धर्मनो शरण छे एवं चितववुं ते बीजी अशरण भावना ३ मारा जीवे संसारमां भ-मतां सर्वे भव कीथा छे ए संसारथी हुं के वारें छटीश, ए संसार मारो नथी, हं मोक्ष-मयी छुं एम विचारवं ते त्रीजी संसार भा-वना ४ ए माहरो जीव एकलो छै. एकलो आव्यो, एकलो जशे, पोतानां करेलां कर्म एकलो भोगवशे एम चिंतवबुं ते चोथी एकत्व भावना ५ आ संसारमां कोइ कोइनो नथी

आगमसार.

एम चितवबुं ते पांचमी अन्यत्व भावना ६ आ शरीर अपवित्र मलमूत्रनी खाण छे, रो-ग-जराथी भरचो छे, ए शरीरथी हुं न्यारो हुं, एम चिंतववो ते छद्दी अशुचि भावना. ७ रागद्वेष, अज्ञान, मिध्यात्व प्रमुख सर्व आस्रव छे, एम चिंतववं ते सातमी आस्रव भावना. ८ ज्ञानध्यानमां वर्त्ततो जीव नवां कर्म बांधे नहीं ते आठमी संवर भावना. ९ ज्ञान सहित क्रिया ते निर्क्तरानं कारण छे, ते नवमी निर्क्तरा भावना. १० चउदराज लो-कर्नुं स्वरूप विचार्त्रं ते दशमी लोकस्वरूप भावना. ११ संसारमां भमता जीवने समकित ज्ञाननी प्राप्ति पामवी (थवी) दुर्लभ छे, अथवा समिकत पाम्यो पण चारित्र सर्वे विरति प-

रिणाम रूप धर्म पामवो दुर्लभ छै ते अग्या-रमी बोधिदुर्लभ भावना. १२ धर्मना कहेण-हार (कथक) गुरु तथा शुद्ध आगमनुं सां-भलवुं एहवी जोगवाइ मलवि दोहेली छै ते बारमी धर्मदुर्लभ भावना. एटले बार भावना कही. ए चारित्रनुं स्वरूप संपूर्ण कहां.

एवो समिकत सहित ज्ञानचारित्रनुं ते कारण छे, तेना उपर भव्य प्राणीयें उद्यम करवो. अने जो तेवुं ज्ञानचारित्र नही पले तोपण श्रेणिक राजानी पेरे सदद्दणा शुद्ध राखजो. जो समिकत शुद्ध छे तो मोक्ष नजी-क छे. समिकत विना ज्ञानध्यान क्रिया सर्व वि:फल छे एम आगममां कह्यो छे.

आगमसार.

जंसकं तं किरइ, अहवा न सकेइ तहय सद्दइ । सद्द्रमाणो जीवो, पावइ अयरामरं ठाणं । १॥

अर्थ-रे जीव ? तुं करी शके तो कर अने जो न करी शके तोपण जेवी वीतरागं धर्म कह्यो ते रीते सददने. सददणा शुद्ध रा-खनार जीव अजरामर स्थानक ते मोक्ष पद-वी पामे.

हवे समिकतिनो मार्ग कहे छै. १ जीव, २ अजीव, ३ पुण्य, ४ पाप, ५ आस्रव, ६ संवर, ७ निर्ज्जरा, ८ वंध, ९ मोक्ष. ए नव तस्व छै. तेमां मोक्षनो कर्चा जीव छै, अने संवर तथा निर्ज्जरा ए वे छे, ते मोक्षना उपा-दानकारण छै, देवगुरु उपकारी ते मोक्षना निमित्त कारण छै एटले जीव संवर निर्ज्जरा

मोक्ष ए चार उपादेय छे अने बीजा पांच हेय छे एहवी परिणाम तेने समिकत ज्ञान कहियें ते समिकत ज्ञान भछोज थायः तिहां अनुयोगद्वारमां कहाो छे. नायम्मि गिन्हियच्वे, । अगिन्हियच्वे अ इच्छ अत्थंमि ॥ जहनमेवइयजो, सो उवएसो नओ ताम ।१।

अर्थः—ज्ञानथी छ द्रव्य जाणीने लेवा योग्य होय ते ले अने छांडवा योग्य छांडे एवो जे उपदेश ते नय उपदेश जाणवो हवे समिकतनी दश रुचि कहे छे.

? निसर्ग रुचि ते निश्चयनये करी जीवादि नव तत्त्व जाणे, आश्रव त्यागे, संवर आदरे, वीतरागना कह्या भाव जे छ द्रव्य

क्षेत्र काल भाव सहित जाणे, नामादि चार निक्षेपा पोतानी बुद्धिथी जाणे, सददे, वीत-रागना भाष्या भाव ते सत्य एवी सददणा होय.

२ उपदेश रुचि नव तत्त्व तथा छ द्र-व्यने गुरु उपदेशयी जाणी सद्दहे ते उपदेश रुचिः

३ आज्ञा रुचि ते रागद्वेष मोह जेमना गया छे, अज्ञान मिटयुं छे एहवा अरिहंत देव तेणे जे आज्ञा कही तेने माने सद्दहे ते आज्ञारुचि.

४ सूत्ररुचि १ आचारांग, २ स्रयग-ढांग, ३ टाणांग, ४ समवायांग, ६ भगवती, ६ ज्ञाताधर्म कथा, ७ ज्यासकदशांग, ८ अं-

205

तगडदशांग, ९ अनुत्तरोववाइ दशांग, १० प्रश्नव्याकरण, ११ विपाक, ए इंग्यार अंग तथा बारमुं अंग दृष्टिवाद जेमां चउद पूर्व इतां ते हमणां विच्छेद गयां छे. तथा १ उववाइ, २ रायपसेणी, ३ जीवाभिगम, ४ पन्नवणा, ५ जंबद्वीपपन्नति, ६ चंदपन्नति, ७ सरपन्नति, ८ कप्पीआ, ९ कप्पवडंसिया. १० पुष्फिआ, ११ पुष्फचुलीआ, १२ व-निहदिशा, ए बार उपांग जाणवां. अने १ व्यवहारस्त्र, २ बृहत्कल्प, ३ दशाश्रुतस्कंध, ४ निशीथ. ५ महानिशीथ, ६ जितकल्प, ए छ छेदग्रंथ तथा १ चडसरण, २ संथारापय-न्ना, ३ तंदुलवेयालीय, ४ चंदाविजय, ५ दे-विंदशुओ, ७ वीरशुओ, ८ गच्छाचार, ९

ऑगमसार.

जोतिकरंड, १० आयुः पचलाण, ए दश पयमानां नाम तथा १ आवश्यक, २ दश-वैकालिक, ३ उत्तराध्ययन, ४ ओघनियुक्ति, ए चार मूलसूत्र तथा १ नंदि, २ अनुयोग-द्वार, ए पीस्तालीस आगम ते मूलसूत्र तथा २ नियुक्ति, ३ भाष्य, ४ चूणि, ५ टीका, ए पंचांगीना वचन जे जीव माने तथा आगम सांभलवानी तथा भणवानी जेने घणी चा-हना होय ते सुत्रहचि जाणवी.

५ जे जीव गुरुमुखथी एक पदनो अर्थ सांभलीने अनेक पद सद्दहे ते बीजरुचि.

६ अभिगमरुचि ते जे सूत्र सिद्धान्त अर्थ सिंहत जाणे अने अर्थ विचार सीमल-वानी घणी चाइना होय ते अभिगमरुचि.

१७३

७ जे छ द्रव्यना गुण पर्यायने चार प्रमाण तथा सात नये करी जाणे ते विस्ता-ररुचि

८ कियारुचि ते दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप, विनय, समिति, गुप्ति बाह्य किया सहित आत्मधर्म साथे जेने रुचि घणी होय ते कि-यारुचि-

९ संक्षेपरुचि ते जे अर्थने ज्ञानमां थोडो कहे थके घणो जाणीने कुमतिमां पडे निह, जिनमतनी पतीति माने ते संक्षेपरुचि.

१० जे पांच अस्तिकायमुं स्वरूप जाणे श्रुतज्ञानमो स्वभाव अंतरंग सत्ता सद्दहे ते धर्मरुचिः

इवे समकितना आउ गुण कहे छे. १

आगमसार.

नि:शंका ते जिनागम मध्ये सुक्ष्म अर्थ कहा। ते साचा सद्दहे तेमां संदेह आणे नही. तथा सात भयथी पण डरे नहि. २ निकंखा ग्रण ते पुण्यरूप फलनी चाहना न राखे. केमके जिहां इच्छा तिहां कर्मनो बंध छै मोटे. ३ निव्वित्तिगिच्छागुण ते शुभ अशुभ पुद्रस्र एक सरिखा छे तेमां प्रण्यना उदयथी शुभ-योग मिल्या खुशी थइ अहंकार न करवो तथा पापना उदयथी दःखसंयोग मिल्या दिलगीर थावुं नही. ४ अमृददृष्टि गुण ते जे आगममां सुक्ष्म निगोदना तथा छ द्रव्यना सक्ष्म विचार कहा। छे ते सांभलतो थको म्रंजाय नहीं, जे पोतानी धारणामां आवे ते धारी राखे अने जे धारणामां न आवे तेने

१७५

सहहे ५ उपबृंहगुण जे ए आपणा जीवमां अनंत ज्ञानादिक गुण छे ते छुपाववा नही. ग्रद्ध सत्ता जेवी छे तेवी कहेबी. राग द्वेष अज्ञान ते कर्मनी उपाधि है. जीव ए उपाधिथी न्यारो छे. ६ स्थिरीकरण गुण ते आपणा परिणाम ज्ञानध्यानमां स्थिर करवा, डगाववा नही अथवा कोइ भव्य पाणी धर्मथी पडतो होय तेने साह्य देइ उपदेश आपी स्थिर करवो. ७ वात्सल्यता ग्रुण ते जेनी साथे ज्ञान ध्यान तप पडिकमणो भेलो करता होइये अने सष्टहणा पण एकज होय ते आपणो साधर्मि भाइ छे तेनी भक्ति करवी. अथवा सर्व जीवना ज्ञानादि गुण आपणा समान छे माटे सर्व जीव ऊपर दया करवी.

आगमसार.

अथवा बीजा जीवना पण आपणा तुल्य ज्ञानादि गुण छे ते जीवने पोषवा योग्य ज्ञान ध्याननो घणो अभ्यास करावे. ८ प्रभावक गुण ते भगवंतना धर्मनी प्रभावना महिमा करवो अथवा पोताने ज्ञानादि गुण वधारवा दान, शील, तप, भाव, पूजा करी घणो महिमा करवो ए समिकतना आठ गुण.

हवे समिकतिना पांच लक्षण कहे छै. १ उपशम भाव लक्षण ते विवेकी पाणी पांचें कषाय न करे अने जो कदाचित कषाय करे तोपण तरत मनने पाछो वाले. २ आस्ता-भूषण ते भगवंतना वचन ऊपर शुद्ध प्रतीत राखें, भगवंते जेम आगममां आज्ञा करी तेम सहहे. ३ द्या भाव लक्षण ते सर्व जीव

१७७

पोताना सरीखा जाणी दया पालवी. ४ निर्वेद ते संसारथी तथा धनथी शरीरथी उदाशीपणो राखवो. ५ संवेग, ते इन्द्रियना मुख जीवं अनंति वार भोगव्या पण ते दुःखना कारण छे, एक चिदानंद मोक्षमयी अतीन्द्रिय मुखने आपणा करी जाणे. ए समिकतना पांच लक्षण कहां.

हवे छ आयतन कहे छै. १ निश्चयन कुगुरु ते भगवंतना वचनना खोटा ईअर्थ करे खोटी परुपणा करे २ व्यवहारकुगुरु ते योगी, संन्यासी, ब्राह्मण अने आचारहीन वेषधारी यति ते पण छोडवा. ३ निश्चय कुदेव ते जिणे श्रीवीतरागदेवनुं स्वरूप नथी जाण्युं, ४ स्यवहार कुदेव ते जे सरागीदेव कुद्ण, महा-

आगमसार.

देव, क्षेत्रपाल, देवी, पितर प्रमुख ते पण छोडवा. ५ निश्चयथी कुधम ते जे एकांत मार्ग बाह्य-करणी उपर राच्या छे अंतरंगज्ञान नथी ओलख्यो ते. ६ व्यवहार कुधम ते पारका अन्य दर्शनोना मत सर्व छांडवा एटले कुदेव कुगुरु तथा कुधमेंने छोडी शुद्धदेव, गुरु तथा धम सहहे ते समिकतनी सहहणा जाणवी. समिकतना लक्षण पन्नवणा सूत्रथी कहे छे.

परमत्थसंथवो वा,
स्विद्वपरमत्थ सेवणावावि ॥
वावन्न कुदंसणा,
वज्जाणाय सम्मत्तसदृहणा ॥ १ ॥
अर्थः-परमार्थ छ द्रवय नव तस्वना गुण पर्याय मोक्षनुं स्वरूप एटले जे परमार्थ सुक्ष्म

भागमसार.

१७९

अर्थ छै ते जाणवानो घणो अभ्यास परचो करे अथवा जाणवानी घणी चाहना राखे अने सुदिह कहेतां भली रीते दीटा जाण्या छै परमार्थ छ द्रव्य मोक्षमार्ग जेणे एहवा गुरुनी सेवा करे एटले ज्ञानी गुरु धारवा अने वावस्न कहेतां जिनमित यितना नाम धरावीने जे क्षेत्रपाल प्रसुखने समिकित विना माने एवा गुरुनो संग वर्जे अने कुदर्शनी जे अन्यमित तेनो संग न करे एवा जे परिणाम ते सम-कितनी सहहणा जाणवी.

विरया सावज्जाओ, कसायहीणा महन्वयधरावि॥ सम्मदिष्ठिविद्दणा, कयावि मुख्यं न पावंति॥ २॥

आगमसार.

अर्थः—जे सावद्य आरंभथी विरम्या है, क्रोधादि चार कषाय जीत्या छे अने शुद्ध पांच महात्रत पाले छे पण समकित विना है ते जीव मोक्ष पामे नहि.

हवे समिकत ते शीवस्तु छेतेविषे गाथाकहे छे.

नयभंगपमाणेहिं, जो अप्पा सायवायभावेणं जाणइ मोक्स्वसरूवं, समदिहिओ सो नेओ।३।

अर्थः—नय तथा भंगे करी तथा प्रमाणे करी जे पोताना आत्माने जाणे, ओलखे, स्याद्वाद आठ पक्षे जाणे अने एम स्याद्वादएणे मोक्ष निःकर्माऽवस्थाने पण जाणे, परवस्तुने हेय जाणे, जीवगुण उपादेय जाणे तेने सम-कीति जाणयो.

323

इवे जीवस्वरूप ध्यान करवाने गाथा कहे छै.

> अहमिको खलु सुद्धो, निम्ममओ नाणदंसणसमग्गो ॥ तम्मि ठिओ तिचत्तो, सच्वे ए ए खयं नेमि ॥ ४ ॥

अर्थः—ज्ञानी जीव एहवुं ध्यान करे के हुं एक छुं, पर पुद्रलथी न्यारो छुं, निश्चय न- येकरी शुद्ध छुं, ज्ञानदर्शन स्वरूप छुं, नि- भेल छुं, ममताथी रहित छुं, हुं मारा ग्रुणमां रह्यो छुं, चेतनागुण ते माहारी सत्ता छे, हुं मारा आत्म स्वरूपने ध्यावतो सर्व कर्म क्षय कहं छुं.

आगमसार.

निरंजणं निकल अयल,
देवअणाइ अणाइ अणंतं ॥
चेयणलख्खण सिद्धसम,
परमण्या सिवसंतं ॥ ५ ॥
अर्थ:—कर्म अंजनथी रहित निरंजन छुं,
कलंक रहित छुं, अयल केहतां पोताना स्वरूपथी किवारे चलायमान थाउं नहीं, परमदेव छुं, जेनी आदि नथी तथा जेनो अंत नथी चेतना लक्षण छुं, सिद्ध समान छुं, संतसत्ता।
सुयी छुं.

जीवादिसद्दरणं सम्मत्तं, अहिगमो नाणं ॥ तथ्येव सया रमणं, चरणं एसो हु मुख्ख पहो॥६॥ अर्थः—जीवादिक छ दुवय जेवा छै

अर्थ:—जीवादिक छ द्रव्य जेवा छे तैवा सद्दहवा ते समिकत अने छ द्रव्य जेवा

छै तेहवा गुणपर्याय सहित जाणे ते ज्ञान जा-णवुं. ते छ द्रव्य जाणीने अजीवने छांडे अने जीवना स्वगुणमां स्थिर थइने रमे ते चारित्र कहियें. ए ज्ञान दर्शन चारित्र शुद्धरत्नत्रयी ते मोक्षनो मार्ग छे माटे ए ज्ञान दर्शन चारित्र-नो घणो यत्न करवो, ए रत्नत्रयी पामीने ममाद करवो नहीं. तिहां निश्चय व्यवहारनी गाथा.

निच्छयमग्गो मुख्खो,
ववहारो पुण्णकारणो बुत्तो ॥
पढमो संवररूवो,
आसवहेउ तओ वीओ॥ ७॥
अर्थः—निश्चयनयनो मार्ग ज्ञान सत्तारूप ते मोक्षनुं कारण छे अने व्यवहार किया

आगमसार.

नय ते पुण्यनुं कारण कहारे पहेलो निश्चयं नय संवर छे अने निश्चय संवर निश्चयं नय ते एकज छे जूदा नथी. बीजो व्यवहार नय ते आस्रव नवा कर्म लेवानो हेतु छे एटले अभ पुण्य कर्मनो आस्रव थाय छे अने अधुभ व्यवहारें अधुभ कर्मनो आस्रव थाय छे. कोई पूछे जे व्यवहारनय आस्रवनुं कारण छे तो अमे व्यवहार नही आदरसुं, एक निश्चयं मार्ग आदरसुं. तेने उत्तर कहे छे.

जइ जिणमयं पवज्जह,
ता मा ववहारितत्थए मुयह ॥
एकेण विण तिथ्थं,
छिज्जइ अभेणओ तच्च ॥ ८ ॥
अर्थः—अहो भन्य माणी! जो तमने

104

जिनमतनी चाहना छे अने जो तमे जिनमतने इच्छो छो. मोक्षने चाहो छो तो निश्चयनय अने व्यवहारनय छांडशो नहि एटले बेह नय मानजो. व्यवहार नये चालजो अने मिश्रय नय सद्दहजो जो तमे व्यवहार नय इत्यापशो तो जिन शासनना तीर्थनो उच्छेट बान्ने. जेणे व्यवहार न मान्यो तेणे गुरु षंदना, जिनभक्ति, तप, पश्चख्खाण, सर्व न मान्या एम जेणे आचार जथाच्यो तेणे निमित्त कारण उथाप्यो अने निमित्त कारण विना पकलो उपादान कारण ते सिद्ध न थाय. माटे निमित्त कारणरूप व्यवहार नय जरूर मानवो अने जो एकलो व्यवहार नय मौतियें तो निश्चयनय ओछख्या विना तस्वतुं

आगमसार.

स्वरूप जाण्यं जाय नहीं माटे तस्व मोक्षमार्ग ते निश्चयनय विना पामियें नही अने तस्वज्ञान विना मोक्ष नथी एटले निश्चयनय व्यवहार नय वे मानवा. जे कारणे आगममां ज्ञान कियायी मोक्ष छे, तिहां ज्ञान-हेय उपादेयनी परीक्षा. किया जे हेय वंधकारणनो त्याग, उपादेय स्वगुण ते लेवा, थिर परिणाम रा-खवा एवं ज्ञान क्रिया ते मोक्षनं कारण छै माटे ज्ञान सहित क्रिया प्रमाण छे. ज्ञान विना क्रिया प्रण्यतं कारण छे एम निश्रय विना व्यवहार नि:फल छे अने निश्चय सहित व्य-बहार ते प्रमाण छै. तेनो दृष्टान्त-जेम सोनाना आभूषणमां उपघातु अथवा किणजो मिल्यो होय ते पण उंचा सोनाने भावें लेइ राखियें

१८७

छैयें अने जो ते किणजो तथा सोनुं जू दुं करियें तो सह कोइ सोनाने छे पण कोइ किणजो जे कुधातु ते छीये नही तेम निश्चय नय सोना समान छे माटे निश्चयनय सहित सर्व भछा छे अने निश्चयनय विना सर्व अ-छेखे माटे आगममां निश्चय व्यवहार रूप मोक्षमार्ग छे ते कहाो.

वली शरीर ऊपर मोह करे नहीं ते विषे.
चिल्रज्ञो भिज्ञो जाय खओ,
जो इहमें हु सरीरं॥
अप्पा भावे निम्मलो,
जं पावं भवतीरं॥ ९॥
अर्थः-भव्य प्राणी एम चितवे जे ए
शरीर छीजजाओ भिजजाओ, क्षय थइ जाओ,

आगमसार.

विणसी जाओ, ए म्हाहं शरीर पौद्रलिक छे परवस्तु छे ते एक दिवसे मूकवुं छे माटे रे प्राणी ! तुं आपणा आत्माने निर्मलपणे ध्यावतो संसारथी तरीने कांठो पामीश.

ए हिज अप्पा सो परमप्पा. कम्मविसेसोइ जायोअप्पा॥ इमये देवजाजुसो परमप्पा, बह तुद्धो अप्पो अप्पा ॥ १०॥ अर्थ:-अहो भव्यजीव ! एहीज आएणो आत्मा छे ते शुद्ध ब्रह्म छे पण कर्मने वश पड़्यो जन्ममरण करे छे पण ए शरीरमां जे जीव छे ते देव छे, परमात्मा छे, माटे तुमे आपणो आत्मा ध्यावो. तरण तारण जिहाज ए आपणो आत्माज छै एम श्री हेमाचार्ये

बीतरागस्तोत्रमां कहा। हे यः परात्मा परं ज्योतिः. परमः परमेष्टिनाम् ॥ आदित्यवर्ण तमसः, परस्तादामनंति यम् ॥ १ ॥ सर्वे येनोदमुल्यंत, समृत्राः क्रेशपादपाः । इत्यादि ॥ अर्थ:-परमात्मा है, परमज्योति है. पंच परमेष्टीथी पण अधिक पूज्य छे. केमके पंचपरमेष्टी तो मोक्षमार्गना देखाडनारा छै पण मोक्षमां जवावालो तो आपणो जीव छै. अज्ञा-ननो मिटावनार छे सर्व कर्म क्रेशनो खपाव-नार छै एवो आत्मा ध्यावो एहिज परम श्रेयतुं कारण छे, शुद्ध छे, परम निर्मेल छे.

आगमसार,

एहवो आत्मा उपादेय जाणी सद्दहे अने जेवो पोताथी निरवाह थाय तेवो त्याग वैरागमां प्रवर्त्ते एटले धन ते परवस्त जाणी स्रपात्रने दान आपे अने इन्द्रियना विकार ते कर्मबंधना कारण जाणी परिहरे, शीछ ँपाले, जे आहार छे ते पौद्रलिक परवस्त छे. शरीर पुष्टीनुं कारण छै, अने शरीर पुष्ट कीधाथी इंद्रियोना विषयनो पोष थाय माटे ते पर स्वभाव छे, अज्ञान संसारतुं कारण ँ छे पाटे आहारनो त्याग करवो तेने तप कहियें. तथा पूजा ते जे श्री अरिहंत देवें मोक्षमार्ग उप-देख्यो ते आपणे जाण्यो माटे आपणा उपकारी छे ते उपकारीनी वहुमान सहित भक्ति करियें. माटे श्री अरिहंत

धिदेवनी पूजा करवी. एम दान, शील, तप, पूजा, सर्व जीव अजीवनुं स्वरूप ओलख्या विना ने करवुं ते पुण्यरूप इंद्रिय सुखनुं
कारण छे अने ने जीवने उपादेय करी वांछा
विना करे ते निर्क्तरानुं कारण छे. एम दया
पण श्रीभगवती सूत्रमां सातावेदनी कर्मनुं
कारण छे. एटले सम्यक् ज्ञाननी सर्व करणी
निर्क्तरारूप छे अने ज्ञान विना सर्व करणी
वंधनुं कारण छे, माटे ज्ञाननो घणो अभ्यास
करजो ए भगवंतें सीखामण दीधी छे.

तथा ज्ञाननुं कारण श्रुतज्ञान छे तेनो घणो भाव राखजो. श्रीटाणांगमां तथा उत्तराध्ययनमां १ वाचना, २ पृच्छना, ३ परावर्तना, ४ अनुमेक्षा, ५ धर्मकथा, ए

आगमसार.

सम्माय भणवा गुणवातुं फल मोक्ष कहा है. सम्माय करवार्था ज्ञानावरणी कमें खपावे केमके वाचनाथी तीर्थधमें पवर्त्ते, महानिर्ज्जरा थाय पृछवाथी स्नत्र तथा अर्थ शुद्ध थाय, मि-ध्यात्व मोहनीय खपावे, ते जेम अर्थ विचार पूछे तेम तेम समिकत निर्मल थाय अने अतु-भिक्षा ते अर्थ विचारतां सात कर्मनी स्थिति, रस पातला करे. अनंतो संसार खपावींने पातला करे तथा श्रुतज्ञाननी आराधनाथी अज्ञान मिटे एवां फल कहां है.

माटे वांचवां तथा भणवानो घणो उद्यम करवो, केमके आज पांचमा आरामां कोइ केवलो नथी तथा मनःपर्यवज्ञानी अने अविज्ञानी पण नथी, एकमात्र श्रुतज्ञानें-आगमनो आधार छे.यतः

कहं अम्हारिसा पाणी, दुसमादोसदुसिया ॥ हा अणाहा कहं हुता, न हंतो जइ जिणागमो ॥ १ ॥ अर्थ-हे भगवंत ! अमसरिखा प्राणीनी शी गति थात जे अमें आ दुसम पंचम का-लमां अवतार लीघो. हा-इति खेदे. अमे अ-नाथ छुं. (छीए) जो जिनराजन[ा] कहेला आगम न होत तो आज श्रं थात, एटछे आज आगमनोज आधार छे माटे आगम अने आगमधर जे बहुश्रुत तेनो घणो विनय करवो. आगममां विनयतुं फल ते सांभलवुं अने सांभलवातं फल ज्ञान छे, ज्ञानतं फल मोक्ष छे, एम आगम सांभन्नी लेवा योग्य

आगमसार.

लेजो, छंडवा योग्य छोडजो, सहहणा शुद्ध राखजो, सहहणा ते मोक्षनुं मूछ छे ए इन्द्रिय सुख तो आ जीवे अनंतिवार पाम्यं छै. एहवी जाति-जन्म-योनि कोइ रही नथी जे आप-णा जीवे नहीं करी होय. ए जीवने संसारमां भगतां अनंतां पुद्रल परावर्तन थयां पण धर्मनी जोगवायीं मली नहीं तो हवे मनुष्य-भव, श्रावककुल, निरोग शरीर, पंचेंद्रिय प्रगट, बुद्धि निर्मेल, एटला संयोग मल्या वली श्री वीतरागनी वाणीना कहेनारा शुद्ध गुरुनी जोगवाइ पामीने अहो भव्यलोको ! तमे धर्मने विषे विशेष उद्यम करजो, फरिथी एवी जोगवाइ मिलवी दुर्लभ छै माटे प्रमाद करशो नहीं. ए शरीर, धन, कुटुंब, आयुष्य

१९५

सर्व चंचल है. क्षण क्षण छीजे है, माटे पांच समवाय कारण महेयां मोक्षरूप कार्य सिन्द करतुं ते पंचसमवायनां नाम कहे हैं. ? काल, २ स्वभाव,३ नियति, ४ पूर्वकृत,५ पुरुषकार, ए पांच समवाय माने ते समकीति हैं. एमां एक समवाय उथ्थापे तेहने मिथ्यात्वी कहियें एम सम्मति सूत्रमां कहां है.

कालो सहाव नियइ,पुव्वकथं पुरिसकारणे पंच॥ समवाष् सम्मत्तं, एगंते होइ मिच्छत्तं ॥ १ ॥

अर्थ:-काल लिय विना मोक्षरूप कार्य सिद्ध थाय नहीं एटले काल सर्वनुं कारण है. जे कालें जे कार्य थयानो होय ते कार्य ते कालें थाय, ए काल समयाय अंगीकार करी कहीं. इहां कोइ पूछे जे अभन्य जीव मोक्षे

आगमसार.

केम जता नथी? तेनो उत्तर जे अभव्यने काल मले पण अभव्यमां मुक्ति जवानो स्वभाव नथी तेथी मोक्षे जाय नहीं केमके काल स्वभाव ए वे कारण जोइये.तेवारें फरि पूछयुं जे भव्य जीवोमां तो मोक्षे जवानो स्वभाव छै तो सर्व भव्य केम मोक्ष जता नथी तेने उत्तर जे नियत कहेतां निश्चय समिकत गुण जागे तैवारें मोक्ष पामे एटले काल स्वभाव नियत ए त्रण कारण मान्या ते वारे फरि पूछयुं जे समिकत आदि कारण तो श्रेणिक राजाने हता तो मोक्ष केम न थयो ? तेने उत्तर जे पूर्वकृत कर्म घणां इतां अथवा प्रस्थाकार ने उद्यम करचो नही. फरी पूछयुं जे शालिभद्र प्रशुखे तो उद्यम घणो कीधो तेतुं उत्तर जे तेमना पूर्व-

आगमसार,

कृत शुभकर्म खप्यां नहतां माटे पांच समवाय मिल्या कार्यनी सिद्धि थाय, तेवारें फिर पूछ्युं जे मरुदेवा माताने तो चार कारण मिल्या पण पांचमो पुरुपाकार उद्यम कांइ कीधो नहीं तेने उत्तर जे क्षपक श्रेणि चढ-वानो शुक्क ध्यान रूप उद्यम कीधो छे माटे पांच समवाय मील्या मोक्षरूप कार्य सिद्ध थाय.

जेवारें केवलज्ञाने करी सर्व द्रव्य जेम रह्यां छे तेम देखे एटले आकाशद्रव्य लोका-लोक प्रमाण छे तेमां अलोकमां बीजुं द्रव्य कोइ नथी लोकाकाशना एकेक प्रदेशे धर्मा-स्तिकाय, अधर्मास्तिकायनो एकेक प्रदेश रह्यो छे तथा अनंता जीवना अनंता प्रदेश

आगमसार.

रह्या छै, अनंता पुद्गल परमाणुआ रह्या छै. कालनो समय सर्वत्र वर्ते छै.

हवे छ द्रव्यनी फरसना कहे छे. धर्मा-स्तिकायना एक प्रदेशे धर्मास्तिकायना छ प्रदेश फरस्या छे ते आशी रीते के चार दि-शिना चार अने पांचमो नीचे, छहो ऊपर ए छ प्रदेश फरस्या छे तथा एक मल पोतें प्रदेश एम सात प्रदेशनो संबंध छे अने धर्मा-स्तिकायना एक प्रदेशने आकाशद्रव्य तथा अधर्मास्तिकायना सात सात प्रदेश फरशे छै ते एक मूलना प्रदेशने बीजा द्रव्यनो मुलनो प्रदेश फरशे माटे सात प्रदे-शनी फरसना है अने धर्मास्कायना एक पदेशें जीव प्रद्रलना अनंता प्रदेशनी फरसना

१९९

छै अने लोकने अंते जे धर्मास्तिकायना प्रदेश छे तेने आकाश फरसनातो छए दिशीनी छे अने एकमूल प्रदेश सुद्धां सात प्रदेशनी फरशना छे अने बीजा द्रव्यनी त्रण दिशीनी फरशना छे एम सर्व द्रव्यनी फरशना छे अने आकाशर्था धर्म अधर्मनी अवगाहना सूक्ष्म छे धर्म अधर्म द्रव्यथी जीवनी अवगाहना सूक्ष्म छे जीवथी पुद्रलनी अवगाहना सूक्ष्म छे.

एम छ द्रव्यना गुण पर्याय सामान्य स्वभाव ११ छे. अने विशेष स्वभाव दश छे, तै श्रीसिद्ध भगवंत ज्ञानथी जाणे दंर्शनथी देखे. ते इग्यार सामान्य स्वभाव कहे छे. १ अस्ति स्वभाव, २ नास्ति स्वभाव, ३ नित्य

आगमसार.

स्मभाव, ४ अनित्य स्वभाव, ५ एक स्वभाव ६ अनेक स्वभाव, ७ भेट स्वभाव, ८ अभेद स्वभाव, ९ भव्य स्वभाव, १० अभव्य स्व-भाव. ११ परम स्वभाव. ए इग्यार सामान्य स्वभाव सर्वे द्रव्यमां छे. ए सामान्य उपयोग दर्शन गुणथी देखे. हवे दश विशेष स्वभाव कहे छे. १ चेतन स्वभाव, २ अचेतन स्वभाव, ३ मृति स्वभाव, ४ अमृति स्वभाव, ५ एक प्रदेश स्वभाव, ६ अनेक प्रदेश स्वभाव, ७ श्रद्ध स्वभाव, ८ अशुद्ध स्वभाव, ९ विभाव स्वभाव, १० उपचरित स्वभाव. ए दश वि-शेष स्वभाव छे.ते कोइक द्रव्यमां कोइक स्वभाव छै. कोइक द्रव्यमां कोइक स्वभाव नथी, ए ज्ञानथी जाणे पटले सिद्ध भगवान् लोकालोक

आगमसार.

२०१

सर्व ज्ञानोपयोगथी जाणी रह्या छै. दर्शनोपयो-गथी देखी रह्या छे एहवा अनंत गुणी अरूपी सिद्ध भगवान छे ते समान पोताना आत्माने जाणे उपादेय करी ध्यावे ते समकित जाणवो.

। दोहा ॥

अष्ट कर्म वन दाहके, भए सिद्ध जिनचन्द ।
ता सम जो अप्पा गणे, वंदे ताको इंद ॥१॥
कर्मरोग औषधसमी, ज्ञान सुधारस दृष्टि ।
शिव सुखामृत सरोवरी, जय २ सम्यक् दृष्टि॥२
एहिज सद्गुरु शीख छे, एहिज शिवपुर माग ।
हेजो निज ज्ञानादि गुण, करजो परगुण त्याग॥३
ज्ञान दृक्ष सेवो भविक, चारित्र समिकत मूल।
अमर अगम पद फल लहो, जिनवर पदवी फूल ४

२०२ आगमसार,

संवत सत्तर छिइत्तरे, मनशुद्ध फागुण मास। मोटे कोट मरोटमे, वसतां सुख चोमास ॥५॥ सुविहित खरतर गच्छ सुथिर, युगवर जिन चंद

पुण्य प्रधान प्रधान गुण, पाठक गुण पंडूर ॥६॥ तास शिष्य पाटक भवर, सुमितसार गुणवंत। सकल शास्त्र ज्ञायक गुणी, साधुरंग जसर्वत ॥७ तास शिष्य पाठक विवुध, जिनमत परमत जाण। भविक कमल प्रतिबोधवा, राजसार गुरुभाण॥८ ज्ञानधर्म पाटक पवर, शमदम गुणे अगाह। राजहंस गुरु गुरु शक्ति, सहुजग करे सराह॥९ तास शिष्य आगमरुचि, जैनवर्मको दास । देवचद आनंदमें, कीनो ग्रंथ प्रकाश ॥१०॥ आगमसारोद्धार एह, शाकृत संस्कृत रूप। <mark>प्रंथ कियो देवचंदम्रुनि, ज्ञानामृत रसकूप॥११॥</mark>

आगमसार.

२०३

करचो इहां सहाय अति, दुर्गदास शुभचित्त । समजावन निज मित्रकं, कीनो ग्रंथ पवित्ता। १२ धर्ममित्र जिन धर्म रत, भविजन समकितवंत। श्रद्ध अमरपद ओलखण, ग्रंथ कियो गुणवंत॥१३ तत्त्वज्ञानमय ग्रंथ यह, जोवे बालाबोध । निजपर सत्ता सब लिखे, श्रोता लहे पबोध॥१४ ता कारण देवचंदम्रनि, कीनो भाषा ग्रंथ। भणशे गुणशे जे भविक, छहेशे ते शिवपंथ॥१५ कथक शुद्ध श्रोतारुचि. मिलजो एह संयोग । तत्त्वज्ञान श्रद्धा सहित,वलीय काय निरोग॥१६ परमागमसं राचजो, लहेशो परमानंद । धर्मराग गुरु धर्मसों, धरजो ए सुखद्द ॥१७॥

ग्रंथ कियो मनरंगसो, सितपख फागुणमास । भोमवार अरु तीज तिथि, सफल फली मन आस ॥१८॥

गुणस्थानकविचार.

हवे गुणठाणानो विचार लखीई है.
प्रथम मिथ्यात्वगुणठाणुं २, सास्वादनगुणठाणुं २, सास्वादनगुणठाणुं २, मिश्रगुणठाणुं ३, अविरत समिकत गुणठाणुं ४, देशिवरित गुणठाणुं ५, प्रमत्तगुणठाणुं ६, अप्रमत्तगुणठाणुं ७, अपूर्वकरण
गुणठाणुं ८, अनिवृत्तिवादर गुणठाणुं ९,
सक्ष्मसंपराय गुणठाणुं २०, उपशांतमोह गुणठाणुं २२, क्षीणमोह गुणठाणुं २२, सयोगी
केवली गुणठाणुं १३, अयोगीकेवलि गुणठाणुं

२०५

१४. अरिहंतनां भारूयां वचन साचां करी सहहेनहिं ते मिथ्यात्व गुणठाणो कहीई, तेहना भेद पांच छे. अभिगाहिय मिथ्यात्व जे लीघो हट मुकी सके नहीं ?, अनिभग्र-हिक मिथ्यात्व जे देव तथा क्रुदेव तथा गुरु तथा क्रगुरु धर्भ अधर्म सरिखा करी मांने परीक्षाबुद्धी नहीं २, अभिनिवेशमिथ्यात्व जे खोटाने खोद्धं जाणे पण हट मुकी सके नहीं ३. सांज्ञयिक मिथ्यात्व जे केविलना भारूया वचन तेमां संशय उपजे पूरीपरतीत आवे नहीं ४. अनाभोग मिथ्यात्व जे कांई जाणपणुं उपजे नहीं एकेंद्रीविकलेंद्रीनी पेरे तथा श्रीठा-णांगसूत्रे मिथ्यात्वना दसबोल कह्या छे, जीवने अजीव करी माने ते मिथ्यात्व १, तथा

अजीवने जीव करी माने ते मिध्यात्व २. तथा धर्मने अधर्म करी माने ते मिध्यात्व तथा अधर्मने धर्म करी माने ते बिध्यात्व ४. मोक्षनोगार्ग ज्ञानदर्शन चारित्रतपः तेहने मो-क्षमार्ग न माने ते मिथ्यात्व ५, तथा मोक्षनो मार्ग नथी संसारनो हेतु है तेहने माक्षमार्ग करी माने ते मिथ्यात्व ६ तथा मोक्षगया नथी तेने मोक्ष माने ते मिथ्यात्व ७,जे मोक्षे गया तेहने मोक्ष न माने ते मिथ्यात्व ८.जे साध विषय-विकार त्यागी तेहने असाध माने ते मिथ्यात्व ९, तथा जे साध नथी तेहने साध करी माने ते मिथ्यात्व १० ते मिथ्यात्वनी चाल तीन प्रकारनी छे देवगत मिथ्यात्व ते कुदेव सरागी तेहने देव करी माने १, बीजो गुरुगत जे

२०७

क्रगुरुने गुरु करी माने त्रीजो पर्वगत मिथ्यात्व संसारी पर्वने धर्मना पर्व करी साने ते प्रि-थ्यात्व ते मिथ्यात्वर्ना स्थिति तीन प्रकारनी है. अनादि अनंतनी अभव्य जीवने, अनादि सांत भव्यजीवने, सादिसांत पडवाइने, ते जघन्य अंतर्भेहती उत्तऋष्टी अद्भेषुद्रलपरावत्ती कांईक उंणी है. वीज गुणठाणं सास्वादन ते कोईक जीव उपसमसमिकतथी पडतो मिथ्यात्व ग्रणठाणे पोतो नथी वचे छआवछिका रहे ते सास्वादन गुणठाणुं कहीइं. तेहनो द्रष्टांत छे कोड पुरुष खीरखांड घृत जमीने तुरत वमतो होइं ते वमतां कांईक स्वाद आवे तिम सम-कितिथी पडतां पिण कांइक वासना रहे तेहने सास्वादन कहिइं २ त्रीजो ग्रणठाणो मिश्र

कोड जीव क्षयोपश्चम समिकतथी पडी मिश्र-मोहनीने उदये मिश्रगुणठाणे आवे अथवा मिथ्यात्वथी निकली समिकत गुणटाणे आ-वतां वचे मिश्रमोहनीने उदये मिश्र गुणठाणे आवे ते जीव अंतम्रहर्त्तकालसीम रहे एहने समिकत मिथ्यात्वदृष्टि कहीई. एहनो दृष्टांत कहे छे जे कोई जीव नालियरदीपमां वसतो होइं ते नालियर खाइं तेहने अन्न दीठे राग न उपजे तेम द्वेष पण न उपजे तिम जीवने जिन धर्भ साची सांभछतां राग पण न उपने तेम द्वेष उपने नहीं एहवा जीवने मिश्रगुणठाणुं कहीइं,एहनी स्थिति अंतम्रहर्तनी ३ चोथो अविरत समकित, तेहना भेद त्रण छै, तेहनो पहेलो भेद उपसमसमिक्षत जे

२०९

जीव अनादि मिथ्यात्व संज्ञीपंचेंद्रीपर्याप्तो कोई कारण पामीने संसारथी उभगे,नरक निगोदथी जनममरणना द:खथी बीहे तेवारे ए सर्व संसार खोटो जाणे, धर्म जाणवानी रुचि घणी करे, दयापाले, दानदे, तप करे, श्राव-कनां वार बत पाले, साधना महाबत पाले ते जीव यथापद्यतिकरणे वर्तता कहीई. एटली करणीसुधी भव्य तथा अभव्य जीव आवे. नवधेवेयकसधी जाए पण समकित पाम्यो नथी ते माटे छेखामां नावे, तोपण कोई जीव वैराग्य परिणामसहितसंसारने असार जाणतो साचा धर्मनो परीक्षा करतो सातकमेनी थीति उत्कृष्टी खपावे, एक कोडाकोडी सागरोपम बाकी थीति सातकर्मनी रहे तेवारे अपूर्वकरण

करे तेवारे एक ज्ञान मार्ग साची करी माने, बुद्धिसूक्ष्मभाव जाणवानी विशेष थाइं तेवारे पछे एक आत्मा पोताना शरीरने विषे रह्यो. पण अञ्चरीरी छे, अस्पी छे, अविनाशी छे, अनंतज्ञानमयो, अनंत दर्शनमयी,अनंत चारित्र मयी,अनंतअगुरुलघुमयी, अनंततपमयी, अनं-तवीर्यमयी. निर्मेल अलेप अखंड छे तेहना प्रदेश अखंख्याता छे. प्रदेशे २ अनंता गुण अनंता पर्याय छे, उपयोग लक्षण ते माहरो धर्म छे. ए धर्म जे जे करतां प्रगट थाये, ग्रणीश्रीअरिहंत. सिन्द्र, आचारज,उपाध्याय, साध तथा सिद्धांत तेहनो विनय तथा वैया-वच करवो, अरिहंतना आगम प्रमाणप्रतीत राखे ते समकित कहीई, ते समकितना तिन

२११

भेद छे,उपसम समिकत १ क्षयोपशम समिकत २ क्षायिकसमिकत तिहां अनंतानुवंधिकषाय ४ मिथ्यात्वमोहनी, मिश्रमोहनी, समकितमो-हनी एसातप्रकृति उदये आवे ते खपावी अने उदये नथी आवी ते विपाके उपसमावी छै. पंदेसे उदये है. समिकतमोहनी उदय आकरो छे तेणे समकितमां अतिचार लागे छे तेहने क्षयोपश्चम समकित कहीई, एहबी स्थिति ज्यन्य अन्तर्ग्रहूर्त्ते छे उत्कृष्टि ६६ छासठि-सागरोपम केतलाएक मनुष्यभव अधिक एतली स्थिति रहे ए समक्तितने पांच अति-चार लागे तेहनां नाम ।) संका जे आगममां कहा। ते साचो पिण कांईक संदेह उपजे १. अतिचार ॥ कंखा बीजा मतना शास्त्र तथा

देव हरिहरादिक सरागितथा ते मतना गुरुस-विकारी तेहने कांईक रुडापणे जाणि वांछा करिए २ अतिचार, वितिगिछाजे धर्मअरिहं-तनो कहा। करीइं पण एहनो फल थासे के नही थाय अथवा जिनसासनथी वीजा मतनी करणी रुडी छे एहवो परिणाम आने ते त्रीजो ३ अतिचार।) पसंस ज परमतनी परसंसा करे जे बीजा मतना देव तथा लिगीयाना कष्ठकरणी तथा कोई चमत्कार देखीने ते उपर राग आवे तेहने पंग लागे तेहना गुण बोले ए चोथो ४ अतिचार जाणवी ॥ संथवी जे बीजा मतना देव तथा गुरु तथा ते मतना जे सेवक तेडनो परिचय मेळाप घणो करे बीजा मतनी बात करे सांभले तेपांचमो अति-

२१३

चार ॥ ए क्षयोपश्चम समिकत एक जीवने असंख्यातीवार आवे अने वली असंख्याती-वारजाए, जे आगमने आधारे राखे तेहने रहे तेपछे क्षायिक समिकत थाई ते क्षायिकनो अर्थ लिखीई छै. अनंतानुबंधी च्यार ४ मिथ्यात्व मोहनी ? मिश्रमोहनी २ समिकत-मोहनी ३ ए सात प्रकृति सर्वथा जे जीव खपावीने निरमछीपरतीतिकधी ते क्षायिकस-मिकती कहीई. ए ओव्या पछे जाय नहीं. ए समकितवाला जीवने दस जातिनी रुचि उपजे ते लिखीइं छे. निसर्गरुचि नव तत्त्व ९ छ द्रव्य तेहना ४ निक्षेपा सातनय पोतानी बुद्धिथी साचा जाणे ते निसर्गरुचि १ अभिगमरुचि षे जिनागमनासुक्ष्म अर्थ जाणवानी रुचि

गुरुना प्रस्वथी उपदेशथी जाणे ते उपदेशरुचि २ श्रीअरिहंतकेवलीना कह्या वचननी आणा प्रमाण करे ते आणारुचि ३ सुत्ररुचि जिन-सूत्र सांभछतां साचा मारगनी परतीत उपजे समिकत पामे ४ वीजरुचि सिद्धांतनं एकपट सांभलतां बधावोलनं जाणपणं आवे श्रद्धा-समीथाई ५ अभिगमरुचि जे ११ अंगादिक ८४ आगम तथा निर्युक्तिभाष्य चूर्णिटीकाना अर्थ जाणे सर्वे बोलना परमार्थ जाणवानी रुचि ६ विस्ताररुचि ६ द्रव्यनाभाव ४ निले-वेसातनये करी च्यार प्रमाणे करी जाणे ७ क्रिया रुचि जे जीव जिनशासननी क्रिया साची करी सृत्रमां कही ते रीते करे आधी-पाछी न करे ८ संक्षेपरुचि, जे जीव सिद्धां-

२१५

तना जाणगीतार्थ आगमने अनुसारे जे अर्थ कहे ते साचा करी माने ९ धर्मरुचि. आतमानो धर्म ज्ञानदर्शन चारित्रमयी अरूपी आतमानो परिणाम भावटया प्रमुख गुणी श्री अरिहंतादि-कनो बहुमान वैयावच ते धर्म करी माने बीजा बाह्य तपबाद्यकिरिया जे आगममां कह्या परमाण करे ते धर्मनो कारण करी माने ते धर्मरुचि, समिकत मोक्षमार्ग मूल छे, समिकत विना जे करणि ते संसार खाते छै (पण) मोक्षमारग न जाणे ए चोथो गुणठाणो कह्यो ४ पांचमो देशविरति गुणठाणो इहां जीवने व्रतपच्खाण आवे, जघन्ये एक नवकारसी-पचरकाण तथा कंदम्लना पचखाण साची श्रद्धा सहीत थया होवे तेहने श्रावक कहीई.

उत्कृष्टे इंद्रीसुखनी वांछा विना श्रावकनां बारत्रतपाले ते उत्कृष्टो श्रावक कहीई बार-व्रतनां नाम १ स्थूलमाणातिपात विरमण, जे त्रस जीवने निरापराध हणे नहि २ स्थुल-मृषावाद विरमण, जे मोटका पांच कन्या-लीक १, गवालीक २, भौमालिक ३, थापि-णमोसो ४, क़डीसाख न बोले ५ ॥ ३ थल-अटत्तादान विरमण, जे चोरी कीथे राजा दंडै तथा च्यार रुडां माणस ठवको दे अथवा पोताने भय लागे अथवा सामाना जीवने श्रास्को पडे ते मोटी चोरी करवी नहि ४ थुळमैथुन विरमणव्रत, जे परस्त्री मनुष्यणी तथा तिर्येचणी तथा देवतानी भोगववी नहीं. ्पांच इंद्रीना स्वाद घणा मगनपणे सेवे नहीं

२१७

५ श्रुलपरिग्रह विरमण जे धनादिक नव भेदनो परिग्रहनो पचक्खाण करे. ईच्छा परि-माण करे अथवा पोता पासे जे धन होइं ते राखी बीजानो पचक्खाण करे ६ दिक परि-माणव्रत जे च्यार दिशा तथा ऊंचो तथा नीचो दिसी जावानो मान करे ७ भोगोपभोग परिमाण व्रत जे नीम साचवे, पन्नर कर्मादान न करे, जे पोताने खावेपीवे तथा वस्त्रोतं मान राखे ८ अनर्थ दंड विरमणत्रत. ते जे मोटका पाप, रंगवां, खेतर खेडवां, भाठो जे चना प्रमुख न करवानां पचक्खाण करे ९ सा-मायिकत्रत जे जघन्य २ घडी सुद्धी संसारनां काम मुकी कुटुंब धननो राग तजी कोइथी द्वेष न करवो एहवो समपरिमाण राखवो ते

साम। यिक कहिइं १० देशावगासिक व्रत जे बे घडीथी च्यार पोहोरथी उणुंकाल दिसतुं मानकरिथीरचित्तसमतापणे रहेवं ते देसावगा-सिकत्रत जाणवुं ११ पौपधत्रत च्यार पोहर अथवा आठ पोहोर सुधी समतापणे साधुपेरे श्रावकवरते, मन वचन काया समताई राखे ते पोपधत्रत कहीई १२ अतिथिसंविभाग बारमं ब्रत जे श्रावक ते साधुने विहरावीने पछे जिम्बुं जो तेहवा साधनो योग न मिले तो साधर्मिक श्रावकने जीमाडीने जमवा वेसबं वेटा पछे थो-डीसीकवार साधजीनी वाटजोवी इंग करतां साधूजी नाव्या तो एहवी भावना भाववी जे धन्य ते श्रावक जे साधुजीने वहोरावीने जिमता इस्ये इंग चितत्री जमत्रा वेसे ए बारत्रत धरे

२१९

ते श्रावक कहीइं श्रावकने जघन्य ३ वार उत्कृष्टे ७ वार चैत्यवंदन करवुं, अरिहंतदेव-सिद्ध भगवंतने वंदना करवी तथा नित्य पडिक्रमणं वे वार करवं जो नित्य न थाय तो पास्त्रीनो पडिकमणुं नियमा करवं तथा पश्चक्खाण प्रभातना नोकारसी अवस्य साच-ववी, रात्रि चडविहार तिविहार द्विहार ए ३ मांहि एक पचक्याण अवस्य करवं ए पांचमा गुणठाणानी स्थितिः जघन्य अंतम् हुर्त उत्कृष्टें देशे उणी पूर्वकोडी वर्षनी जाणवी. ए जीव अहार पाप स्थानक आलोइने निर्मल थयो चारित्रफरसे ते कहे छै. अथ अढारे पाप स्थान लिखीइं छै. कोइ भव्य जीव अव-सर पामीने जैनागम स्रुणतां संसारथी उभग्यो

थको मोक्ष सुखनो अभिलाष करे पण आलं-वन विना कार्य नीपनत्रो दकर छे तेथी प्रथम देवतत्त्व श्री वीतराग अनंत ज्ञानमय अनंत-दर्शनमय ग्रुद्ध स्वरूपी आत्म ऋद्धिभोगी आत्मालंबी आत्मपरणामी जेहने अवलंबीने अनंता जीव अव्याबाध सुख वरे ते देवतत्व तेइने सेववे सर्वे जीव संसारभयथी छुटे तथा निग्रंथपंच महाव्रतधारी संवरस्वरूपी एक निर्मेल मोक्षमार्गने विषे जेइनी दृष्टि है, शरीर इंद्रीय, कषाय, योगनी प्रवृत्तिजीपता मुनिराज अतीतकाल विषय संभालता नथी. वर्त्तमान विषयमां रमता नथी, अनागतकाल विषयनी आसंसा नथी, पोताना अनंतगुणपर्याय निर्मेल करवाने उत्कृष्ट उद्यमवंत छे ते साध्र महात्मा

२२१

गुरुपणे धारवा, तथा धर्मतत्त्व जे जीव द्रव्य असंख्यात प्रदेशी स्यादाद रीते पोतानी गुण-पर्याय परणति ते धर्म श्री सिद्ध भगवानने मगट है, श्री अरिहंते उपदिस्यो आचार्य ते धर्म साधवाने ज्ञानादिक पंचाचार पाले है. श्रीउपाध्यायजी ते धर्मनी घोषणा करे छे. साधुनिग्रंथ ते धर्म साधवाने राज्य तजी इंद्रिय विषय तजी वनमां साध टोला मध्ये अथवा एकल वासी वनवासी ग्रफानिवासी पर्वतनी शीला उपर उनाले आतापना शीतकाले नदीने तटे शीत खमे छे, जगत्रयथी अव्याक-पणे रागद्वेष वारता समतामई श्रुतसंपन्न चा-रित्रसंपन विचरे है तथा देशविरति ते सुद्ध धर्म प्रगट करवा वास्ते देसविरती लेइ सर्व

विरतीनी इहा करतो संसार कार्य ते विष पाननी पेरे उदासीनपण करे छे, सम्यग्दृष्टि ते धर्मनी इहा करतां कईयासिद्धीलंभो कईयासवेगुणनिरावरणा कईयाअद्यावाहं, सुहंसमुहंमयेसिज्जे ॥ १॥ कईयापुग्गलरहियो, रमामिसिवमयल निरुवमसहावो, पासंतोसवप्यं सुजंतो-अप्पणोभावं॥ २॥

ए भावना भाविने धर्मनो अभिलाप करतां संसारप्रवृत्ति तप्त लोहपद धरवानी रीते करे छे संसारसंपदा बालक रमवानां भूलघर समान जाणे छे, ते धर्म प्रगट करवानी रुचि सर्व जीवे करवी, पण ते धर्म आठ कर्म आ-वर्यों छे ते आठ कर्मने क्षये प्रगटे ते आठ

२२३

कर्मनो क्षय, पापस्थान आलोयतां थाये ते पापस्थाननी आलोयणा करवी जे माहरे जीवे संसार भगतां स्वस्वरूपनी भूछे हिंसा पाप-स्थान कर्यो आपणा ज्ञानादिक प्राण हण्या ते भावहिंसा अने रागद्वेषे असंयमे परना प्राण हण्या ते द्रव्यहिंसा ते लौकिक रीतेप्रध्वीकाय, अपुकाय, तेडकाय, वाडकाय, वनस्पतिकाय. त्रसकाय हण्या, संताप्या,छेद्या भेद्या, तपाच्या. परने संक्रेश उपजाव्यो.परणति संकर्षे प्रवर्ते हे श्रीवीतराग तुमें सर्व जाणी छो, ते हिंसाने धर्म करी मान्यो हिंसामध्ये राच्यो ए रीते हिंसा पोते ए भवे पाछल्ले अनंतेमवे जे जे हिंसा परणति करी, करावी,करतां, अनुमोदि मने वचने कायाए ते सर्वे श्रीमभ्रजीनीसाखे

गुरुसाखे मिच्छामिद्कडं ए प्रथम पापस्थान॥ हवे बीजो पापस्थान ते मुषाबाद जे जुटुं बोछबं, छौकिक संसारकाममध्ये छोकोक्तर धर्मकार्यमध्ये ते पिण भाव मृषावाद स्वस्वरू-पशुद्ध अध्यात्मभाव पोतानी परणतिने पो-तानी न माने, शरीर इन्द्रिय धन क्रद्वंब ते परभाव संसार हेतु दुष्टता मूल तेहने पोताना कहे क्रोधेमपा वोले. भयेमपा वोले. लोभेमपा बोले ते सर्व माहरे जीवे संसार भमतां चार गतिमांही जे मपावाद योल्या होय. बोलान्या होय, बोलता अनुमोद्या होय, ते मने वचने कायाए ते सर्व श्रीमभ्रजीनी साखे गुरुसाखे आत्मसाखे मिच्छामिदुकडं २ हते त्रीजो पापस्थानक अदत्तादान ते ने पारकी वस्त

२२५

अणदीधी लेवी ते लौकिक जे संसारी असंय-मीना धनकंचन द्विपट चतःपट आदिक अण दीधा लेवा. लोकोत्तर ते जे चैत्यउपगरण पुजारुपगरण चारित्ररुपगरण तेहनो चोरबो बाह्य बस्तुनो छेवो, ते द्रव्य, भाव ते जीवपर पुद्रल खंधादिकनो आत्मानेविषे ग्राहकतारुप परिणमन करचो हवे. कराव्यो, हवे. करतां अनुमोद्यो हवे, ते मन वचन कायाए ते सर्व श्रीप्रभुजीनी साखे गुरुसाखे आत्मसाखे मि-च्छामिदुकडं ३ हवे चोथो पापस्थान मैथन जे कामी भोगीपणे इंद्री विषे पुद्धलना वर्णा-दिकनो भोगववो लोकोत्तर धर्मिलेंगे धर्मी महाजन साधु सार्ध्वी धर्मोपकरण चैत्यादिने विषे इंद्रीनी पोषणा करवी ते बली द्रव्यथी

वेद ३ उदये जे कामित्रकारीपणे भोगित्रहा-सादिक, भावथी आत्मपरिणति परभोगीपणे पर वस्त अश्रविपरिणाममध्ये रमणीकता ते माहारे जीवे, एकेन्द्रियपणे बेरिन्द्रिपणे, तेरि-न्द्रिपणे, चोरिन्द्रिपणे, पंचेन्द्रिपणे फरसन १ रसन २ घाण ३ चक्ष ४ श्रोत्रेन्द्रिय ६ इन्द्रिना त्रेवीस विषय वांच्छचा सेव्या सेवाच्या सेवतां अनुमोद्या होइं ते मन वचन कायाए करी श्रीप्रभ्रजीनी साखे आत्मसाखे मिच्छामिदकडं ४ हवे पांचमो पापस्थान परि-ग्रह जे कोई आत्मधर्मथी अन्यभाव संरक्षणा परिणामे राखवा ते, छौकिक परिग्रह द्विपद चतःपद धनधान्य गृहखेत्र वस्त्रप्रस्व. लोको-त्तर परिग्रह सम्यक्त्वनो हेतु मोक्षकारण श्री-

२२७

अरिइंतनो चैत्य तथा जिनविव तथा ज्ञाननो कारण पुस्तक नवकारवाळी प्रमुखचारित्रनां उपगरण तेहने ममत्वभावे श्रहे, द्रव्य परिश्रह पदल खंघादि ममत्वभावे ग्रहे. भावपरिग्रह कोधादिक अग्रद्ध परिणाम परभावस्वामित्व-ग्राहकत्वादिक परिणति ते परिग्रह राख्यो हवे परद्रव्यनी इच्छा करी हवे, परिग्रह सुख मान्यो हवे, परिग्रह वासते धर्मआचरण करचो हवे ते परिग्रह पापस्थान मने वचने कायाए करो सेन्यो. सेवान्यो होय सेवतां अनुमोद्यो होवे ते श्रीअरिहंतनी साखे गुरुसाखे आत्म-साखे मिच्छामिद्कडं ५ हवे छहो पापस्थानक कोधतप्त परिणाम क्षमानो रोधक ते छौकिक भाई पिता प्रमुख कुटुंब उपर तथा

जीव उपर कोध परिणाम लोकोत्तर देवगुरु साधर्मिक उपर क्रोध परिणामते द्रव्यतः तथा व सर्वेदें डोरंता भाव रुद्र परिणाम ते जो कोई रीतनो अपशस्त क्रोध कर्यो होवे कराव्यो होवे करतां अनुमोद्यो होवे ते श्री त्रिभ्रुवन-पति निरंजन देवनीसाखे गुरुसाखे आत्मसाखे मिछामिद्कडं. हवे सातमो पापस्थान मान, अहंकार ? रुपनो, धननो,राज्यनो,परिवारनो, वलनी, तपनी, विद्यानी, कलनी तथा गुणी नहीं ने गुणीनो मान आचार्य उपाध्याय साधपणानो अभिवान संसारकार्य यशाभि-लाषे मान, धर्मकार्ये संघयात्राचैत्य प्रमुखनो कराच्या रखवाल्यानो मान कर्यो हवे, छौ-किक बाह्यलोकोत्तर गुणनो गुणीथी, महत्य

२२९

कयों हवे ते सर्व मने वचने कायाई करि कर्यों इवे कराव्यो होवे करता अनुमोद्यो होवे ते श्रीप्रभुजीनी साखे आत्मसाखे मिछामि-दुकडं ७ हवे आठमो पापस्थान माया कपट वक्रता जे कोइथी वचननो द्रोह ठगाई करवी ते माया अलौकिक संसारी संबंधथी लोको-त्तर आचार्य साधु साधर्मिकथी धर्म पद्धतिनो कपट करवो ते द्रव्यतः कोइने वंचवो, भावतः आर्ज्जवता रहित परिणामें जे माहरे जीवे कर्यों कराव्यो करतां अनुमोद्यो ते धने वचने कायाये करी श्रीजगवत्सल परम करुणानि-धिनी साखे गुरु यथार्थवादिनी साखे, आत्म साखे पिछापि दुकडं ८ हवे नवमो पापस्थान लोभ, लालची परिणाम इच्छा गृद्धता ते

लौकिक, बाह्य पोताने इष्ट वस्तु तेहनी लालच जे घणी जहे, इंद्रीय सुख प्रमुख आवे एहवो परिणाम ते लोभ, लोकोत्तर धर्मलिंगे धन विषय जसनो लाभ वांछे ए द्रव्यत: क्हां, जे भावतः परभावाभिलाप सर्व ते जे माहारे जीवे कर्यों कराव्यो करतां अनुमोद्यो ते मने करि वचने करि कायाये करि श्री प्रभुजीनी साखे गुरु साखे आत्म साखे मि-छामिद्कडं ९ इवे दसमो पापस्थान रागशीत परिणाम वाल्हास जे जीव अजीव पोताने विषे पोषणीये हौकिक तथा होकोत्तरथी द्रव्य तथा भावथी ते राग परिणति अनंती आत्माथी उपनी अन्य द्रव्यने विषे तेना उदिकनी रीझ ते माहारे जीवे करी करावी

२३१

करतां अनुमोदि ते सर्व मने करी वचने कायाए करी श्रीअरिइंतनी साखे गुरुनी साखे पिछामिदुकडं १० हवे अग्यारमी पाप-स्थानक द्वेष अनीति परिणाम जीव तथा अजीव उपर पोतानी विषयादि इष्टताये अपूरातां जे असुहामणां ते लौकिक उपर द्वेष तथा लोकोत्तर उपर द्वेष जे कर्यों होवे कराव्यो होते करतापत्ये अनुमोद्यो होते ते मने वचने कायाये करी ते श्रीसर्वज्ञनी साखे गुरु साखे मिछामिदुकडं ११ हवे बारमो पापस्थान कलह वढवाड कोईथी द्रव्य वासते जस वडाई वासते आक्रोश क्राचनादिक करवा तथा धर्म मध्ये नामगावा बासते. इयक्तिये पोतानो मत थापवाने जे कछह

करवे प्रशस्त करतां अप्रशस्त थयुं होवे ते सर्व मने वचने कायाए करी कर्य कराव्यं अनुमोद्यं ते देवसाखे गुरुसाखे आत्मसाखे मिच्छामिद्रक्कडं १२ तथा तैरमो पापस्थान अभ्याख्यान क्रडोआल देवो द्वेषे तथा हास्ये गुणीना गुण ओलववा, आगलाने सहसा-त्कारे हिणो वचन कहेवो तथा वस्त्रगते लोपीने पट्नार करवो ते लौकिक अन्यजी वने संसारी रीते, छोकोत्तर अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु साधर्मिक देशविरति समिकती तेहनी औदिय चाल देखी कलंक देवो ते अभ्याख्यान कर्या होवे, कराव्या होवे करतां अनुमोद्या होते ते मने वचने कायाए करी श्रीप्रभुजीनीसाले गुरुसाले आत्मसाले मिच्छा-

२ ३

मिदुकडं १३ हवे सोळमो पापस्थान परपरिवाद. पारकी निद्या ते देषे पारका अवगुण कहा, कोइना अपजस वास्ते पारकी क्रथली करी अथवा सामा मनुष्यने खिसाणो पाडवा वासते जे निंदा करी ते मध्ये छौकिक ते जे संसारी जीवनी, लोकोत्तर गुणी जैनमार्ग अवलंबता मार्गानुसारिथी मांडी सिन्डभगवान लगे जे अव र्णवाद बोलवो ते बोल्यो होवे बोलाव्यो होवे बोलताने अनुमोची होवे ते मन वचन कायाए करीने श्रीप्रभूजीनी साखे, गुरु साखे, आत्म साखे मिछामिद्कइं १४ पन्नरमो पापस्थान रति तथा अरति उपने असाता दुःखवियोग हानि प्रमुख उपने जे अरति आक्रुछता किहां-इ सुहाय नहीं ते अरित छौकिक विषयनी

ऊणी असहामणे, तथा लोकोत्तर आगम सुण-तां देवयात्राये तप सामायकपोसह भणवो प्रमुख ते मध्ये अरति करि होने तथा रति, इंद्री विषयमध्येरीझ सहामण रक्तता विश्राम ते रति छौकिक, तथा छोकोत्तर चैत्य प्रस्त-कादिकनी संदरता देखीने जे इंद्री विषे रीझ पांमे ते रीझ ए नवां कर्म बांधवाने आकरि चिकणता जे माहरे जीवे करी, करावी, क-रतां अनुमोदी ते मने वचने कायाये करी श्रीपरमात्मानी साखे गुरुनी साखे आत्म साखे मिछामिदकडं १५ हवे चउदमो पापस्थान पैश्चन्य पारकी चाडी करवी ते जे द्वेषे थाये आगल्या जीवनेकष्ट असातानो हेतु राजा तथा आचार्यादिक अधिक आगल तेहना छता

२३५

अथवा अछता दोष कही तेहनो आश्रय भां-जबो ते पैशनय कहिये ते जे माहारे जीवे करचो कराव्यो करतां अनुमोद्यो मनेवचने कायाए करी श्रीपश्चजोनी साखे. आत्मसाखे ग्रन्साखे मिछामिद्कडं १६ हवे सत्तरमो पापस्थान माया मुषा कपटे परने ठगवा वास्ते मिठं बोले. कोइ कपटलिंग बगलानी पेरे दे-खाडीने गुणी नहि ने गुणी रीते वंदाववी, पूजाववो मनाववो कराववो अथवा छौकिक वचने व्यापार प्रमुख मध्ये कपटे मण बोले तथा धर्मचाले जैनागम मध्ये कपट रीते मद्रति करवी ते छिगी जीव प्रमुख करवां ते जे माहारे जीवे करचां कराव्यां करतां अनु-मोद्या ते मने वचने कायाए करी श्रीमञ्जीनी

साखे गुरु साखे आत्म साखे मिछामिदुकडं १७ हवे अहारमी पापस्थान मिध्यात्व जे क्रदेव विषयी कर्माधीन परिग्रही प्रण्यपकृति भोगि तेहनं देव माने, कुगुरु चारित्रधर्भ रहि-त जे अन्य छिमी तथा स्विछिमी गुणभ्रष्ट परिग्रहनो लोभी अढार पापरथान भरचा ते गुरु करी माने, धर्म यथार्थ आत्मपरिणति विना अथवा तेहना साधन विना धर्मे माने तथा जीवादिक नव तत्त्व जिम वस्त्वधर्भ वस्त-पणे पोतानी परिणति छै, षटद्रवये जिम पोता-नी परिणति गुणपर्याय स्वभाव स्याद्वाद रीते जिम छे तिम न सद्दहे कल्पित रीते सद्दहे तेने मिथ्यात्व कहे छे, तेहना मूल भेद ५ अभिग्रहमिथ्यात्त्र-लोटोकदाग्रह झाल्यो मुके

२३७

नहि १ अनभिग्रह मिथ्यात्व गुणअवगुण परख्या विना सर्वे सरिखा माने २ अभिनि-वेश मिथ्यात्वः जाणीने खोटो कदाग्रह खेंचे ३ संशयमिथ्यात्व जे सर्व संशय मध्ये रहे ४ अनाभोग मिथ्यात्व जे कांड जाणे नहि तथा साध्य साधन निमित्त तथा उपादान उत्सर्ग अपवाद विपर्यास रीते करि एहवी अशुद्ध सदहणा जे नेदांतादिकनी ते सर्व मिध्यात्व जाणवो. ते जे सेव्यो होवे. सेवाच्यो होवे सेवतां अनुमोद्यो होवे मने वचने कायाए करीने ते श्रीप्रभ्रजीनी साखे गुरुसाखे आत्मसाखे मिच्छामिद्रकडं, ते मि-थ्यात्व जीवने महादुःखकारी छे, अनादि सं-सारनो बीज छै, लोकोत्तर श्रीजिनेंद्रनो कहा।

शुद्धमार्ग जीव पासे नहीं ते मिध्यात्व महापाप-स्थान छे ते थकां धर्म करणी विण साधक न थाय ते मारे मिथ्यात्वनो पश्चात्ताप वणो करवो ते मिध्यात्व टलतो नथी ते जे पूर्व जीवे गणीनी आञ्चातना तथा गुणनो अनादर कर्यों छै ते महागुणी अरिहंत देव तेहनी मक्तिने काने उत्तम भव्यजीवे जे धनादिक रह्या थको पोताना आत्माने तथा अन्य संसारी जीवने सिण (स्नेह) सरागता, परिग्रहता हिंसादि-कनो हेत थाये तिणे गुणीनी भक्ति जोडतो निरधिकरणी थाये ते माटे जे अरिहंतनी भक्ति कारजे कर्यों जे धनाटिक ते देवको कहिये ते जे खाधो होवे अथवा पोते विण-साडग्रो होवे अथवा उवेख्यो होवे ते सर्वे

२३९

देवकाना दुषण थयो ते माटे देवका दोषनी आलोयणा करवी ते लखीये है जे माह्यरे जीवे एकेंद्री पृथवीकायपणे जिनविंबादिकनी आशातना करी अथवा पृथ्वीकायपणे मुक्यां जे श्ररीर तेहथी जे गुणी अथवा गुणीनी थापना चैत्यादिक तेहने व्याघात थयो तथा अपकाय-पणे पाणिमे चैत्य बहेबराच्या पाडचा जिन विंब वहाव्यां तथा अग्निकायपणे जे चैत्यविवादिक बाल्या होते. तथा नायुकायपणे चैत्य पाडचो होवे, तथा वनस्पतिकायपणे जे चैत्य मध्ये रुखडा झाड खापणे उगीने चैत्य पाडया होवे. त्रसकायपणे चैत्यमध्ये मालादिक करी रह्या हवे पंखीने भवे चैत्य तथा जिनविंब उपर बेसी असमंजस आचरण करचां होबे, तथा

देवकाद्रव्य मनुष्यपणे जाणि तथा जाण्यी विना खाधा होवे अथवा अविधि वावर्षा होत्रे तथा देवका उपर अन्याय हंकम कर्या होत्रे, अथवा देवकी वस्त वावरीने पोताना यश बोलाव्या होवे. देवका दोकडा व्याजें राखी थोडो व्याज भरी आप्यो होवे अनै घणो लाभ लीयो होवे. तथा बीजो पण देवथी इंद्री सुख यशवडाई प्रमुख जे करी होवे तथा अरिहंत देव मते सांसारिक कामे मान्या इछचा होवे ते मने वचने कायाए करी मिछामिदकडं. हिने माहारे ए कार्य अशुद्धाचरणरूप न करवं आज पछी माहारो आत्मा अनंतगुणमयी प्रगट करवानी रुचि करवी श्रीअरिइंतनो कह्यो मार्ग तहत्त करी

२४१

सदृहवी, अन्य सर्व मिथ्या, श्रीवीतरागे कहाो निग्रंथे आचर्यों समिकती जीवे सहबो श्री-गणधर देवे आगम सध्ये गुंध्यो श्रद्ध धर्म माहरी तथा सर्व जीवनी हित छे ते माहारे प्रमाण ते सहहत्रो. ते जाणवो ते आदरवो ते नीपजाववोः ज समये समये गुणस्थान चढी कर्पक्षय करी संलेशी अंते पोतानी सिद्ध संपदा पगढ थास्ये वे समयसार मानवो अने जेने ए मारगर्ना परतीत प्रगटी तेने शरणे रहेवी तथा साध्य शुद्धसत्ता साधन गुणठाणे चढी ते रत्नत्रयी परणमत्री ए मार्ग माहरी संदा अविहड होज्यो इति॥

॥ दूहा ॥

परम अध्यात्मने लखे, सद्गुरुकेरे संग;
तिणकुं भव सफलो होव, अविहड प्रगटे रंग. १
धर्मध्यानको हेत यह, शिव साधनको खेत;
ऐसो अवसर कव मिले, चेत सके तो चेत. २
वक्ता श्रोता सम मिले, प्रगटे निजगुणरूप;
अक्षय खजानो ज्ञानको, तीन भूवनको भूप. ३
एह पत्र अनुपहे, समझे जे चिक्तलाय;
देवचंद्रकवि इंमकहे, निज आतम थिर थाय. ४

इति अहार पापस्थान जाणवां. हवे छहो गुणटाणो प्रमत्त साधु एहवे नामे कहीये जे मत्याख्यानी चोकडीनो उद्य टल्यो सर्व विरति पगदी, संयम साधन माटे पौद्गालिक

२४३

भावे ग्रहेपण प्रद्गालने भोगिपणे ग्रहे नहीं. स्त्ररूपरमणी आत्मधर्म थिरता रुप सर्वपरभाव उपर अग्राहकतारूप चारित्रधर्म प्रगटयो छे ते साध उत्सर्ग अपवाद मार्गेपंचमहात्रत पाले छे. तिहां द्रव्यभाव पंच महात्रत सहित पांच समिति तीनगुपतिना दश यति धर्मना पात्रथका निराशंसी एक आत्मा निर्मेल करवाना उद्यमथकी विचरे ते पंच महावत, तिहां पहेलो महावत सन्वाओपा-णाईवायाओविरमणं "विवहारे छकायना जीवना द्रव्य प्राण १० हणे नही हणावे नहीं हणताने अनुमोदे नहीं मन वचन का-याए करीने, निश्रयथी ज्ञानदर्शन चारित्र स्रख प्रमुख भावपाण पोताना परना कर्म

आवरणपणे हणे नहि, हणावै नहि, हणतां अनुमोचे नहीं, तथा बीजे महाव्रते, सन्वाओ मोसा वायाओं वेरमणं. द्रव्यत क्रोधे माने मायाए छोभे सङ्मवादर छौकिक तथा छो-कोत्तर जुड़ं पोते बोले नही बोलावे नहि बोछता अनुमोद्ये नहि मन वचन कायाए करी. भावथी सर्वे द्रव्य पर्यायनी यथार्थ जा-णवो, सत्य भासनरूप ज्ञायकता शक्ति साधि ज्ञान सत्यपणे पाछे तथा श्री वीतरागना आगम प्रमाणे अर्थ भाव छे तेहनी सङ्गाय करे जेहथी पोताना ज्ञानदर्शन चारित्र निर्मल थाये ते भाषा बोले. त्रीजो महावत सन्वाओ अदिनादाणाओं वेरमणं" जे द्रव्य ते त्रणतस मात्र पण अण दीधो छेत्रे नहीं, छेत्ररावे

२४५

नही, जे लेवे तेहने सारो कहे नही, मने वचने कायाए करीने छौकिक चोरी जे संसारी जीवनी वस्त चोरी लेवी, लोकोत्तर चोरी जे तीर्थंकर आणमे जे न छेवानो कह्यो ते लेवो ते चोरी न करे, भावथी आत्मानी ग्राहकता शक्ति ते स्वरूप ग्रहणरूप कार्यना कर्ता छे ते अनादिनी परभाव ग्राहकता करी रहां छे ते निवारीने स्वरूप ग्राहकपणे परण-मावे, ते अदत्तादान विमर्णवत थयो ते अदत्तादान चार भेदे छै ते तीर्थंकर अदत्तजे तीर्थकरनी आणामें न लेवो कह्यो सर्व परभाव ते लेवे १ बीजो गुरुअदत्त जे गुरु परंपरा विनासूत्र अर्थ कहेवा २ तीजो स्वामी अदत्त जे बस्तुनो जे घणी होवे तेनी अणदीर्घा जे

वस्त लेंबी ते ३ चोथुं जीव अदत्त जे कोड जीवं एम कहा। नथी जे माहरा प्राणहणो अने पोतानेइंद्रीसवाद माटे परजीवना प्राण-हणे ते जीव अदत्त ४ तथा प्रशस्त काम करतां कोइ जीवना पाणवात थाये ते श्री भगवंते हिंसा कही नथी, ते विनय तथा वैयावचमां गण्युं छे ए द्रव्यभाव अदत्तादान त्रिविधि त्रिविधिपणे होवे. चोथे महात्रते ''सब्बाओं मेहुणाओं वेरमणंं'' जे द्रव्यथी पांच इंद्रिना त्रेवीस विषय सेवे नहीं, सेवतां अ-नुमोदे नहीं, मनुष्य तिर्यच देवताना विष-यनी वांछा न करे, न करावे, अनुमोदे नही, भावधी जे आत्मा द्रव्य आत्म ग्रुणनो भोगी छै ते पण करम करवा माटे परभावने भोगवे

२४७

ते भाव मैथुन छे, ते सर्व परभाव भोगीपणे भोगवे नहीं, ते आत्मानिः कर्मा करवा माटे, परभाव साधनपणे ग्रहे पण अभोग्य अग्रा-ह्यपणे अरमणिक माने जे माहरी आत्मा आत्मानंदनो भोगी ते परभाव अनंत जीवे अनंतवार लेड भोगवीने वस्यो ते मने ग्रहवो भोगववा घटे नहीं ए अनंत जीवे अनंतीवार भोगवी जे अेंठ जडचल तेहने हुं भोगवुं नहीं इम सर्व परभाव भोगीपणो तजी स्वभाव भोक्तापणे रहेवो ते द्रव्यथी मैथूनना कारण-रूपी खंध तथा रूपी खंध मिल्या जीवनी, खेत्रथी मैथन तीन लोकने विवे इंद्रीना स-वादनी ईच्छा, कालथी मैथुन दिवस तथा रात्री, भावशी मैधुन रागशी तथा द्वेषशी, ते

सर्वथी सेवबो नहीं तेहनी वाड नवे पाछवी १ वाडे जे थानके स्त्री पशु पंडक रहे ते थानके ब्रह्मचारीए रात्रीये रहेवं नहीं. बाजी वाडे स्त्री साथे हासि तथा कामकथा करवी नहीं, त्रीजी वाडे जे पीठ पाटले स्त्री बेठी होये ते पाटले वे घडी लगे ब्रह्मचारी पुरुषे वेसवुं नहीं, खीये तीन पहोर लगे बेसबं नहीं, चोथी वाडे स्त्रीनं रूप नजर जोडीने जोवं नहीं. पांचमी वाडे जिहां स्त्री भरतार काम भोग भोगवता होवे ते भींतने अंतरे ब्रह्मचारीये राते रहेवं नहीं, तेहना शब्द काने पडवा देवा नहीं. छही वाडे गृहस्थपणे जे भोग भोगव्या ते संभारवा नहीं. सातमी वाडे सरस आहार जेइथी काम दीपे ते आहार करवो नहीं, आ-

२४९

डमी बाढे अतिमात्राए आहार करवो नहीं, नवमी वाडे शरीर सिणगार ऌगडानो तथा घरेणानो करवो नहीं, सनान उगटणा न क-रवा, एकली स्त्री साथे एकछं वाटे चालवं नहीं, तथा नानं बालक तथा बालिकाथी एक शय्याए सुबुं नहीं, सात वरस पछी, पांचमे महात्रते "सन्वाओ परिग्नहाओ वेरमणं" जे द्रव्यथी परिग्रह सक्ष्मबादर राखे नहीं रखावे नहीं, राखे तेंढने अनुमोदे नहीं, जे संयम पालवा माटे सुखे सिझाय थाये ते माटे उपक-रण १४ राखे. कारणे अधिको जोडए तो गृहस्थनाथका पाडेरुं वापरे ए थिरकल्पीनो विवहार छै, जिनकल्पी कोई उपगरण न राखे. अपत्रादे दस उपगरण राखे, बार कषाय

रे५० गुणस्थानकविचारः

उदय टल्या तेहने छट्टो गुणठाणो कहीये साध कहींथे. पण ५ परमाद सेवे निद्रा १ विकथा २ आहार ३ अल्पविषय ४ मानादिक ५ ए अल्प सेवे अनाभोगे जाणे. सेवे नहीं, ए छद्वा गुणठाणानी स्थिति जघन्ये एक समय उतं-कृष्टे अंतर्भेहर्त ए गुणठाणे तीन चारित्र सामा-यिक, छैदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि ए तीन चारित्र है. तेहनो स्वरूप जे परभाव पर-त्यागे स्वरूप एकत्वते चारित्र कहीये ते मध्ये जे तजवा योग्य भाव तजे ते द्वेष विना अने रत्नत्रयीजे आत्मधर्भ ते ग्रहे स्वधर्म माटे पण लौकिकादिक इष्टता राग विना एहवो सम-परिणाम ते सामायिक कहीए, तथा जे सामा-यक मध्ये संज्वलनना तीव्रोदये जे आकरा

३,५१

अतिचारे अथवा बार कषायने उदये असंज-मपरिणाम फरसे जे पूर्व पर्याय छेड़ीने अभि-नव निर्मेल पर्यायनो अंगीकार करवो ते छे-दोपस्थापनीय कहीये, अने छेदोपस्थापनीचा-रित्र भरतं ५ तथा ऐरवतं ५ ते मध्ये प्रथम चरम तीर्थकरना साधुजीने होवे तथा तीर्थ-कर तथा गणधरजीना शिष्य नव पूर्वथी उपरांत श्रुतवंत मध्य युवानविय प्रथम संघ-यणे अदार मासनो उप्रतप ते अप्रमादी निद्रा रहित नवजणा वनवासी थका जें तप करे ते परिहार विशुद्ध चारित्र कहिजे, दशमे गुण-ठाणे शुक्रध्यान तथा सुक्ष्म लोभनो उदय छै ते सूक्ष्म संपराय चारित्र कहिज़े, तथा सर्वथा कषायनो उदय नथी ते यथाख्यात चारित्र

कहिजे ते मध्ये ११ में गुणठाणे उपशांत यथाख्यात छे १२, १३, १४ में गुणठाणे क्षायिक यथाख्यात हो, हवे सातमो अवमत्त गुणठाणो लिखीये छे, छठे गुणठाणे जे भाव साधजीना कहा ते सर्व होने पण पांच प्रमाद न होवे, ते माटे अपमाद, ए छठे गुणठाणे वरततो साधुजिन शासनने कामे लब्धि फोर वे पण सातमे ग्राणाठणे वरततो साधु लब्धि न फोरवे. एहनी स्थिति जघन्य एक समय-उत्कृष्ट अंतर्महर्तनी छे. छठे तथा सातमे गुण-ठाणे मिलीने साधु देशे उणी पूर्व कोडी रहे. श्री भगवती सत्रे ए वे गुणठाणानी देशे उणी पूर्व कोडी स्थिति जूदी कही है. ते व्यवहार नये छे, समय तथा वे समय वचे

२५३

गुणठाणो पलडे ते गवेड्यो नथी ते माटे अंतर्भु-इतेनी स्थिति कही. छहे, सातमे वे गुणठाणे सामायिक तथा छैदोवस्थापनीय तथा परिहार विश्रद्धि चारित्र छे, तथा सातमे ग्रणठाणे साध रुब्धि फोरवे नहीं अने छहा गुणठा-णाना साध जिनशासनने काजे छिब फोरवे तेतुं साध्रपणुं जाय नहीं ७ आठमो अपूर्वकरण गुणटाणो जे जीव भावनाभा-वतो आत्मानो स्वरूप अनंतज्ञानमयी. अ-नंतदर्शनमयी, अनंतचारित्रमयी, अनंतदान-मयी, अनंतलाभमयी, अनंतभोगमयी, अनं-तउपभोगमयी, अनंतवीर्यमयी, अनंतअच्या-वाधस्रलमयी, परमञानंदमधी, अरूपी, अवे-दी. अकपाई, अलेसी, अशरीरी, अनाहारी,

सर्वआनंदरूप माहरो धर्म छे ए शरीर. आ-हार तेहंनहीं, एहत्री भावनामांहे परणम्यो जीव श्रक्षध्याननो पेहलो पायो ध्यावे, इहां पांच अपूर्वकरणकरे पूर्वे किंवारे नकरचां होय ते करे तेहनां नाम पहेलो अपूर्वकरण थितिघात जे जीव कने असंख्याता थित जघन्य थोकडा हताते करमथिति सघली खपावी अथवा उपशमावी बीजो अपूर्व-संघात जे कमेना रस चीकणास हती ते खपावी पातलुं करवुं, त्रीजो अपूर्व-गुण श्रेणि जे जीवने सत्तामांहे करमदल हतां ते सरवे विखेरी नाखवा, चोथो अपूर्व-ग्रणसंक्रम आत्यना ग्रणमे रमवो, पांचमो अपूर्व जे नवोस्थितिबंध न करवो

परिणामधी कषाय खपाबीने आतमा शीतल परिणामे परणस्यो करम निर्जरा करे ते ए ग्रुगटाणे जघन्य एक समय उत्क्रष्ट अंर्तमुहूर्तनी स्थिति छे, ए गुणठाणे चारित्र सामायिक तथा छेडोपस्थापनीय ए वे छे ८ नवमो गुणटाणो अनिदृत्तिवादर छे ते शुरू ध्याननो पहेलो पायो तेथी आहे, ए गुणठाणे वर्तता जीव एक अध्यवसाय जेटला होवे तेटला सर्वनो एक सरखो परिणाम एक सरखो संवर, एकसरखी निर्जरा, एहने सामायिक तथा छेदोपस्थापनीय ए वे चारित्र होवे. एहने अंते तीन वेह जाये तथा तीन कषाय संजलनो कोधमान माया लोभ जाये ए गुणठाणे संख्याता जीव होये. ए गुणठाणानी

स्थिति जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतिमृहर्सनी छै. ९ दशमो गुणटाणी सृक्ष्म संपराय इहां सक्ष्म संज्वलननो लोभ उदय होते. इहां वे जातना जीव पामीये, उपश्रम श्रेणि तथा क्षपकः श्रेणिः करमने उपश्वमार्वे क्षपकश्रेणि कर्म मोहनीने खपाबे, ए ग्रुणटाणे एक सुक्ष्म संपराय चारित्र होवे, ध्यान शुक्क होवे परि-णाम निरमल होते, ते अवेदी छे एहनी स्थिति जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतम्रहर्त्तनी छै. १० इग्यारमो गुणटाणो उपज्ञांतमोह तिहां जे जी-व उपग्रम श्रेणि आठमेछतीचीलना परिणाम-शांत मोह कर्मनी प्रकृति उपगमावती जाय. ते-हनो उठाणधुरथीज उपश्रमात्रानो छे ते नवमे आवी मोहप्रकृति उपश्चमावी दश्चमे लोभ उप-

२५७

शमावीने कपायना उदयरहीत छे ते इग्यारमे आवे ते भयथाख्यात चारित्र पामे, एहने चोवीस संपरायकी किया उतरी एकइरिया-वहिकी क्रिया रहे. प्रकृति तथा परदेश ए ब बंध रह्या छे हेतू न बांछे, बंध एक मातावेदनीनो छे. ध्यान शक छे ए गुणठाणे जे जीव मरण पाम्या पछी चोथे गुणठाणे आबे ते देवता छवसत्तमीया थाए, एकावतारी थाए. अथवा कोइक जीव अगीयारमे गुणठाणे उपशांत अद्वाते जई पाछो पडे ते इग्यारमाथी दशमे आवे दशमाथी नवमे आवे नवमेथी आठमे आवे आठमेथी सातमे आवे सातमेथी

१ पडी पाछो क्षाक श्रेणिये चढी.

छट्टे आवे. इहांथी पाछो पड नचढे तो पाछो पांचसे गुणठाणे आवे, पांचमाथी चाथे आवे. जो क्षायक ममिकती होए तो चोथे गुणठाणे टके अने उपशम समिकती होए तो चाथाथी पड़ी बीजे सास्वादन गुणठाणे थईने पहेले मिथ्यात्व गुणठाण आवे. कोड एक जीव अंतेम्रहर्स रहे, काइक जीव देश आणोअर्ध पद्रल परावर्त मिथ्यात्वीपणे रहे पछे समकित पामे. एअगीयारमी गुणठाणी एक जीव च्यारवार पामे, एक जीव एकभवशांहि ववार पामे, एहनी स्थिति जधन्य एक समय उत्कृष्ट अंतिमुहूर्तनी छे. एअगीयारमी, हवे बारमी क्षीणमोह गुणठाणा ते जे जीव आठमा गुण-ठाणाथी कमें खपावतो तात्र वीरज निरमल

ર્લ્

उपयोग शुद्ध शुक्क ध्यानने वर्ल नवमे दशमे गुणठाणे मोहनी कर्म खपावी बारमे गुणठाणे आवे. एह शक्र ध्याननो बीजो पायो एकत्व-वितर्क अपविचार ध्यावे, एहथी आयु बले धनघाती तीन कर्म ज्ञानावरणीय दर्शनावर-णीय अंतराय खपावे, एहनी स्थिति अंतेमुह-र्तर्सा छे. १२ । तेरमो गुणटाणो सयोगी केवली जे जीव वारमाने अंते ज्ञानावरणी, दर्शना-वरणी, अंतराय, ए खपे केवळज्ञान केवळ-दर्शन पगटे, लोक अलोकना सर्व अर्तातकाल अनागतकाल वर्तमानकाल सर्व प्रत्यक्ष आत्मवले इन्द्रिय विना जाणे देखे, इहां जे अंतगड केवली होवे ते केवली सम्र-द्यात करीने मोक्ष जाय अने जे केवलीनो

आऊखो घणो होवे ते अनेक जीवने उपगार करतां अनेकदेशना देता विचरे देशे उणीपुर्व कोडी लगे विचरे. तथा जे तीर्थंकरदेव केवली-पणे विचरे ते चोत्रीश अतिशय तथा आठ प्रातिहारज विराजमान थका नवा सोनाना कमले पग थापता चाले. योजनप्रमाण मांडले-समोसरणे सोनाने सिंहासने तीन छत्र माथे वीराजता वे पासे चामरनी जोड विञ्चता हजार धजा इंद्रधजा छहेकता देशना देता जघन्य बहोतेर वरसने आऊखे उत्कृष्टे चौ-रासी लाख पूरवने आऊखे विचरे, अनेक जीवने धरम उपदेश दे, गणधर थापना करे. साधु साध्वी श्रावक श्राविका ए च्यार संघ थापे. द्वादशांगी सिद्धांत प्ररूपे. अने सामान्य

२६१

केवलीने अतिशय नहोवे ते छेडे आवरजी-करण करे पछी जो आऊखो अने बीजा करम सरखां होवे तो केवली समुद्धात न करे. अने जो आऊखेथी (अन्य) करम घणा होंवे तो केवली समुद्धात करे तेहने आठे समय लागे. ए तेरमा गुणठाणानी स्थिति जघन्य अंतर्महतनी छे उत्कृष्टे देश उणीपूर्ण कोडी वर्षनो है १३॥ चडदमे गुणठाणे अयोगी केवली ते जे जीव तेरमे गुणटाणे जोगरोध करवा मांडे, सूक्ष्म किया अन्तिपाते शुक्क ध्याननो त्रीजो पायो ध्यावतो ते चउटमे गुणठाणे चढे तिहां प्रथमथी वादर मनोजोग रोके पर्छा बादर वचनजोग रोके पर्छी बादर कायाजोग रोके पछी सक्ष्म मनोयोग केरो

पछी सुक्ष्म वचनजोग रोके पछी सुक्ष्म काया-जोग रोके शरीररहित थाए जेटलो देहमान होवे जघन्य वे हाथना उत्कृष्टो पांचसे धनु-षनो त्रीजे भागे घटाडे, तेत्रारे जघन्य वत्रीस आंगुलनी उत्कृष्ट तीनसेतेत्रीस धनुष वत्रीस आंगुलनी अवगाहना रहे, तेवारे आत्मा अयोगी अक्रिय, अलेसी, अनाहारी, अञ्-रीरी, श्रुक्त ध्याननी चोथो पायो थईने अधाती करम च्यार, वेदनीकर्म १ आउली-कर्म २ नामकर्म ३ गोत्रकर्म ४ नो क्षय करीने मोक्ष जाय ॥ इतिश्री चडदम्नं गुणस्था-नकं संपूर्णम् ॥

पंडित श्रीदेवचन्द्र गणि विरचित ॥ अध्यात्मगीता ॥

श्री संवेगीसिरदार शिरोमणि जिन उत्तम पद्पंकज रूप, शिष्य अमीकुंवर कृत बाला-बोध सहिता ॥

॥ ढालभंवरगाथानी॥

प्रणमिये विश्वहित जिनवाणी । महानंद तरु सींचवाऽमृत पाणी ॥ महा मोहपुर भेदवा वज्रपाणी । गहन भवफंद छेदन कृपाणी ॥ १

२ अध्यात्मगीताः

अथ:--प्रणमिये कहेतां नमस्कार पर्ते करिये छे. केहने नमस्कार करिये छे?के विश्वहित जिनवाणी. एटले विश्व कहेतां जग-त्रयना जीव. तेहनें हेतना करणवाली जिन-वाणी कहेतां जिनेश्वर देवनी वाणी. तेहनें नमस्कार पतं करिये छै. एटले बली जिनवाणी केहवी छे ? के महानंद तरु सींचवा अमृत पाणी. एटले माहा कहतां जे मोटो, अने नंद कहतां जे आणंदमयी, एहवो मोक्षरूपीयो तर कहतां हुझ. तेहनें सीचीने नव पछव करवानें जिनवाणी केहबी छे? के अमृत समाणी कहेतां अमृत समान जाणवी. एटले वली जिनवाणी केइबी छे ? के माहा मोहपुर भेटवा वज्रपाणी, एटले महा कहतां ने मोटो.

अध्यात्मगीता.

३

मोह रूप पुर कहेतां जे नगर, तेहनें भेटवानें जिनवाणी केहबी छे ? के बज्जपाणि कहेतां इंद्र समान जाणवी एटले जिम वज्रे करीने इंद्र असुरादिकना नगर प्रते विदारे तिम. इहां जिनेश्वर देवनी वाणी रूप बज्जे करी सित्तेर कोडाकोड मोहनी कर्म रूप स्थित छै तेहने विदारी, एक कोडाकोडिनी मांहिली पासे आणी मेले. ए परमार्थ. एटले वली जिनवाणी केहवी छै ? के गहन भमफंद छे-दन कृपाणी. एटले गहन कहेतां जे आकरी, एहवी भवरूप फंद कहेतां जे अटवी. छेदवा नें जिनवाणी केहवी 🗟 ? के कौवाड़ी समान जाणवी ॥ १ ॥

ध अध्यातमगीता.

॥ चाल सुरती महिनानी ॥
द्रव्य अनंत प्रकाशक, भासक तस्व
स्वरूप । आतम तस्व विबोधक,
शोधक सच्चिद्र्प ॥ नय निक्षेप
प्रमाणे, जाणे वस्तु समस्त । त्रिकरण योगे प्रणमुं, जैनागम सुप्रशस्त ॥ २ ॥

अर्थः—वली जिनवाणी केहवी छे ? के द्रव्य अनंत प्रकाशक. एटले द्रव्य अनंत कहेतां उदय भावने जोगे करी जीव अजीव रूप अनंता द्रव्य जगन्नयने विषे रह्या छे, ते-हने जिनवाणी केहवी छे ? के प्रकाशना कर-णवाली छे. अने भासक तत्व स्वरुप एटले

अध्यात्मगीताः

Ġ,

भासक कहेतां आत्म तत्वना भासननी कर-णवाली है. आतम तत्व विवोधक शोधक सचिद्रपः एटले वली जिनवाणी केहवी छै ? के औतम तत्त्व विवोधक कहतां आतम तत्त्वना बोधनी करवावाली छे एढले जिनवाणी सांभलतां थकां आत्मा बोध बीजनी पाप्ति पते पामे अने वली जिनवाणी केहवी छे ? के शोधक सचिद्रप. एटले शोधक सचिद्रप कहे-तां ज्ञान दर्शन चारित्र आदि अनंत ग्रण आत्माने विषे शक्ति पणे रह्या छे तेहने जिन-वाणी केहवी छे ? श्रद्धनी करवावाली जाणवी. जिम सोनाने विषे मेल रहा। छे ते सोनो. अग्निने जोगे करी शुद्ध थाय तिम, आतमा ने विषे कर्म रूप मेल रह्यो छे ते आतमा, जिनवाणीने जोगे करी श्रद्ध थाय छे. ए पर-

६ अध्यातमगीता.

मार्थ जाणवो. नयनिक्षेप प्रमाणे जाणे वस्तु समस्त. एटले वली जिनवाणी के हवी है ? के नय कहतां नेगमादि सात नये करी, अने निक्षेप कहेतां नामादि च्यार निक्षेपे करी अने प्रमाणे कहेतां प्रत्यक्ष परोक्ष वे प्रमाणे करी, जिनवाणी केहवी छे ? के समस्त वस्त पदार्थनां जाणपणाना करणवाली है. त्रिकरण योगे प्रणम्नं, जैनागम सुप्रशस्त एटले अन्य-मतिना शास्त्र छे ते तो अपशस्त छे, अने जिनमतिना आगम छे ते प्रशस्त छे. एहवो जैनागम, तेहने त्रिकरण जोगे कहेतां मने करी, वचने करी, कायाये करी प्रणमूं कहेतां नमस्कार प्रति करूं छं ॥ २॥ इति श्री जिन-वाणीने नमस्कार जाणवा ॥

अध्यात्मगीता.

3

हवे अध्यात्मगीतानो उपदेश करचो ते मुनिप्रति ओल्लखावे छे. एटले अध्यात्मगीताना उपदेशक, ते मुनि केहवा छे ?

ढाल:—

जिणे आतमा ग्रुद्धताये पिछाण्यो। तिणे लोक अलोकनो भाव जाण्यो॥ आत्मरमणी मुनि जगवदीता। उपदिश्यूं तेणे अध्यात्मगीता ॥३॥

अर्थः--एटले वली ए मुनि केहवा छै ? के जिणे आतमा शुद्धताये पिछाण्योः एटले जिणे पोताना आतमाने शुद्ध रीते पिछाण्यो कहेतां जाण्यो ओल्ह्यों छै. तिणे लोका-लोकनो भाव जाण्यो, एटले ते मुनिये लोका-

८ अध्यातमगीताः

लोकना भाव प्रत्यक्षपण जाण्या दीठा. आतमरमणी मुनि जगवदीता. एटले वली ए मुनि केहवा छै ? के आतमरमणी कहेतां जिणे पोताना आतम स्वरूपनेविपै सदा काल रमण प्रति करची छे एवा म्रनि कहेतां जे म्रनि, अने जगवदीता कहतां जगत्त्रयने विषे चावा छे. उपदिश्यं तेणे अध्यातमगीता. एटले उपदिक्यू कहेतां ते मुनिय अध्यात्म-गीता नो उपदेश पते करचो छै. कर्चा कहे ह्रं कर्त्तों नथी॥ ३॥

चालः—

द्रव्य सर्वना भावनो जाणग पासग एह। ज्ञाता, कर्त्ता, भोक्ता, रमता,

अध्यात्मगीता.

९

परणित गेह ॥ ब्राहक, रक्षक, व्यापक, धारक धर्मसमूह। दान, लाभ, बल, भोग उपभोगतणो जे व्यूह॥ ४॥

अर्थ:—एटले वली ए मुनि केहवा छे ?
के द्रव्य सर्वना भावना जाणग पासगएह.
एटले द्रव्य सर्व कहेतां धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आदि षट द्रव्यना भावना जाणग
कहेतां भिन्न भिन्न प्रकारे करी जाणे छे, अने
पासग कहेतां देखे छे. ज्ञाता, कर्ता, भोक्ता,
रमता, परणितगेह. एटले वली ए मुनि
केहवा छे ? तोके ज्ञाता कहतां ज्ञाने करीनें
अनेक ज्ञेय पदार्थने जाणे छे, अने पोताना

आत्म स्वरूपने पिण जाणे हे. अने वही ए म्रनि केहवा छे के ? कर्चा कहेतां शुभाश्चभ रूप विभाव दशाना अकर्ता छै, अने पोता-नी ज्ञानादि अनंत ग्रण रूप जे लक्ष्मी तेहना कर्ता है. अने वली ए म्रानि केहवा है के ? भोक्ता कहेतां शुभाश्चभ रूप पर पुद्रलना भोग थकी रहित छै, अने पोताना ज्ञानादि अनंत गुण रूप जे पर्याय तेहना भोगने विषे सदा काल निरंतरपणे वर्ते छे. अने वली ए मनि केहवा छै ? रमता परणित येह. एटले रमता परिणित गेह कहतां पोतानी स्वपरणति रूप गेह कहे-तां जे घर, तेहनें विषे सदा काल निरंतर पणै जेणै रमण प्रति करचो छे, पिण पर पर-णतिमां पेसी रमण प्रते करता नथी. ग्राहक,

रक्षक, व्यापक, धारक धर्मसमृह, एटले धा-रक धर्मसमूह कहेतां ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि अनंत गुण रूप जे धर्म पोतानी आत्म सत्ता विषे रह्यो छै. देहना ब्राहक कहेतां जेणे ग्रहण पति करचो है. अने वली ए मनि के-हवा छे ? तो के रक्षक कहेतां ते धर्मनी रक्षा पते करे छे. अने वली ए सनी केहवा छै ? के न्यापक कहेतां तेह धर्मनें विषे सटा काल व्यापी रहा छै. टान, लाभ, वल, भोग, उप-भोग तणो जे व्यह. एटले वली ए मनि के-हवा छै ? के जेहनें दानादिक पांच लब्बिनो **च्युह कहेतां** समुदाय प्रते प्रगच्यो छे. त्यारे (शिष्य कहे छे के) दानादिक पंचलव्यि ते इयुं कहिये ? त्यारे (गुरु कहे) भी शिष्य !!!

दानअंतराय कर्ष क्षय गयो त्यारे अनंतो टान प्रगट्यो । १ । अने लाभ अंतराय कर्म क्षय गयो त्यारे अनंतो लाभ प्रगटचो । २ । अने भोग अंतराय कर्म क्षय गयो त्यारे अनंतो भोग पगटचो । ३ । अने उपभोग अंतराय कर्म क्षय गयो त्यारे अनंतो उपभोग मगटचो । ४ । अने वीर्यअंतराय कर्भ क्षय गयो त्यारे अनंतो वीर्थ प्रगटचो । ५ । त्यारे (शिष्य कहे छेके) ढान ते कोने दिये छे? अने छाभते इयानो थयो ? अने भोग ते इयं भोगवे छे ? अने उगभोग ते इयुं कहिये ? अने वीर्य किहां फोरवे छे (त्यारे गुरु कहे) भो शिष्य! दान पोताना ज्ञानादि अनंत गुणनें विषे दीये छै अने लाभ पोताना स्वरूपनो

१३

थयो. अने भोग कहेतां पोताना ज्ञानादि अनंत गुण रूप जे पर्याय तेहनो समे समे अनंतो भोग भोगवे छे. अने उपभोग ते पोताना गुणनो कहिये. वीर्य पोताना ज्ञानादि अनंत गुणने विषे फोरवे छे इति सामान्य प्रकारे दानादि पंच लब्धिनो विचार जाणवो ॥ ४॥ एणी रीते श्रीअध्यात्मगीताना प्रकाशकरूप कर्त्तानी स्तुति करी. हये कर्त्ता, शिष्य उपर छुपा करी साते नये जीवनो स्वरूप प्रति ओल्खावे छे:—

ढाल:--

संघहे एक आया वखाण्यो । नैगमे अंशथी जे प्रमाण्यो ॥

दुविध व्यवहार नय वस्तु विह्ने । अग्रुद्ध विं ग्रुद्ध भासन प्रपंचे॥५॥

अर्थः — संग्रहे एक आया वखाण्यो क-हेतां संग्रह नयना मतवालो सत्तानो ग्रहण करे छै. एटले सर्व जीव सत्ताये एक रूप सरीखा छै. माटे संग्रह नयने मते सर्व जीव सत्ताये एक रूप जाणवा. अने नैगमे अंशशी जे प्रमाण्यो. एटले नैगमै अंसथी जे प्रमाण्यो कहेतां, नैगम नयना मतवालो एक अंश ग्र-हीने सर्व वस्तुनो प्रमाण प्रते करे छे. माटे सर्व जीवना आड रुचक प्रदेश, सदा काल सिद्ध समान निरावरणपणे वर्ते छे. एटले नैगम नयने मते अंशयकी सर्व जीव एक रूप

१५

सरीखा जाणवा. दुविध व्यवहार नय वस्त विहचे. एटले व्यवहार नयना मतवालो वैह-चण करीने वोल्यो के एम नहिं: जीव ना बे पकार जाणवा. अश्रुद्ध विश्व श्रुद्ध भासन प-पंचे एटले एक अशुद्ध प्रकारे अने बीजा शुद्ध प्रकारे. एटले ए अशुद्ध शुद्ध रूप भासन करवा जाणपणारूप ओलखाण करवा सारू. वैहचण करी दिखाडे छे. एटले जीवना बे भेद-एक सकल कर्म क्षय करी लोकने अंते विराजमान ते सिद्ध, अने वाकी बीजा संसारी ते संसारी ना वे भेट--एक अयो-गी ने बीजा सयोगी. एटके[,] चउदमा गुण स्थानना जीव ते अयोगी, वाकी बीजा स-योगी ते सयोगीना वे भेट-एक केवली.

१६

अध्यातमगीताः

बीजा छदमस्थः एटले तेरमा गुणस्थानना जीव ते केवली. बाकी वीजा छद्मस्थः एटले छन्नस्थना वे भेद-एक क्षीण मोही, अने वीजा उपसंत मोही. एटले वारमा गुणस्थानना जीव ते श्रीण मोही, अने वाकी बीजा उपसंत मोही ते उपसंतमोहीना वे भेद-एक अकषायी अने बीजा सक्तषायी. एटले अग्यारमा गण-स्थानना जीव ते अकपायी, अने वाकी बीजा सक्तषायी. ते सक्तषायीना वे भेद-एक सूक्ष्म कषायी अने बीजा बादर कपायी. एटले दसमा गुणस्थानना जीव ते सुक्ष्म कषायी अने बाकी बीजा सर्व बादर कपायी ते बादर कषायी ना वे भेद-एक श्रेणि प्रति-पन्न अने बीजा श्रेणी रहित. एटले आठमा

१७

नवमा गुणस्थानना जीव ते श्रेणि प्रतिपन्न अने बाकी बीजा श्रेणिरहित. ते श्रेणिरहितना वे भेद—एक अप्रमादी अने वाकी बीजा सर्व प्रयादी. एट्छे सातमा गुण स्थानना जीव ते अवगादी, अने बीजा सर्व प्रमादी, ते प्रमादीना वे भेट-एक सर्व विरति अने बीजा देश विरति. ते देश विरतिना वे भेद-एक विरति परिणामी अने बीजा अविरति परिणामी.ते अविरतिना वे भेद-एक अविरति सम्यक्त्वी अने बीजा मिध्यात्वी. ते मिध्या-त्वीना वे भेद-एक भव्य बीजा अभव्य. ते भव्यना वे भेड़--एक गंठी भेडी अने भीजा जीव गंठी अभेदी. एटले एणी रीते व्यवहार नयना मत वालो जेहवो देखे तेहवा भेद

विहचे ॥५ ॥

चालः--

अशुद्धपणे पणसयतेसठी भेद प्रमाण। उदय विभेदे द्रव्यना भेद अनंत कहाण॥ शुद्धपणे चेतनता प्रगटे जीव विभिन्न। क्षयोपशमिक असंख क्षायिक एक अनन्न॥ ६॥

अर्थ:—वली व्यवहार नयने मते अ-शुद्ध प्रकारे करी जीवनो स्वरूप ओलखावे छै. अशुद्धपणे पणसयतेसठी भेद प्रमाण, एटले पणसयतेसठी कहतां जीवद्रव्यना पांच-सैने त्रेसठ भेदनो प्रमाण जाणवो. उदय

१९

विभेदै द्रव्यना भेद अनंत कहाण. एटले उदय विभेदे कहतां उदय भावनें जोगे करीने जोतां तो द्रव्यना भेट अनंत कहाण केहतां जीव द्रव्यना अनंता भेद जाणवा. शुद्धपणे चैतनता प्रगटे जीव विभिन्न एटले श्रद्धपणे केहतां शुद्ध प्रकारे करीनें. अने चेतनता कहेतां जीवनी चेतना, अने प्रगटे कहेतां निपजे, अने विभिन्न कहेतां अभेदातमपणे करी जाणवी. क्षयोपसमिक असंख क्षायिक एक अनन्न. एटले क्षयोपसमिक कहेतां क्षयो-पसम भावना असंख कहेतां असंख्याता भेद कहिये. अने क्षायिक एक अवज्ञः एटले क्षायिक कहेतां क्षायिक भावनो एक भेद जाणवो ॥ ६ ॥

ढालः-

नामथी जीव चेतन प्रबुद्ध । क्षेत्रथी असंख देशी विद्युद्ध ॥ द्रव्यथी स्वग्रुण पर्याय पिंड । नित्य एकत्व सहजी अखंड ॥७॥

अर्थः—हवे च्यार निक्षेषे करी जीवनो स्वरूप ओळखावे छे. नामथी जीव चेतन पबुद्ध एटळे नाम थकी जीवन चेतन कहिये. एटळे चेतना ळक्षणो ते जीव. चेतना ते द्युं के ज्ञान, ह्यान चारित्र, तप, वीर्य, अने उपयोग ए जीवनी चेतना अने पबुद्ध कहेतां एहवी रीते जाणवी. क्षेत्रथी असंख देशी विशुद्ध.

28

एटले क्षेत्रथकी कहेतां जीवने स्वक्षेत्र रूप असंख्यद्वी कहिये. अने विश्वद्ध कहेतां शुद्ध निर्मलपणे करी जाणवो. द्रव्यथी स्वगुण पर्याय पिंड. एटले द्रव्य थकी कहेतां जीव द्र-व्यने स्वगुणने स्वपर्याय तेहनोज पिंड कहिये. नित्य एकत्व सहजी अखंड. एटले नित्य कहेतां भावथकी जीव सदा काल शास्वतो नित्य वर्ते छे. अने एकत्व पणे वर्ते छे. अने सहजो अखंड कहेतां सहज थकी जीव अखंड छे. कोईनो छेचो छेदाय नहीं, भेघो भेदाय नहीं, निर्लेप अखंड सदा काल शास्त्रतो छै 11 9 11

चालः--

रुजु सूर्ये विकल्प परिणामी जीव

२२

अध्यात्मगीता.

स्वभाव। वर्तमान परिणतिमय व्यक्ते प्राहक भाव॥ शब्द नये निज सत्ता जोतो इहतो धर्म। शुद्ध अरूपी चेतन अणग्रहतो नव कर्म॥ ८॥

अर्थः — रिज सुये विकल्प परिणामी जीव स्वभावः एटले रिज सुये कहतां ऋजुमूत्र नयने मते अने विकल्प परिणामी जीव स्वभावः एटले जीव नो स्वभाव कहेतां जीव विकल्प रूप परिणामी भावने ग्रहे हो. वर्तमान परणतिमय व्यक्ते ग्राहक भावः एटले वर्तमान कहतां वर्तमान समय जे जीवनो जेहवो जपयोग वर्ते ते समय ते जीवने, ए नयना मत वालो तेहवो कहि बोलावे शब्द नये

२३

निज सत्ता जोतो इहतो धर्म, एटले शब्द न-यने मते निज सत्ता केहतां पोतानी आत्म सत्तानं जोतो, अने इहतो धर्म केहता ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि अनंतो धर्म पोतानी आ-त्म सत्तान विषे रह्यो छे तेहनी प्रगट करवानी इहा (इच्छा) करतो. शुद्ध अरूपी चेतन अणग्रहती नव कमे. एटले शुद्ध कहतां निर्मल कमेरूप मलथकी रहित. अने अरूपी कहतां पुद्गलादि विभाव दशाना रूप थकी रहित, अने चेतन कहतां ज्ञानादि चेतना रूप लक्षण करीने सहित, अणग्रहतो नव कर्म. एटले अ-णग्रहतो नव कर्म कहतां जे समय जे जीवनो एहवो उपयोग वर्ते ते जीवनें नवा कर्मनो ग-हण न जाणवो ॥ ८॥

રક

अध्यात्मगीता.

ढालः—

इणि परे शुद्ध सिद्धात्म रूपी । मु-क्त पर शक्ति व्यक्त अरूपी ॥ सम-किती देशवति सर्व विरती । धरे साध्य रूपे सदा तस्व श्रीति॥९॥

अर्थ:—एटले वली जीव केहवो छै ? के इग परे शुद्ध सिद्धात्म रूपी. एटले एणी परे शुद्ध कहतां निर्मल कर्म रूप लेप थकी रहित छे अने सिद्धात्मरूपी कहतां निश्चय नयने मते जीव सत्ताये सिद्ध समान अरूपी छे. मुक्तपर शक्त व्यक्त अरूपी एटले मुक्त पर कहतां जे समय जे जीवनो एहवी रीते शुद्ध भासन रूप उपयोग वर्ते ते समय ते

ર્લ્

जीव मुक्तपर कहतां कर्मथकी मुकाय छै. अने एहवी रीते कमथकी मुकाय त्यारे शक्त, व्य-क्त. अरूपी एटले शक्त कहतां अनंता ग्रण पोतानी आत्मसत्ताने विषे शक्ति पणे रहा **छे, ते व्यक्त कहतां व्यक्तिरूप अरू**पी पणे प्रगट थता जाय छे. एटले ए किहा किहा जीव ? एहवा रीते जाणपणो कोने थयो ? एडवी रीते भासन कोनें थयो ? एडवी रीते रमण कोण करे छे ? के सम्यकत्वी देश विरति सर्वे विरति. एडले सम्यक्त्वी कहतां चोथा गुण स्थान वाला जीव, अने देश विरति कहतां पांचमा ग्रण स्थान वाला जीव, अने सर्व विरति कहतां छटा सातमां गुण स्थान बाला जीव, तेहनें एहवी रीते

जाणपणा रूप भासन रमण थयो छै. अने धरे साध्य रूप सदा तत्व पीति. एटले धरे साध्य रूपे कहेतां पोतानो आत्मतत्त्व निरावरण करवा जोवे जो त्यां जेहनी पीति पतें लागी छै, अने एहवी रीते पीति पतें लागी त्यारे ॥ ९ ॥

चाल:--

समभिरूढ नये निरावर्णी ज्ञाना-दिक ग्रण मुख्य। क्षायिक अनंत चतुष्टय भोगी मुग्ध अलक्ष ॥ एवं भूते निर्मल सकल स्वधर्म प्रकाश। पूर्ण पर्याय प्रगटे पूर्णशक्ति वि-लास ॥ १०॥

२७

अर्थ:-समभिरूढ नये निरावणी जा-नादिक गुण ग्रुख्य. एटले समभिरूढ नयनें मते शुक्ल ध्यान रूप अग्निये करी घाति कर्मने क्षये. निरावणीं कहेतां कर्मरूप आवरणने अभावे, ज्ञानादिक अनंत गुण रूप लक्ष्मी पर्ते पगटे. अने क्षायिक अनंत चतुष्ट्य भोगी मुग्ध अलक्ष. एटले क्षायिक अनंत चत्रष्ट्रय कहेतां अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंत चारित्र, अनंतवीर्य, ए चार अनंत चतुष्ट्यरूप क्षायिक भावे प्रगटे. अने भोगी कहेतां तेहना भोगने विषे सदा काछ निरंतर पणे जेहनो उपयोग पर्ते वर्ते छे. अने मुख कहेतां जे भोला लोक, अने अलक्ष कहतां तेहना लख्यामें ए स्वरूप न आवे, एवंभूते

निर्मेल सकल स्वधर्म प्रकाश. एटले एवंभृत नयने मते निर्मेल कहेतां कर्मरूप मल थकी रहित, अने सकल कहेतां सम्पूर्ण, अने स्व कहेतां पोतानो. अने धर्भ कहतां ज्ञानादि अनंतगुणरूप जे धर्म, अने प्रकाश कहेतां तैहनो सत्तागतनेविषे प्रकाशपतें प्रगटे. अने एहवी रीते ज्ञानादि अनंत गुण धर्मनो प्रकाशपतें प्रगट्यो त्यारे. पर्याय प्रगटे पूर्ण शक्ति विलास. एटले पूर्ण कहेतां संपूर्ण अने शक्ति कहेतां पर्याच रूप शक्तिना विलासप्रतें भोगवे ॥ १० ॥

ढाल:---

एम नय भंग संगे सनूरो। साधना

२९

सिद्धता रूप पूरो ॥ साधक भाव त्यां लगे अधूरो । साध्य सिद्धे नहीं हेतु सूरो ॥ ११ ॥

अर्थः—हते साध्य साधन रूप जाण पणो करवा सारू जीवनो स्वरूप ओलखावे हे, माटे एम नय भंग संगे सन्रो. एटले एम नय कहेतां नैगमादि सात नयरूप नैगम १ संग्रह २ व्यवहार ३ रुजुसूत्र ४ बाब्द ५ समिथिरूट ६ अने एवंभूत ७ एणी रीते साते नये करी, अने तेहना अहावीस उपनय कहतां नेगमना त्रणभेद एटले प्रथम वर्तमाने अतीत आरोपणी नैगम १, अने वर्तमाने अनागत आरोपणी नैगम २ अने ३७

अध्यात्मगीता.

वर्त्तमान नैगम ३ अने संग्रह नयना वे भेद -एक सामान्य संग्रह ४ अने वीजो विशेष संग्रह ५ अने व्यवहार नय ना वे भेद-एक शुद्ध व्यवहार ६ अने वीजो अशुद्ध व्यवहार ७ अने रुजुसूत्र नयना बे भेद-एक सुक्ष्म रुज़ ८ अने वीजो बादररुज़ ९ शब्दनयनो एक भेद १० समभिल्ह नयनो एक भेद ११ अने एवंभूत नयनो एक भेद १२ हवे दश द्रव्यास्तिक नय कहतां नित्य द्रव्यास्तिक १३ एक द्रव्यास्तिक १४ सतुद्रव्यास्तिक,१५ वक्तव्यद्रव्यास्तिक १६ अशुद्ध द्रव्यास्तिक १७ अन्वय द्रव्यास्तिक १८ परम द्रव्यास्तिक १९ शुद्ध इच्योस्तिक २० सत्ता इच्यास्तिक २१ परमभावद्रव्यास्तिक २२ हवे पर्यायास्तिक

38

नयना ६ भेद कहे छै-एटले प्रथम द्रव्यपर्याय २३ द्रव्य व्यंजन पर्वाय २४ गुण पर्याय २५ गुणव्यंजनपर्याय २६ स्वभाव पर्याय २७ अने विभाव पर्याय २८ एणी रीते अटावीसडप-नयनो स्वरूप जाणवो. अने भंग कहतां एक एक नयना सो सो भांगा कहतां ७ नयना सातसो (७००) भांगा जाणवा. अने संगे कहतां तेहने संगे करीने सनूरो कहतां जी-वने दीपतो कहिये. अने साधना सिन्दता रूप पूरो. एटले जीव ने पूरो क्यारे कहिये ? के साधना कहतां बुद्ध व्यवहार नयने मते चोथा गुणस्थानथी मांडी यावत तेरमा चड-दमा गुणस्थान पर्यंत साधक भावे करी नि-श्रय नयने मते सिद्धिरूप कार्य प्रतें नीपजे

त्यारे जीवने पूरो कहिये. अने साधक भाव त्यां लगे अध्रो. एटले जीवने अध्रो केम कहिये ? के सायक भाव कहतां शब्द समभिरूढ नयने मते देशविरति सर्वविरति रूप साधक भाव छे त्यांछगै जीव ने अध्रो कहिये. अने साध्य सिद्धे नहीं हेत सरो. एटले साध्य कहतां पोतानो आत्मा निरावर्ण करवा रूप जोवे जो अनेसिद्ध कहतां श्रद्ध निश्चय नय सिद्धि रूप काय प्रतें नीपजै. त्यारे नहीं हेतु सूरो एटले नहीं हेतु कहतां जीवनें साधन रूप कोई हेत नो प्रयोजन न रह्यो ॥ ११ ॥

चालः-

काल अनादि अतीत अनंते जे

पर रक्त । संगांगी परिणामे वर्तें मोहाशक्त ॥ पुद्गल भोगे रींइयो धारे पुद्गल खंध । पर कर्ता परि-णामे बांधे कर्म नो बंध ॥ १२ ॥

अर्थः—हिंवै जीवनो स्वरूप निगोदथकी मांडीनें देखाँव छे. एटले काल अनादि
अतीत अनंते जे पररक्त एटले अतीत कहतां
अनादि काल नूं जीवनें पर पुद्गलादि विभाव दशानें विषे रक्त परिणाम वर्ते छे. तेस्येणे करीनें ? तो के संगांगी परिणाम वर्तें मोहाशक्त. एटले संगांगी कहतां जीवें करचो
संग, त्यारे मोहै दीधो अंग एटले संगांगी
परिणाम थया तेणे करीनें स्यो विगाड़ थयो ?

इप्ट

अध्यात्मगीता.

तोके पुद्गल भोगे रीइयो धारे पुद्गलं खंध. एटले पुद्रगल भोगे रींइयो कहतां पुद्रगलना भोग नें विषे जीव रींह्यो, एटल जिम २ पुदगलना भोग मिले तिम तिम जी-वनें अधिक २ रींझ उपजे अने एहवी रीते पुदगळना भोगनें विषे रींझ उपजी त्यारे, धारे पुद्गल खंध. एटले धारे पुद्गल खंध कहतां पुद्गलना खंघ ने मेलवानी वंच्छारूप प्रणाम प्रतें वर्ते. अने एहवी रीते पुद्गलना खंध नें मेलवानी वंच्छा रूप प्रणाम वर्त्या त्यारे, परकर्ता परिणामे बांधे कर्म नो बंध. एटले पर कर्ता कहतां जीव पर नो कर्ता थयो अने एहबी रीते पर नो कर्त्ता थयो त्यारे बांधे कमे बंध. एटले बांधे कमे नो बंध

રૂહ્

कहतां जीव कर्म रूप पुद्गलना वंध प्रते वांध-वा मांडचा ॥ १२ ॥

ढाल:—

बंधक वीर्य करणे उदेरे। विपाकी प्रकृति भोगवे दळ विखेरे॥ कर्म उदयागता स्वयुण रोके। युण वि-ना जीव भवो सव ढोके॥ १३॥

अर्थ:—वंधक वीर्य करणे उदेरे. एटले वंधक कहतां जीन नता नवा कर्मनां वंध प्रतें केम बांधे ? तोके वीर्य करणे उदेरे. एटले वीर्य कहतां पराक्रम, अने करण कहतां इंद्री, अने उदेर कहतां तहनी पेरणाये करीनें,

३६

अध्यातमगीता.

विषाकी प्रकृति भोगवे दल विखेरे. एटले विपाकी कहतां श्रभाश्रभ प्रकृति रूप विपाक ना दलीया जीवनी सत्ताये रह्या छे, ते उटे आवे ते भोगवी नें विखेर कहतां खेरवे. अने तेहर्ने विषे परिणाम रूप मननी चिकासे करी नवा कर्मना बंध प्रते बांधे, अने एहवी रीते नवा कर्मना बंध पतें बांध्या त्यारे. कर्म उदय उदयता स्वगुण रोके. एटले कर्म उदय कहतां एहवी रीते ते कर्म नें उदय करी नें स्व कहतां पोताना ग्रण तेहनें रोके कहतां ढांके. अने एहती रीते पोताना गुण नें ढांके त्यारे गुण विना जीव भवोभव होके. एटले गुण विना कहतां गुण विनानो जीव निर्गणी थयो त्यारे भवोभव ने विषे ढोके कहतां

30

आथड़े (भ्रमण करे) त्यारे शिष्य कहे केम आथड़े ? ॥ १३ ॥

चालः—

आतम गुण आवर्णे न यहे आतम धर्म । याहक शक्ति प्रयोगे जोडे सर्म ॥ पर लाभे पर भोग ने योगे थाये पर कर्त्तार । एह अनादि प्रवर्त्ते वाधे पर विस्तार ॥ १४ ॥

अर्थ:—एटले आत्म गुण आवर्णे न प्रहे आत्म धर्मः एटले आत्म गुण कहतां एहवी रीते पोताना आत्मगुणने कर्म रूप आवर्ण पते लाग्यो, त्यारे न ग्रहे आत्म धर्मः

एटले न ग्रहे आत्म धर्म कहतां ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि अनंतो धर्भ आत्माने विषे रह्यों छै, तेहनो ग्रहण पर्ते न करे अने एहवी रीते आत्मगुणनो ग्रहण पतें न करे त्यारे, ग्राहक शक्ति प्रयोगे जोडे पद्रल सर्म. एटले ग्राहक शक्ति कहतां आत्मानी ग्राहकता रूप जे शक्ति. अने प्रयोगे कहतां तेणे करीने जोडे पुद्रल सर्म. एटले जोडे पुद्रल सर्म कहतां कर्मरूप पुद्रलना स्वंध प्रते जोड्वा मांड्या, अने एहवी रीते कर्मरूप पुद्रगलना संघ प्रते जोडवा मांड्या त्यारे, परलाभे पर-भोगने जोगे थाये पर कर्चार, एटले परलाभे कहतां श्रभाश्रभ रूप पर पुद्रलना मिल्या तेहने विषे छाभ पणो मान्यो १ अने

39

दान कहतां श्रभाश्रभ रूपे पर पुद्रलनो दान देईने तेहने विषे दान पणी मान्यो २ अने भोग कहतां श्रभाश्रभ रूप पर पद्रलना भोग मिल्या, तेहने विषे भोगपणो मान्यो ३ अने उपभाय कहतां शुभाशुभ रूप पर पुद्रगलना उपभोग मिल्या, तेहने विषे उपभोग पणो मान्यो ४ अने ए दानादिक चार लब्धिने विषे वीर्यनी शक्ति हती ते फोरववा मांडी. एटले ए पंच लब्धि स्परूप अनुजाइ पणे जीव भूरयो. त्यारे पर अनुजाइ पणे अवली (उलटो) फोरववा मांडी. अने एहवी रीते अवली फोरववा मांडी, त्यारे जोगे थाये पर कर्तार एटले जोगे कहतां तेहने जोगे करीने जीव परनो कर्त्ता थयो अने परनो कर्त्ता

थयो त्यारे, एह अनादि मवर्ते वाधे पर विस्तार. एटले एह अनादि कहतां एहवी रीते अनादि कालनी जीवने अवला मवर्ती, थई त्यारे वाधे पर विस्तार, एटले वाथे पर विस्तार कहतां जीवने कर्म रूप पर पुद्रगलनो विस्तार मते वधवा मांड्यो, त्यारे शिष्य कहे कर्मरूप पर पुद्रलनो विस्तार मते केम वधवा मांड्यो ? ॥ १४ ॥

ढालः--

एम उपयोग वीर्यादि रुब्धि। पर भाव रंगी करे कर्म दृद्धि॥ पर दया-दिक यदा सुह विकल्पे। तदा तदा पुण्य कर्म तणो बंध कल्पे॥ १५॥

કર

अर्थ:—एटले एम उपयोग वीर्यादि लब्धि कहतां एहवी रीते वीर्यादि पंचलब्धि ने विषे जीवनो अवलो उपयोग वर्त्यो. अने एम अवलो उपयोग वर्त्यों त्यारे पर भाव रंगी करे कर्म दृद्धि. एटले पर भाव रंगी कहतां जीव पर स्वभाव रूप विभाव दशा ने विषे रंगाणो अने एहवी रीते पर स्वभाव रूप विभाव दशाने विषे रंगाणो त्यारे करे कर्म दृद्धि कहतां ते जीवे नवा नवा कर्मनी वृद्धि प्रतें करवा मांडी. अने पर दयादिक यदा सह विकल्पे. एटले यदा कहतां जेवा रे जीवनो पर दयादि श्रभ विकल्प थयो। तदा प्रण्य कर्म तणो वंध कल्पै. एटले तदा कहतां तिवारे जीव प्रण्य रूप कर्मनो वंध प्रतें

बांधे, अने एहवी रीते शुभाशुभ रूप कर्मना बंध पतें बांध्या त्यारे ? ॥ १५ ॥

चालः—

तेहिज हिंसादिक द्रव्याश्रव करतो चंचल चित्त । कटुक विपाकी चेतन मेलै कर्म विचित्त ॥ आत्म गुण नें हणतो हिंसक भावे थाय । आत्म धर्मनो रक्षक भाव अहिंसक क-हाय ॥ १६ ॥

अर्थः—तेहिज हिंसादिक द्रव्याश्रव करतो चंचल चित्त. एटले तेहिज हिंसादि कहतां ते जीव पहिले गुणस्थान अणा उप-

83

योगे मिथ्यात्व भावे, एडदी रीते हिंसादि आश्रव रूप प्रणामे चंच्छ स्वभावे शुभाशुभ रूप आश्रवने दर्लाये करी पोताना गुणने ढांके कहतां हणे, अने एहवी रीते पोताना गुणने हण्या त्यारे, कडुक विपाकी चेतन मेरे कर्म विचित्र. एटले कटुक विपाकी कहतां ते जीव कड़वा विपाक मतें भोगवै: अने मेले कर्म विचित्र एउले मेले कर्म विचित्र कहतां जीव विचित्र विचित्र प्रकारना कर्म प्रते मेळवा (ग्रहण करवा) मांड्या, अने एहवी रीते कर्भ मतें मेलववा मांड्यां त्यारे, आत्म गुणने हणतो हिंसक भावे थाय. एटले आत्म गुणने हणतो कहतां एहवी रीते ने पोताना आत्माना गुगने हणे तेहने भाव

हिंसा लागे. अँने आत्म धर्मनो रक्षक भाव अहिंसक कहाय. एटले आत्म धर्मनो रक्षक कहतां शुभाशुम विभाव दशा रूप पर पुद्ग-लनी वंच्ला थकी रहित, अने एक पोतानी आत्म सत्ताये ज्ञानादि अनंतगुण रूप धर्म रह्यो छे, तेहनी रक्षा पते करे छे, ते जीवने भाव अहिंसक कहतां भाव दया कहिये. अने एहवी रीते भाव दया रूप प्रणाम बत्यां त्यारे?॥१६॥

इ।ल:---

आतम गुण रक्षणा तेह धर्म । खः गुण विध्वंसणा ते अधर्म ॥ भाव अध्यात्म अनुगत प्रवृत्ति । तेहथी होय संसार छित्ति ॥ १७ ॥

ઇલ

अर्थ:--आत्म गुण रक्षणा तेह धर्म. एटले धर्म कोने कहिये ? तोके एहवी रीतें जे पोताना आत्म गुणने निरावर्ण कहतां मगट करवानी वांच्छा रूप प्रणाम प्रते वर्ते है, अने जे गुण प्रगट्या है ते गुणनी रक्षा करे छे ते जीवनें धर्मी कहिये. अने स्वगुण विध्वंसणा ते अधर्म. एटले अधर्म ते कोनें कहिये तो के स्व कहतां पोताना गुण तेहनें विध्वंसणे कहतां कमें रूप आवर्णे करि हणें ते जीवर्ने अधर्मी कहिये. अने भाव आध्यात्म ुग्गत प्रवृत्ति. एटले भाव अध्यात्य कहतां अड के बाण पणो थयो है, एहत्री एहत्री रीते जहने चाण पणो थयो है, एहत्री रीते जेहन भासन थयो छै, एहवी रीते जे रमण करे छे, ते जीव ने भाव अध्यात्मी क-

हिये. अने एहवीरीते साव अध्यात्म रूप गुण प्रणम्यो त्यार, अनुगत बहुत्ति एटले अनुगत कहतां एहवा शिते जे फीताना आत्म स्वरूप में पवृत्ति कहतां रमण बतें करे छे. अने एहवी रीते रमण बतें करे त्यारे तेहथी होय संसार छिति. एटले ते जीव संसारनो छेह यहतां पार पतें पांमें त्यारे जिष्य कहे एहवी रीते संसारनो पार बतें केय पांचे ? १९०॥

चाल:---

एह प्रवोधनो कारण तारण सट्-गुरु संग। श्रुत उपयोगी चरणानंदी कर गुरु रंग॥ आत्म तत्वालंबी

८७

रमता आत्म राम। ग्रुद्ध स्वरूप नें भोगे जोगे जसु विश्राम॥ १८॥

अर्थ:-एटले एह प्रबोध कहतां एहवी रीते प्रतिबोध किहां पामीचे ? अने कारण कहतां एहवी रीते प्रतियोधनो कारण किहां मिले ? अने तारण कहतां एहवी रीते प्रतिबोध देईने संसार थकी कोण तारे ? तोके सद्गुरु संग. एटले सद्गुरु संग कहतां जे भला गुरु तेहनो संग करतां तेहनी सेवा कहतां, तेहनी भक्ति करतां संसार सम्रद्र नो पार पर्ते पामीयें. वली सद् गुरु केहवा छे तोके श्रुत उपयोगी चरणा-नंदी कर गुरु रंग. एटले श्रुत उपयोगी कहतां श्रुत ज्ञान नें विषे सदाकाल निरंतर पणे उप-

४८

अध्यात्मगीताः

योग जेहनो वर्ते छे. अने वली सद्गुरु केहवा के ? तोके चरणानंदी एटले चरणानंदी कहतां चारित्रने विषे सदा काल निरंतर पणे जेहनो आनंद पणो वर्ते छे: अने कर गुरु रंग. एटले कर गुरु रंग कहतां जो एहवा गुरुनिहार रंग लगावीयै तो संसार समुद्रनो पार पते पामीये. अने वली सद्गुरु केहवा छैं ? तो के आत्मतत्त्वालंबी रमता आत्म राम. एटले आत्म तत्त्वालंबी कहतां सदा काल निरंतर पणे जे पोताना आत्म स्वरूपना आलंबनने विषे वर्ते छै. अने वली सद्गुरु केहवा छै ? तोके रमता आत्म राम. एटले रमता आत्म-राम कहतां सदाकाल निरंतर पणे जे पोताना आत्म स्वरूपने विषे रमण प्रते करे है. वली

४९

सद्गुरु केहवा छै ? तो के शुद्ध स्वरूपने विषे भोगे जोगे जसु विश्राम एटले शुद्ध कहतां जे निर्मल कर्म रूप मल थको रहित एहवो पोतानो स्वरूप, अने भोगे कहतां तेहना भोगने विषे अने जोगे कहतां मन वचन कायाना जोगनो विश्राम पणो वर्ते छै. अने वली सद्गुरु केहवा छे ? ॥ १८॥

हालः—

सद्ग्रह जोगथी बहुल जीव। कोइ वली सहजिथ थइ सजीव ॥ आत्म शक्ति करी गंठिभेदी। भेद ज्ञानी थयो आत्म वेदी ॥ १९॥

अर्थ:—एटले बहुल कहतां घणा जीव एहवी रीते सद्गुरुना जोग मिल्या थकी सम्यक्तवनी प्राप्ति प्रते पामे, अने कोई वस्त्री सहजिथ थर सर्जाव. एटले कोइक जीव सहज थकी सजीव थइने चार प्रत्येक बुद्धनी परे पिण समकित पाँगें. पिण आत्मशक्ति करी गंठी भेदी. एटले जिहां गंठी भेद करवो तिहां तो पोताना आत्मानी शक्तिये अपूर्व करण रूप वीर्थे करीने जो गंठीने भेदीये तो समकितनी प्राप्ति प्रते पामीये. अने एडवी रीते समकितनी प्राप्ति प्रते पास्यो त्यारे. भेद ज्ञानी थयो आत्मवंदी. एटले भेदज्ञानी कहतां जीव अजीवनी ओळखाणे, स्व परनी वैंचग रूप ते जीवने भेदज्ञान प्रगटे. अने एहवी

५१

राते भेदज्ञान प्रगच्चो त्यारे ? तोके थयो आत्मवेदी कहतां पोताना आत्मानो स्वरूप प्रगट करवो तेहना वेदने विषे सदा काल निरंतर पणे उपयोग जेहनो वर्ते. अने एहवी रीते उपयोग प्रतें केम बत्यों ?॥ १९॥

चालः--

द्रव्ये गुण पर्याय अनंतनी थई पर-तीत । जाण्यो आत्म कर्ता भोका गृइ परभीत ॥ श्रद्धा योगे उपनो भासन सुनये सत्व । साध्याळंबी चेतना वळगी आत्म तत्व ॥२०॥

अर्थ:--एटले द्रव्ये गुण पर्याय अनंत नी थई परतीत एटले द्रव्य कहतां धर्मास्ति-

काय ? अधर्मास्तिकाय २ आकास्तिकाय ३ पुद्रलास्तिकाय ४ काल ५ अने जीव ६ ए छ: द्रव्य अने गुण पर्ध्याय कहतां तेहना अनंता अनंतागुण ने अनंता पर्याय तैहनो भासन कहतां जाणपणा रूप प्रतीत मतें मगटे, अने एहबी रीते मतीत मतें म-गर्टा त्या आत्म कर्चा भोक्ता गइ गर्टा त्या भारत कर्वा कहतां परभीत. एटले जाण्य, स्पार्थभ रूप घ्यवहार नयने मते जीवने रु विभाव दशानो कत्ती कहिये अने निश्रय नयने मते जिबने पोतानी ज्ञानादि अनेत ग्रण रूप जे छक्ष्मी तेहनो कर्चा कहिये अने भोक्ता कहता व्यवहार नयने मते जीवने श्रभाश्रभ रूप पर पुद्धलनो भोक्ता कहिये.

હે રૂ

अने निश्चय नये जीवने पोताना ज्ञानादि अनंत यु रूप जे पर्व्याय तहनी भोक्ता क-अनत शु. १००० निश्चय व्यवहार मये हिये अने एवी राव पोनाना आत्माने कर्ता भोक्ता प त्यारे, गइ पर भीतं, एटले गइ परभीत कहतां ते जीवनें भव ना भय प्रते टले, एटले भवना भय पते केम टल्या ? तोके अद्धा योगे उपनो भासन सनये सत्य. एटले श्रद्धा कहतां श्रद्धानें योगे अने स नय कहतां भले नये करीने सत्य भासन रूप प्रतीत प्रते प्रगरे. अने एहवी रीते सत्य भासन रूप प्रतीत प्रते प्रगदी त्यारे. साध्यालंबी चेतना बलगी आत्मतत्व. एटले साध्य कहतां पोतातो आत्मा निरावर्ण करवा रूप जेवे जो, अने

चेतना वलगी कहतां त्यां जेहनी चेतना मेतें लागी. अने एहवी रीते चेतना लागी त्यारे ? ॥ २०॥

ढाल:—

इंद्र चंद्रादि पद रोग जाण्यो। ग्रुद्ध निज सिद्धता धन पिछाण्यो॥ आत्म धन अन्य आपै न चोरे। कोण जग दीन वळी कोण जोरे॥ ११॥

अर्थः — इंद्र चंद्रादि पद रोग जाण्योः एटले इंद्र चंद्रादि कहतां इंद्र चंद्र आदि चक्र-वर्ती वासुदेवना, बळदेवना इंद्रीजनित एहलीक

લ્લ

जे सुख, तेहनें रोग समान करी जाणे. एटले पहवी राते इंद्री जनित पदलीक सखने रोग समान करी केम जाण्यां ? तो के शुद्ध निज सिद्धता धन पिछाण्योः एटले श्रद्ध कहतां जे निर्मल कर्म रूप मलथकी रहित, एहवो पोताना आत्मानो सिद्धि रूप जे धन. तेहने पिछाण्यो कहतां जाण्यो. एटले एहवी रीते पोताना आत्मानो सिद्धि रूप धन पर्ते ओल्रुखो त्यारे. आत्म धन न आपे न चोरे. एटळे आत्य धन कहतां पोताना आत्मानो ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि अनंत ग्रुण रूप जे धन, न आपे न चोरे. एटले न आपे कइतां ए को ईने आप्यो अपाय नहीं. अने न चारे कहतां ए कोईना लीभो लेवाय नहीं.

कौण जग दीन वली कोण जोरे एटले जगत में कोई दीन पिण नथी जे तेहने आपे, अने जगतमें कोई जोरावर पिण नथी जो खेंबी लेवे. एटले निश्चय नयने मते सर्वे जीव सत्ताये एक रूप सरीखा ज्ञानादि अनंत गुण रूप लक्ष्मीना घणी जाणवा एटले लाली मेरे लालकी, ज्यां देखूं त्यां लाल. (इसमं कौन है कंगाल?) तोकै दिलकी गांठ खोलत नहीं ताते फिरै कंगाल ॥ २१॥

चालः—

आत्म सर्व समान निधान महा सुख कंद । सिद्धतणा साधम्मीं सत्ताये गुण चृंद ॥ जेह स्वजाति

40

तेहथी कोण करे वर्ध वंघ। प्रग-ट्यो भाव अहिंसक जाणे ग्रुद्ध प्रबंध॥२२॥

अर्थ:—एटले आत्म सर्व समान कहतां सर्वे जीव सत्ताये एकरूप सरीखा सामान्य पणे करी जाणवा, अने निधान कहतां निश्चय नयने मते सर्वे जीव सत्ताये ज्ञान, दर्शन, चारित्र, रूप निधाने करीने सहित छे अने महा सुख कंद एटले महा सुख कद कहतां निश्चय नयने मते सर्वे जीव सत्ताये सुखना कंद कहतां मूल स्नाये सुखना कंद कहतां मूल स्नाये गुण हंद. एटले सिद्ध तणा साधर्मी कहतां निश्चय नयने मते सर्वे तणा साधर्मी कहतां निश्चय नयने मते सर्व

जीवनो धर्म सत्ताये सिद्ध समान एक रूप सरीखो करी जाणवी अने गुण दृंद कहतां निश्चय नयने मते सर्वजीव सत्ताये ज्ञान. दर्शन, चारित्र आदि अनंत गुण रूप दृंद कहतां जे समृह तिणै करीने सहित छै. अने एहवी रीते जेह स्वजाति तेहथी कोण करे वध वंध. एटले स्वजाति कहतां सर्व जीव सत्ताये एकरूप सरीखा छै. एक ठिकाणेथी आव्या. अने एक ठिकाणे जासे तेहथी कौण करे वध बंध. एटले तेहथी वध वंध कहतां तिण सं म्हारै छेदन भेदन रूप विरोध भाव करवो न घटे. एटले एहवी रीते विरोध भाव केम न करे ? तो के पगट्यो भाव अहिंसक जाणे शुद्ध प्रबंध. एटले प्रगटचो भाव अहि-

५९

सक कहतां ते जीवने भाव दया रूप अहिंसक पणे प्रगटे अने एहवा रीते भाव दया रूप अहिंसकपणो प्रगटे अने एवी रीते भाव दया रूप अहिंसकपणो प्रगटचो त्यारे. जाणे शुद्ध प्रबंध एटले जाणे शुद्ध प्रबन्ध कहतां ते जीवने शुद्ध प्रतिबोधनो लाभ प्रते जाणवो अने एहवी रीते शुद्ध प्रतिबोधनो लाभ थयो त्यारे? ॥२२॥

ढाल:---

ज्ञाननी तीक्ष्णता चरण तेह । ज्ञान एकत्वता ध्यान गेह ॥ आत्मता दात्मता पूर्ण भावे । तदा निर्मेला-नंद संपूर्ण पावे ॥ २३ ॥ अर्थः—ज्ञाननी तीक्ष्णता चरण तेह.

एटले चरण कहतां चारित्रवंत जीव ते कोने कहिये ? तो के जीव अजीव रूप नव षट् द्रव्य, नय, निक्षेप, प्रमाण, उत्सर्ग, अप-वाद, निश्चय, व्यवहार, द्रव्य, भावनो स्वरूप जाणि, जीव सत्ताने ध्यावे; अजीव सत्तानों त्याग करे. ज्ञान, दर्शण, चारित्र रूप शुद्ध निश्चय नय ज्ञाननी तीक्ष्णता रूप उपयोग जेहनो वर्ते, तेह जीवने चारित्रवंत कहिये ज्ञान ध्यान गेह. एटले ध्यान नो गेह कहतां घर ते कोनं कहिये ? तो के एहवी रीते जे पो-ताना आत्म स्वरूपना ज्ञान रूप ध्याननें विषे एकत्वपणे, सदाकाळ निरंतर पणे, जेहनो उपयोग वर्ते ते जीवने ध्याननो गेह कहतां घर भर्ते कहिये. एटले एहवी रीते ज्ञान ध्यान

ह्र

रूप जीवनो उपयोग वन्यों त्यारे: आत्मता-दात्मता कहतां आत्मानो तदुरूप जेहवो सत्ताये रह्यो छे तेहवो, अने ता पूर्ण भावे एटले ता कहतां तिमज अने पूर्णभावे कहतां श्रद्ध निश्चय नय सम्प्रण भावे करीनें सहित. तदा निर्मलानंद सम्पूर्ण पावे. एटले तदा कहतां तिवारे अने निर्मल कहतां कर्म रूप मलथकी रहित अने नंद कहतां आनंद मयी, अने सम्पूर्ण पावे कहतां सिद्धि रूप कार्य पर्ने सम्पूर्ण भावे करीने नीपजे अने एहवी रीते सिन्डि रूप कार्य सम्पूर्ण भावे करीनें नीपजे त्यारे ? ॥ २३ ॥

चालः--

चेतन अस्ति स्वभाव में जेह न

भासे भाव। तेहथि भिन्न अरोचक रोचक आत्म स्वभाव॥ सम्यक्त भावे भावे आत्म शक्ति अनंत। कर्म नाशनो चिंतन नांणे ते मति-वंत॥ २४॥

अर्थः — चेतन अस्ति स्वभाव में जेह न भासे भावः एटले चेतननो अस्ति स्वभाव कहतां शुद्ध निश्चय नय पोतानी आत्म सत्ताः ने विषे हानादि अनंतगुण रूप स्फाटिक रत्न समान अस्ति स्वभाव रह्यो छै; तेहनो कोई काले नास्ति पणो नथी; जह न भासे भाव एटले जेह न भासे भाव कहतां ए अस्ति

६३

स्वभाव में श्रुमाश्रूम रूप विभाव दशानो नास्ति पणो जाणयोः एटले ए श्रुभाश्रम रूप विभाव दशा जीवने अनादिकालनी लागी छे. ते व्यवहार नयनें यते, पिण नास्तिपणे जाणती. तेहथि भिन्न अरोचक रोचक आत्म स्वभावः एटले तेहथि भिन्न कहतां ए श्रभा-शुभ विभाव दशा रूप कमधकी भिन्न कहतां जुदो छै: अने अरोचक कहतां ए विभाव दशाथकी एहबी दृष्टि बाला जीवनो अरुचि भाव वर्त्ते छे त्यारे शिष्य कहे रुचि किहां वर्ते छे ? तोके रोचक आत्म स्वभाव, एटले रोचक आत्म स्वभाव कहतां एहबी रीते जामपम रूप रमण जेहनें थयो छै, तेह जी-वनें एक शुद्ध चिदानंद परमज्योति प्रणेब्रह्म

દ્દેક

अध्यात्मगीताः

रूप निर्मलानंद एहवो पोताना आत्मानो स्वरूप प्रगट करवाः रोचक कहतां रुचि जेहनी वर्ते छे. अने एहवी रंश्ते रुचि पर्ते वर्त्ती त्यारे: सम्यक्त भावे भावे आत्मशक्ति अनंत. एटले सम्यक्त भावे कहतां एहवी रीते जाणपणा रूप सम्यक्त भावे करीने जेणे पोताना आत्मानी अनंती क्वक्ति प्रते जाणी है: अने एहबी रीते अनंतशक्ति प्रतं जाणी त्यारे. कर्म नाजनो चितन नाणे ते मतिवंत. एटले मतिवंत कहतां एहवी निर्मल बुद्धिना धणी शुद्ध भासन रूप जाणपणे करीनें, जेणे पोताना आत्मानं कर्म रूप उपाधि थकी रहित, शद्ध चिदानंद निर्मेल परमज्योति सत्ताये सिद्ध समान, एहवी रीते जेणे निश्चय

६५

नयने मते जाणपणा रूप अन्तरंग प्रतीत करी छै, ते जीव कम नाशन[े] चितन नाणेः कहतां शुद्ध निश्च राज्य करीने, जोतांती स्फटिक रत्न समान आत्मानो स्वभाव निर्लेष छे. एटले जिम स्फटिक क्याम डंकन जोगे करी नें ज्याम दीखे अने राता इंकनें जोगे करी र्ने रातो दीखे: पिण ए डंकर्ने अभावे जोतांतो स्फटिक निर्मेलो है, तिम आत्मानो स्वभाव शुद्ध निर्धेल स्फटिक समान छे. पिण श्रभा-शुभ पुण्य पाप रूप इंकर्ने जोगे करी कर्मरूप आमा (प्रतिविम्व) पड़ी छै; पिण ए कर्म रूप इंकने अभावे करी ने जोतांतो आत्मा श्रद्ध निर्मल परम ज्योति सत्ताये सिद्ध समान छै. (गाथा) जिम निर्मल

स्फटिक तणी, तिम जे जीव स्वभाव ॥ ते जिन वीरेरे, धर्म प्रकाशियो, प्रवल कषाय अभाव ॥ इतिश्री जशियजा कृत लवा सो गाथाना स्तवन मध्ये परमार्थ जाणवो एहवी रीते शुद्ध भासन रूप जाण पणाना धणी तेह जीव कर्म नाशनो चिन्तन कहतां कायर पणो चित्तन विषे न लावे जे महारे कर्म की वारे टले. अने एहवी रीते कायर पणो केम न लावे ? ॥ २४ ॥

ढालः--

स्वगुण चिन्तन रसे बुद्धि घाले। आत्म सत्ता भणोजे निहाले॥ शुद्ध स्याद्वाद पद जे संभाले।

६७

पर घरें नेह मित केम वाले ॥२५॥

अर्थः-स्वगुण चिन्तन रसे बुद्धि घाले एटले स्वगुण कहतां पोतानी आत्म सत्तानें विष ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि अनंता गुण रहा है. अने चिंतन रसे बुद्धि घाछे. एटले चितन कहतां तैहना चितन नें विषे रसे करी नें युक्त बुद्धि जेहनी वर्ते छै अने एहवी रीते रसे करी ने युक्त बुद्धि वर्ती त्यारः आत्म सत्ता भणी ते निहाले. एव्छे आत्म सत्ता कहतां ज्ञानादि अनन्त गुण रूप पोतानी आत्म सत्ता ने अन्तर दृष्टिय करीने निहाले कहतां निरखी ने जोवे छै. अने एहवी रीते पोतानी आत्म

सत्ता नें जोवे त्यारे. शुद्ध स्याद्वाद पद जे संभाले. एटले शुद्ध कहतां निर्मल कर्म रूप लेप थकी रहित अने स्यादाद कहतां स्यादाद रूप नित्य १ अनित्य २ एक ३ अनेक ४ सत्य ५ असत्य ६ वक्तव्य ७ अवक्तव्य ८ एणीरीते आठ पक्षे करीनें सहित, अने पद कहतां एहवो पोताना पद प्रतें. अने संभाले कहतां जाणे देखे छे. त्यारे शिष्य कहे, नित्य अनित्यादि आठ पक्षे करीने पोतानो पद प्रतें केम संभाल कहतां जाणे देखे छे? त्यारे गुरु कहे भी ? जिप्य स्याद्वाट मंजर्र में कहा छै:- नित्या नित्याद्यनक धर्म सवलंक वस्त, भ्युपगमत्त्रं स्याद् बादत्वं ॥ त्यां शिष्य कहे ए नित्य अनित्यादि आठ पक्षे करी

६९

जीवनो स्वरूप कैम जाणिये ? त्यारे गुरु कहे, व्यवहार नयनें मते उदय भावनें जोगे करी जे गति में जीव वर्चे छे, ते गति में नित्य छे. अने समय समय आउस्वो घटे छे यातें अनित्य कहिये; पिण ते अनित्य में अनित्य, जिन्स्य में जिन्स्य, ए व्यवहार नयनें मतें मरमार्थ जाणवो । १।

हिबै निश्रय नयनें मते नित्य अनित्य पक्षे करी जीवनो स्वरूप देखाड़े छै एवले निश्रय नयनें मते जीवना चार गुण ज्ञान, दर्शन, चारित्र, अने वीर्य, ए चार गुण, अने पर्याय में अन्यावाय अमूर्ति अने अण-अवगाह, एटले ए चार गुण अने त्रण पर्याय

जीवना नित्य छे. अने एक अगुरु लघु पर्ट्याय जीव नें सर्वे गुणमां हानि वृद्धि रूप उपजवो विणसवो करे छे, माटे अनित्य कहिये अने ए अगुरु लघु पर्ट्याय सर्व गुण में हानि वृद्धि रूप उपजवो विणसवो करे छे तेहमां ए ज्ञानादि चार गुण ते नित्य पणे वर्ते छे. एटले ए नित्य में अनित्य, अने अनित्य में नित्य पक्षनो विचार निश्चय नयनें मते जाणवो ॥ २ ॥

हिवे व्यवहार नयनें मते एक अनेक पक्षे करी जीवनो स्वरूप देखाड़ छै. एटले व्यवहार नयनें मते उदय भावनें जोने करी जे गति में जीव वर्ते छै, ते गति में एक छै; पिण कोई नो बेटो, कोई नो बाप, कोई नो

ওই

काको, कोई नो मामो, कोई नो भाई, कोईनो भत्रीजो, एम अनेक प्रकार जीव में बेटापणो, काकापणो, मामापणो, भाईपणो भत्रीजपणो, रह्यो छै. माटे एणी रीते अनेक पण कहिये. पिण ए बेटा, बाप, काका, मामा, भाई, भन्त्रोज पणामें पोता पणोते एक वत छै. एटल ए एक में अनेक. अने अनेक में एक, पक्षनो विचार व्यवहार नयने मते जाणवो। ३।

हवे निश्चय नय करी जीवम एक अनेक पक्ष मते देखाड़े छै. एटले निश्चय नय करी सर्व जीवनो धर्म सत्ताये एक रूप सरीखो छै माटे सर्व जीव एक कहिये; अने गुण पर्याय नें प्रदेश अनेक छे. एटले गुण अतन्ता, पर्याय अनंता. अने प्रदेश असंख्याता, माटे

अनके पिण कि हिये; अने ए गुण पर्यायने प्रदेश अनेक छे, पिण तेहमां जीवपणो एक सरीखो छे. मोट एहवी रीते अनेकमें एक पण कि हये. एटले एहवी रीते निश्चय नय करी एक में अनेक, अने अनेकमें एक पक्षनो विचार जाणवो. । ४।

हिवे व्यवहार नयने मते जीवमें सत्य असत्य पश्च मते देखाड़े छे. एटले व्यवहार नयनें मते जीव पोते पोताना इच्या, क्षेत्र, काल, भावपणे करीने सत्य छे. अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, अने परभाव पणे करीने असत्य छे. एटले व्यवहार नयने मते द्रव्य-थकी जीव द्रव्य जे गतिमे पोते विराजमान थको वर्त्ते छे १ अने क्षेत्र थकी कहतां जेटलो

७३

क्षेत्र पोते अवगाहि कहतां मर्यादारूप पोतानो करीने रोक्यो छै: २ अने कालथकी कहतां समय रूप पोताना आऊखा प्रमाणे काल जाय है, ३ अने भाव कहतां सर्व जीव पोते पोताना श्रभाशभ रूप भावमें रह्यो वर्ते छै. एटले एहवी रीते व्यवहार नयर्ने मते सब जीव पोते पोताना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावे करीने सत्य है, अने परद्रव्य, परक्षेत्र, पर-काल, परभाव पणे करीने असत्य छे, पिण ए असत्य पणामे पोतानो सत्य पणो वर्चे छै. एटले सत्य में असत्य, अने असत्य में सत्य पक्षनो विचार व्यवहार नयनें मते करी जाणवो । ५ ।

हिवे निश्चय नय करी जीवमे सत्य

असत्य पक्ष पर्ते दिखावे है. एटले निश्चय नयने मते जीव पोते पोताना स्वद्रव्य. स्वक्षेत्र स्वकाल, स्वभाव पणे करीने सत्य छे. अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, परभाव पणे करी ने असत्य है. एटले निश्चय नयने मते जीव में स्वद्रव्य कहतां ज्ञानादि गुण जाणवा १ अने स्वक्षेत्र कहतां जीव पोताना असंख्यात प्रदेश रूप स्वक्षेत्र अवगाहि रह्यो छै २ अने स्वकाल कहतां पोतानो अगुरुलघु पर्याय सदाकाल हानि दृद्धि रूप उपजावो विणसवी करे छै ३ अने स्वभाव कहतां पोताना गुण पर्याय ४ तेणे करीनें जीव सत्य है. अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, परभाव पणे करी जीव असत्य छै. पिण ए असत्यपणार्म पो-

७५

तानो सत्य पणो वर्ते छे. एटले ए सत्य में असत्य, अने असत्य में सत्य पक्षनो विचार निश्चय नयनं मते करी जाणवो । ६ ।

हिवे निश्चय व्यवहार नये वक्तव्य, अवक्तव्य रूप पक्षे कर्रा जीवनो स्वरूप पत्ते देखावे छे. एटले उदय भाव नें जोगे कर्रा व्यवहार नयनें मते जीव पहिले गुण-स्थान सुं मांडी यावत् तेरमा चवदमा गुण-स्थान पर्यंत वर्ते छे, ते जीवना जेटला गुण केवली भगवानना परुपवामें आवे ते वक्तव्य अने केवली भगवानना परुपवामें जावे ते वक्तव्य ते अवक्तव्य.। ७।

अने निश्चय नयनें मते सिद्ध परमात्मा गुणस्थान वर्जित लोकनें अंते विराजमान

वर्ते छै, तैहना जेटला गुण केवली भगवाननां परुपवामें आवे ते वक्तन्य, अने केवली भगवाननां वानना परुववामें न आवे ते अवक्तन्यः एहवी रीते निश्चय न्यवहार नय वक्तन्य, अवक्तन्य रूप पक्षे करी जीवनो स्वरूप जाणवो ८ इति आठ पक्षे करी जीवनो स्वरूप ओलखवो.

अने पद्ने संभाने एटले एहवूं पोतानी पद मतें संभाने कहतां जाणे, ओलखे हैं, अने एहवी रीते पोतानो पद भतें संभाने कहतां जाणे, ओलखे त्यारे, पर घर तेह मति केम वाले. एटले पर घर कहतां शुभाशुभ विभाव दशा रूप जे जड़ स्वभाव तिहांथकी मति निवारी नें पोतानो ज्ञानादि अनन्त गुण रूप जे घर तिहां जेहनी मात मतें वर्षे

99

छे. अने एहवी रीते मति प्रतें वर्त्ती त्यारे ? ॥२५॥

चालः—

पुण्य पाप वे पुद्गल दल भासे परभाव। परभावे पर संगति पामें दुष्ट विभाव॥ ते माटे निजभोगी योगोश्वर सुप्रसन्नः। देव नरक तृणमणि सम भासे जेहनें मन्न ॥ २६॥

अथै:—पुण्य पाप वे पुद्गल दल भासे परवाब. एटले पुण्य पाप कहतां पहिले गुणस्थाने गिथ्यात्व भावनो पुण्य छे तेतो जीवन शुभ प्रकृति रूप कर्मनो उदय छे.

अने पाप छे तेतो जीवर्ने अश्रम प्रकृति रूप कर्मनो उदय छे. अने ए शुभाशुभ प्रकृति रूप कर्मना पुर्गल जीवर्ने अनादि काल ना लागा है, ते पर स्वभाव रूप मोक्ष नगरे जातां जीवनें विघ्न नाकरणहार जाणवा-अने एहवी रीते विधना करणहार थया त्यारे: परभावे पर संगति पामे दुष्ट विभाव. एटले परभावे पर संगति कहता ए परस्वभाव रूप विभाग दशा में संगे करीनें, पामें दुष्ट विभाग. एटले पामें दुष्ट विभाग कहतां एहती रीते जीव संसार में फिरतां अनेक प्रकारे कर्म विटंबना रूप दुःख विषाक प्रतें भोगवे. ते माटे निज भोगी योगीश्वर सुप्रसन्नः एटले निजभोगी कहतां ए पर स्वभाव रूप विभाव

७९

दशाना भोग थकी जीव रहित छै. अने निश्चय नयनें भते निज कहतां पोताना ज्ञानादि अनन्त गुण रूप जे पर्य्याय प्रते प्रगटे तेहनो जीव भोगी छै. अने योगीश्वर एटले योगीश्वर सुपसन्न कहतां एहवी निर्मल बुद्धिना धर्णा योगीश्वर मुनिराज, सुप्रसन्न कहतां भली तरह चित्त जेहनो सदा काल प्रसन्न पणे वर्त्ते छे. अने वली योगीश्वर सुपस्त्र एटले योगीश्वर सुपस्त्र कहर्ता शुद्ध निश्चय नये करी नें जोतांतो मन, वचन, काया रूप पुद्गलनो योगथकी जीव रहित छे. अने पोताना ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप जे योग तेहर्ने जांगे करी ने जीव योगीश्वर छै; अने सुप्रसन्न कहतां तेह जोग नें विषे

सदाकाल जीव स्रकहतां भली तरह प्रसन्न पणे वर्ते है. अने एहवी रीते सकहतां भली तरह प्रसन्न पणे वर्स्यो त्यारे; देव नरक तृण मणि सम भासे जेहनें मन एटल देव नरक तण मणि सम कहतां भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानीक, नवग्रैवैवक, अनुत्तरवे-माननां जे सुख, अने नरक कहतां सात नरक ना जे दुःख, अने तृण मणि कहतां तृण (घास) अने मिणिरत्न सम कहतां ए सर्वे ऊपर ते जीवने सम भाव पणे चित्त वर्तें हे. अने एहवी रीते समभाव पण चित्त वस्यों त्यारे ? ॥ २६ ॥

चाल:--

तेह समतारसो तत्व साधै।

23

निश्चलानन्द अनुभव आराधे ॥ तीत्र घन घाती निज कर्म तोड़े । सन्धि पड़ो लेहिनें ते विछोड़े ॥२७॥

अर्थः—तेह समतारसी तल साधे एटले एहवी रंते शुद्ध भासन रूप जाणपण करीनें तेह कहतां ते शुनिराज, अने समतारसी कहतां समताना रिसया प्रतं होवे. अने एहवी रीते समता ना रिसया पतें होवे, त्यारे तल साथे. एटले तत्व कहतां पोताना आत्मतत्त्वनें अने साथे कहतां संपूर्ण भावे करी नीपजावे. अने एहवी रीते संपूर्ण भावे करी केम नीपजावे ? तोके, निश्वलानंद अनुभव आराधे. एटलें निश्चल कहेतां अचल आव्योथको जाय नहीं,

अने नंद कहतां आनंदमयीः अनुभव आराधे, एटले अनुभव कहतां एहवी रीते अनुभव रूपी अमृतनो आराधे कहतां ते जीव सदा काल आस्वादन पर्ते करे. अने एहवी रीते आस्वा-दन प्रते करे, त्यारे, तीव्र घनघाती निज कर्म तोड. एटले तीव्र कहनां आकरा अने घनघाती कहतां पोताना आत्मगुणने घातना करणहार पहवा ज्ञानावर्णादि चार कर्म अने निज कर्म तोडे. एटले निज कहतां पोताना कर्म अने तोड़े कहतां तेहने ध्यान रूप अग्निये बालीनें क्षय करे. अने एहवी रीते ध्यान रूप अग्निये बालीनें क्षय करे. त्यारे. संधि पडि लेहिनें ते विछोडे. एटले सन्धि कहतां सीम मर्यादानो अंत तेहनें छेडो कहिये. एटले बारमां गुण-

८३

स्थाननो छेडो फरसीघाती कर्मनें विछोड़े कहतां विखेरे त्यारे शिष्य कहे घाती कर्मनें केम विखेरे ? ॥ २७ ॥

चालः—

सम्यग् रत्नत्रयी रस राच्यो चेतन राय। ज्ञानिकया चक्रे चकच्रुरी सर्व अपाय ॥ कारक चक्र स्वभावथी साधे पूरण साध्य । कर्त्ता कारण कार्य एक थया निराबाध्य ॥ २८॥

अर्थ:—सम्यग् रत्नत्रयी रस राच्यो वेतनराय एटले सम्यग् कहतां भली पकारे, अने रस्त्रत्रयी कहतां ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप

जे रत्नत्रयी, रस राच्यो चेतनराय, एटछे चेतनराय कहतां चेतन महाराज रूप जे राजा, अने रस कहतां तेहना रसने विषे, अने राच्यो कहतां एकत्वपणे वर्त्यो. अने एहवी रीते एकत्वपणे वर्त्यो त्यारे, ज्ञान क्रिया चक्रे चकचूरी सर्व अपाय. एटले ज्ञान किया चक्रे कहतां ज्ञान किया रूप चक्रे करीने घाती कर्म रूप अपाय कहतां जे वेरी जीवने अनादि कालना शत्रुभत थईने लागा हता. तेहने चकचूरी कहतां चूरी बाछीनं क्षय करे, अने एहवी रीते चुरी बालीनें क्षय केम करे? तोके, कारक चक्र स्वभावयी साधे पूरण साध्य. एटले कारक चक्र कहतां कर्ता ? कारण २ कार्य ३ संग्रदान ४ अपादान ५ अने•अधि-

64

करण ६ ए पटकारक रूप जे चक्र तेणे करीने. साधे पूर्ण साध्य. एटले साधे पूर्ण साध्य कहतां ते जीव पोतानं कार्य प्रत साथे कहतां सम्पूर्ण नीपजावे. त्यारे शिष्य कहे—ए पट कारक रूप चक्रे करीने पोतानो कार्य पर्ते केम साथे ? त्यारे ग्ररु कहे—कर्त्ता जीव ? अने कारण रूप समिकत गुण २ अने कार्य करवो छे केवल ज्ञान रूप ३ अने अपादान कहतां कर्म रूप अश्रद्धताना आवर्ण टलता जाय ४ अने संपदान कहतां ग्रणश्रेणी रूप निर्मलता संपजती (मगटती) जाय ५ अने आधार कहतां ए केवल ज्ञान रूप कार्यमें, छोये (छकारक) आधारभूत जा़णवा ६ एणी रीते षट्कारक रूप चक्रे करी ते जीव पोतानो

कार्य प्रतें नीपजावे. अने एहवी रीते पर् कारक रूप चक्रें करी पोतानो कार्य प्रतें नी-पजावे, त्यारें कर्चा कारण काय एक थया निराबाध्यः एटलें कर्चा चेतन, अने कारण ज्ञानादि गुण, अने कार्य कहतां अनेक ज्ञेय पदार्थ जाणवा, देखवा रूपः अने एक थया कहतां ए त्रण एकतापणें निराबाध्य कहतां अबाधा रहित नीपजे. एटले एहवी रीते अबाधा रहित केम नीपजे ? ॥ २८॥

ढालः--

स्वग्रण आयुधथकी कर्म चूरे। असंख्यात ग्रणी निर्जरा तेह पूरे॥ टले आवरणथी ग्रण विकाशे।

20

साधना शक्ति तिम २ प्रकाशे ॥ २९॥

अर्थ:--स्वग्रण आयुध्यकी कर्म चरे. एटले कर्मने केम चुरे ? तोके, स्वगुण आयु-धथकी, एटल स्वग्रण कहतां पोताना ज्ञानादि गुण रुप, आयुध कहतां जे हथियार, तणे करीने कर्म चे अने एहवी रीते कर्म ने चुरे. त्यारे असंब्यात गुणी निर्जरा तेह परे. एटले असंख्यात गुणी कहतां ते जीव समय समय असंख्यात गुणा निर्जरा प्रते करे. अने एडवी रीते निर्जरा करे, त्यारे, तेह पूरे. एटले तेह कहतां ते जीव, अने पूरे कहतां पोताने स्वगुणे करी आत्माने पूरे.

एहवी रीते आत्माने केम पूरे ? तो के, टले आवर्णे गुणविकासे एटले टले आवर्णे कहतां जिम जिम कर्म रूप आवर्ण टलता जाय, अने गुण विकाशे कहतां तिम तिम आत्मगुण विकस्वर कहतां प्रगट पणे थता जाय. त्यारे शिष्य कहे ? आत्मगुण केम विकस्वर थाय ? त्यारे गुरु कहे-सूर्य आडा वादलां आवे, त्यार, सूर्यनी क्रांति प्रते दबाय, अने वादला जिम जिम पवनने जोरे विखरता जाय, तिम तिम सूर्यनी कांति प्रकाश प्रते पामती जाय, तिम इहां ए ह्यांन्ते आत्म गुणने कर्भ रूप वादला आंडा आव्या, त्यारे आत्मानी गुण रूप क्रांति प्रते दबाणी. विण अंतरने विषे आत्माने गुणरूप

८९

क्रांति सूर्यनी पेरे देदीप्यमान छै माटे शुक्क ध्यान रूप वायराने जोगे करी, जिम जिम कर्म रूप वादला विखरता जाय, तिम तिम आत्माने गुण रूप क्रांति प्रकाश प्रते पामती जाय. अने एहवी रीते गुण रूप क्रांति प्रकाश प्रते केम पामे ? तोके, साधना शक्ति तिम तिम प्रकारो एटले साधना कहतां पोतानो आत्म गुण रूप कार्य प्रते साधवं, तेहने विषे निश्चलता रूप प्रणाम अने शक्ति कहतां परा-क्रम रूप वीर्यनो उलास तेले करीने. अने तिम तिम प्रकाशे कहतां. श्रेणी रूप प्रकाश प्रते बधतो जायः अने एहवी रीते श्रेणी रूप प्रकाश प्रते वध्यो त्यारे ॥ २९ ॥

चाल:---

प्रगट्यो आत्म धर्म थया सबी सा-धन रीत। बाधक भाव प्रहणता भागी जोगी नीत॥ उदय उदी-रणा ते पिण पूर्व निजरा काज। अनिभ सन्धि बंधकता निरस आत्मराज॥ ३०॥

अर्थ:—एटले एहवी रीते आत्मानी शक्ति पते जागी त्यारे, पगट्या आत्म धर्म थया सिव साधन रीत. एटले प्रगट्या आत्म धर्म, कहतां कर्मरूप आवरणने अभावे, अनंत गुणरूप आत्मिक धर्म पते पगटे. अने एहवी रीते अनंत गुणरूप आत्मिक धर्म पते केम पगटे ? तोके, थया सिव साधन रीत, एटले

९१

थया सबि साधन रीत कहतां, आत्मनी कर्त्तृत्वता भोक्तृत्वादि पंचशक्ति ते अनादि कालनी पर अनुजाह पणे अवली प्रणमी हती: तिहांथकी निवारीने पोताना स्वरूप अनुजाइ रूप साधन पणे प्रणमावी. त्यारे शिष्य कहे, ए पांच शक्ति स्वरूप अनुजाइ रूप साधन पणे केम प्रणमी ? त्यारे गुरु कहे,--आत्मानी कत्त्रुखता रूप जे शक्ति ते अनादि कालनी परकर्त्तापणे अवली प्रणमी हती, तिहां थकी निवारीने पोताना स्वरूप कर्त्तारूप साधनपणे प्रणमावी. १अने आत्मानी भोक्तत्वता रूप जे शक्ति ते अनादि कालनी पर पुद्रलादि विभाव दशाना भोगने विषे प्रणमी हती. तिहां थकी निवारीने पोताना

९२ अध्यातमगीताः

इवभाव भोगीपणे प्रणमावी. २ अने आत्मानी रक्षकत्वा रूप जे शक्ति ते अनादि कालनी पर पुद्रछादि विभाव दशाना रक्षक पणे प्रणमी हती, तिहां थकी निवासीने पोताना स्वभाव रक्षकपणे प्रणमावी. ३ अने आत्मानी व्यापकत्वा रूप जे शक्ति ते अनादि कालनी पर स्वभाव रूप विभाव दशाने विषे व्यापी रही हती, तिहां थकी निवारिने पोताना स्वभाव व्यापक पणे प्रणमावी, ४ अने अत्मानी ग्राहकता रूप जे शक्ति ते अनादि कालनी पर ग्राहकपणे अवली प्रणमी हती, तिहां थकी निवारीने पोताना स्वभाव ग्राहक पणे प्रणयात्री. ५ एहत्री रीते ए पांच शक्ति अनादि कालनी पर अनुयाईपणे अवली

63

प्रणमी हती, तिहां थकी निवारीने पोताना स्वरूप अनुयाई रूप साधन पणे प्रणमावी, अने एहत्री राते स्वरूप अनुयाई रूप साधन पणे प्रणमी, त्यारे, बाधक भाव ग्रहणता भागी जागी नीत. एटले वाथक भाव कहतां अनाटि कालनो ए पर स्वभाव रूप विभाव दशानि हारे, जीवने वाधक भाव रूप ग्रहण-पणो हतो, ते भाग्यो कहतां टल्यो. अने एइवी रीते वाथक भाव टल्यो त्यारे. जागी नीत, एटले जागी नीत कहतां पर ग्रहण रूप अनित्यपणी टल्यो. अने स्वरूप ग्रहण रूप नित्यतायणो मगठ्यो, त्यारे, उदय उदी-रणा ते पिण पूर्व निर्नरा काज. एटले उदय कहतां स्थिति पाके उटय भावने जोगे करी

जे कर्म उदय आवे, ते भोगवीने निर्जरा प्रत्ये करे अने उदीरणा कहतां जीवनी मत्ताये बंध रूप कर्मना पुद्रल लागा छे ते खेंची कहतां उदेशी-उदय आणी भोगवीने निर्ज-रावे. अने एहवी रीते निर्जरावे त्यारे, अनिभ सन्धि बंधकता निरस आत्मराय. एटले अनभि कहतां अनुक्रमे, अने सन्धि कहतां सीम मर्यादानो अंत. तेहने छेडो कहिये. एटले बारहमां ग्रणस्थानने छेडे. अने आत्म-राय कहतां चेतन महाराज रूप जे राजा तेहनी सत्ताये बंधक कहतां वंध रूप कर्मना पुद्रल रह्या छे: ते निरस कहतां कषाय रूप रसथकी रहित छखा जाणवा, अने एहबी रीते कषाय रूप रसथकी रहित छखासपणे

64

वर्सा त्यारे ॥ ॥ ३० ॥

ढालः—

देशपित जब थयो नितरंगी । तदा कुण थाये कुनय चाळ संगी ॥ यदा आत्मा आत्म भावे रमाव्यो । तदा बाधक भाव दूरे गमाव्यो ॥ ३१ ॥

अर्थ: देशपति जब थयो नितरंगी.
एटले देशपति कहतां जिम देशनो धणी,
अने पति कहतां राजा, जब थयो नितरंगी.
एटले जब कहतां जिबारे, अने थयो नितरंगी
कहतां जेहना चित्त नित मार्गने विषे रंगाणो,
अने नित मार्गनो चालणहार थयो तदा
कुण थाये कुनय चाल संगीः एटले तदा

कहतां तिवारे. अने कुनय कहतां ए कुडा नयरूप अनित्य मार्गनो चालणहार कुण होय ? एम इहां ए देशपति कहनां अलंख्यात प्रदेश रूप जे देश, अने ते देशने विषै ज्ञानादि अनंत गुण रूप लक्ष्मी रही छै, तेहनो पति कहतां धणी, एहवो जे चतन महाराजा, जब थयो नित्यरंगी एटले जब कहतां जिवारे, अने थयो नित्यरंगी कहतां ए पर स्वभाव रूप अनित्य मार्ग मुकीने, पोताना स्वरूप में रमण करवा रूप नित्य मार्ग प्रते पकडचो. अने एहती रीते नित्य मार्ग प्रतें पकडचो, त्यारे, तदा कुण थाये क्रनय चाल संगी. एटले तदा क्यतां तिवारे अने कुनय कहतां ए कडा (खोटा) नय

९७

रूप अनित्य मार्ग प्रतें केम चलवे ? एटले जे मार्गे पीते चाले ते मार्गनो पर ने पिण उपदेश मतें करे. एटले एहती राते शुद्ध मार्गनो परनें उपदेश प्रतें कोण करे ? तोके. यदा आत्मा आत्म भावे रमावयो. एटले यदा कहतां जिवारे, अने आत्म भावे रमाव्यो कहतां जेणे पोताना आत्माने आत्मभावने विषे रमाव्यो कहतां रमाड्यो ते करे. अने एइवी रीते आत्मभावने विषे रमाड्यो त्यारे तदा वाधक भाव दूरे गमान्यो. एटले तदा कहतां तिवारे. अने वायक भाव कहतां अ-नादि कालनो ए पर स्वभावरूप विभाव दशा निहारे जीवने बाधक भावरूप ग्रहणपणो हतो ते दूरे गमाव्यो, एटले दूर गमाव्यो कहतां

तेहनो नाश पर्ते करयोः अने एहवी रीते बाधक भावनो नाश प्रते केम करयो ? ॥३१॥

चाल:--

सहिज क्षमा गुण शक्तिथी छेदा। क्रोध सुभट्ट । मार्दव भावप्रभा-वथी भेद्यो मान मरह ॥ माया आर्जव योगे लोभते निस्पृह भाव। मोह महा भट ध्वंसे ध्वंस्यो सर्व विभाव॥ ३२॥

अर्थः — सहिन क्षमा गुण क्षक्तिथी छैचो क्रोध सु भट्टः एटले सहिन क्षमा गुण कहतां अकृत्रिम भाव रूप ने क्षमा गुण, अने शक्तिथी

९९

कहतां ए अकृत्रिम भाव रूप शक्तिये करीने. छैद्यो कोध समझ एटले छैद्यो क्रोध समझ कहतां ए मोह राजानो क्रोध रूपी जे सभइ तेहने छेद्यो कहतां निकंदन पर्ते करची. ? मादर्व भाव प्रभावशी भेद्यो मान मरह. एटले माईव भाव कहतां मृद्ता भाव रूप जे नरमास गुण, अने प्रभावथी कहतां तेहने प्रभावे करीने भेद्यो मान मरह. एटले मान मरह कहतां ए मान रूपी सभट पर्ते भेद्यो कहतां छेद्यो. तेहने उनमेली (उखेडी) नाख्यो अने मरह कहतां एहवी रीते मान रूपी स-भटनो मरोड पर्ते मेट कीथो. २ माया आ-र्जव योगै लोभते निस्पृह भाव, एटले माया कहतां माया रूप जे कपट, अने आजेव

300

अध्यात्मगीता.

कहतां सरछ स्वभाव पणो, अने जोगै कहतां तेहने जोगे करीने दूर पते करचों. ३ छोभते निस्पृह भाव. एटछे छोभते निस्पृह भाव कहतां ए निर्छोभ रूप निस्पृही भाव थकी छोभनो नाश प्रतं करचों.

8 मोह महा भट्ट ध्वसे ध्वंस्यो सर्व विभाव एटले मोह महा कहतां मोह रूप महा भट्ट कहतां जे सुभट, एहवो जे शुरवीर ते सर्वे अवगुणने विषे राजा समान तेहने ध्वंसे कहतां ध्वंसे. एटले हडसेली नाखे. एहवी रीते मोहने दूर करने करीने ध्वंस्यो सर्व विभाव एटले ध्वंस्यो सर्व विभाव कहतां एह विभाव दशा रूप जे परस्वभाव; एहवी रीते सर्व अपाय कहतां जे पाप जीवने अनादि

१०१

कालना शत्रुभूत थईने लागा हता, तेहने ध्वंस्ये कहतां ध्वंस्यो, एटले नाश प्रते करची. अने एहवी रीते कोचादिकनो नाश प्रते केम करचो ?॥ ३२॥

ढालः —

इम स्वभाविक थयो आतम वीर । भोगवै आतम संपद सुधीर ॥ जेह उदया गता प्रकृति वलगी । अञ्योपक थको खेरवै तेह अलगी ॥ ३३ ॥

अर्थः — एम स्वभाविक थयो आत्म वीर. एटले आत्म कहतां जे आत्मा, अने वीर कहतां जे शूरवीर महा पराक्रमी अनंत

बलनो धणी कर्म शत्रुनो जीतणहारो. अने एम स्वभाविक थयो कहतां ए पर स्वभाव रूप विभाव दशाने विषे प्रणम्यो हतो, तिहां थकी मति निवारीने स्वभाविक कहतां पोताना स्वभावने विषे प्रणम्यो. अने एहवी रीते पोताना स्वभावने विषे प्रणम्यो त्यारे. भोगवे आत्म संपद सुधीर. एटले आत्म संपद कहतां ज्ञानादि अनंत चतुष्ट्य रूप पोतानी आत्म संपदा प्रतें भोगवे कहतां विलसे. अने सु कहतां भली तरह अने धीर कहतां अधीर पणी मुकीने निर्भय थको भोगवे. अने जेह उदयागता प्रकृति वस्रगीः षटले जे उदयागता कहतां उदय भावने जोगे. प्रकृति वलगी कहतां जे आत्म

१०३

प्रदेश कर्म रूप पक्ति वलगी कहतां लागी है, ते अव्यापक थको खेरवे तेह अलगी। एटले अव्यापक थको कहतां अलिप्त पणे न्यारो रही जे कर्म रूप पक्ति उदय आवे ते भोगवीने खेरवे. एणी रीते अलगी कहतां दूरे करीने आत्म गुण निरावर्ण पर्ते करे। त्यारे शिष्य कहे—आत्म गुण केम निरावर्ण पर्ते करे। पर्ते करे ? ॥ ३३॥

चालः--

धर्म ध्यान इकतानमें ध्यावे अरिहा सिद्ध।ते परिणतथी प्रगटी तात्विक सहज समृद्धि ॥ स्व स्वरूप एकत्वे तन्मय गुण पटर्याय । ध्याने ध्याता

१०४

अध्यात्मगीताः

निरमोहीनें विकल्प जाय ॥ ३४ ॥

अर्थ:-धर्म ध्यान इकतानमें ध्यावे अरिहा सिद्ध. एटले धर्म ध्यान कहतां पोतानो आत्मिक धर्म सत्तागतने विषे अनंतो रह्यों छे. ते धर्मने ओलखी पतीत करी तैहना ध्यानने विषे प्रवर्ते. त्यारे शिष्य कहे-एहवी रीते ध्यानने विषे केम मवर्ते ? तोके एकतानमे कहतां शुद्ध शुक्र ध्यान रूपातीत प्रणाम रूप एकत्व पणे, ध्यावे अरिहा सिद्ध. एटले अरिहा सिद्ध कहतां अरिहंत तथा सिद्धन गुणे पोताना आत्माने समतुरय पणे सरीखो गिणी. अने ध्यावे कहतां एहवी रीते निरा-गता पणे ओलखीने तैहना ध्यानने बिषे प्रवर्ते अने एहवी रीते ध्यानने विषे प्रवत्यों

१०५

त्यारे ते परिणितथी प्रगटी तत्त्रिक सहज समद्भ एटले ते परिणितथी कहतां एहवी निर्मेल शुद्ध आत्मानी प्रणति थकी अने पगटी कहतां नीपजी त्यारे शिष्य कहे-इयं नीपनी ? तोके, तत्विक सहज समृद्ध. एटछे तित्वक कहतां तद्व एपणे जहवी सत्ताये हती तेहबी, अने सहज कहतां ए अक्रुत्रिम भाव रूप संपदा पतं, अने सम कहतां सम्पूर्ण अने रिद्ध कहतां पोतानी ज्ञानादि अनंत चत्रष्ट्रय रूप लक्ष्मी पतें पगटे. अने एहवी रीते पोतानी लक्ष्मी पर्ते केम प्रगटे ? तोके. स्व स्वरूप एकत्वे तन्मय गुण पर्घाय. एटले स्य स्वरूप कहतां पोताना आत्मिक स्वरूपने विषं, अने एकत्व कहतां तेहने विषे एकत्व

१०६

अध्यात्मगीता.

पणे वर्ते. अने एहवी शीते एकत्वपणे कैम वर्स्यों ? तो के. तन्मय गुण पर्याय एटले तन्मय कहतां तलालीन रूप, अने गुण पर्याय कहतां एडवी रीते पोताना गुण पर्यायना चिंतनने विषे: ध्याने ध्याता निर्मोही ने विकल्प जाय. एटले ध्याने कहतां तेहना ध्यानने विषे अने ध्याता कहतां एहवी रीते एकत्व पणे वर्ते. अने एहवी रीते एकत्व पणे वच्यों त्यारे, निर्मोहीने विकल्प जाय. एटले निर्मोही कहतां ते जीव मोह रहित थाय, अने एहवी रीते मोह रहित थाय त्यारे, सर्वे विकल्प दरे जाय. एटले दरे जाय कहतां तेहनो नाश प्रते पामे. अने एहवी रीते नाश प्रते केम प्रामे ? ॥ ३४ ॥

१०७

ढाल:--

यदा निर्विकल्पी थयो शुद्ध ब्रह्म । तदा अनुभवे शुद्ध आनंद शम्म ॥ भेद रत्न त्रयी तीक्ष्णताये । अभेद रत्न त्रयी में समाये ॥ ३५ ॥

अर्थ:—एटले यदा निर्विकरणी थयो शुद्ध ब्रह्म एटले यदा कहतां जिवारे अने निर्विकरणी थयो कहतां एहवी रोते चलाचल परणाम रूप विकरण सुं रहित जीव थावे. अने एहवी रीते विकरण सुं रहित जीव थावे त्यारे, शुद्ध ब्रह्म एटले शुद्ध ब्रह्म कहतां ते जीव शुद्ध पूर्ण ब्रह्म रूप निर्मलानन्द एहवो पोतानो पद प्रतें प्रगट करे. अने एहवी

रीते पोतानो पद पर्ते प्रगट करे त्यारे, तदा अनुभवे शुद्ध आनन्द शर्म. एटले तदा कहतां तिवारे अने अनुभवे कहतां भागवे. त्यारे शिष्य कहे-इयं भोगवे ? तोके, शुद्ध आनंद ज्ञम्मे. एटले शुद्ध कहतां निर्मल: विभाव दशा रूप उपाधि थकी रहित, अने आनंद कहतां एहवी रीते आनन्दमयी, अने शम्भी कहतां एहवा पोताना मूल घर प्रते भोगवे. अने एहवी शीते पोताना मुळ घर प्रतं केम भोगवे ? भेद रत्नत्रयी तीक्ष्णताये. अभेद स्वत्रयीमें समायः एटले भेद कहतां जुदी २ अने रत्नत्रयी कहतां ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप जे रत्न त्रयी, अने तीक्ष्णता करतां तेश्ने विषे तामवा रूप एकामतापणे

908

उपयोग पतें वर्ते. अने एहवी रीते तन्मय रूप उपयोग पतें वर्त्यों त्यारे, अभेद रत्न त्रयोमे समाय एटले भेद रत्नत्रयी हती ते एक समय एकता रूप अभेदता पणे प्रणमी. अने एहवी रीते अभेद रूप एकता पणे प्रणमी त्यारे जाणवा, देखवा, रमण करवा रूप एक समय उपयोग वर्त्यों ? अने एहवी रीते जाणवा देखवा, रमण करवा रूप एक समय उपयोग केम वर्त्यों ? ॥ ३५ ॥

चालः-

दर्शन ज्ञान चरण गुण सम्यग् एक एकना हेत । स्व स्व हेतु थया सम् कालै ते अभेदता खेत ॥

पूर्ण स्वजाती समाधि घनघाती दल छिन्न। क्षायक भावे प्रगटे आतम धर्म विभिन्न॥ ३६॥

अर्थ:—दर्शन ज्ञान चरण गुण सम्यग् एक एकना हेत. एटले सम्यग् ज्ञान, कहतां भले पकारे—सम्यग् ज्ञान सम्यग् दर्शन अने सम्यग् चारित्र रूप जे गुण, अने एक एकना हेत कहतां दर्शन छे ते जीवनें सामान्य उपयोग रूप गुण छे. अने ज्ञान छे ते जीवने विश्रेप उपयोग रूप गुण छे. एटले दर्शन तथा ज्ञान ए वे ने विषे स्थिरता रूप एका-ग्रता पणे उपयोग वर्षे ते चारित्र जाणवो. माटे ए त्रणे परस्पर एक एकना हेतु कहतां

माहोमांहि एक बीजाना हेत् रूप कारण जाणवाः एटले माहोमांहि एक बीजाना हेत् रूप कारण केम थया? तोके स्व स्व हेत्र सम काले ते अभेदता खेत. एटले स्व स्व हेत्र थया कहतां आप आपणा हेतु रूप, अने थया सम काले कहतां एक समयमे ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप जे रत्नत्रयी ते एकता पणे प्रणमे: अने एहवी रीते एकता पणे केम प्रणमे ? तोके तेह अभेदता खेत एटले तेह कहतां तिमज, अने अभेद कहतां एहवी रीते अभेदातम पणे, अने खेत कहतां स्व क्षेत्रने विषे जाणवाः अने एहवी रीते स्व क्षेत्रने विषे केप प्रणम्या ? तोके प्ररण स्वजाति संपायि वनवाती दल छिन्न. एटले

घनघाती दल छिन्न कहतां घाती कर्म रूप घन कहतां जे सम्रह तेहनां दलीयां आत्म प्रदेशने विषे लाग्यां इतां तेहने छिन्न कहतां होटी नाखे. अने एहवी रीते होटी नांख्यां त्यारे. पूर्ण स्वजाति समाधि एटले पूर्ण कहतां संपूर्ण अने स्व कहतां पोतानी, अने जाति कहतां ज्ञानादि अनंत गुण एक राशि रूप जाति पतं प्रगटे, अने समाधि कहतां तेहने विषे सदा काल समाधि प्रतें वर्ते. अने एइवी रीते समाधि प्रतं केम वर्ते ? तोके क्षायिक भावे प्रगट्या आत्म धर्म विभिन्न. एटले आत्म धर्म कहतां पोतानी सत्तागतने विषे अनंतो आत्मिक धर्भ शक्ति पणे रहा हतो ते व्यक्ति पणे क्षायिक भावे प्रगट्यो.

११३

विभिन्न कहतां एहवी रीते अभेदात्म पणे पगट करी लोकालोकना भासकरथका विचरे अने एहवी रीते लोकालोकना भासकरथका विचरे त्यारे ॥ ३६ ॥

ढालः--

पछै योग रोधिथयो ते अयोगी। भाव सैलेसता अचल अभंगी॥ पंच लघु अक्षरे कार्य कारी। भवोपप्रही कर्म संतति विडारी॥ ॥३७॥

अर्थः — पठे योग रोघि थयो ते अयोगी. **ए**टछे योग रोघि कहतां प**ठे** तेरमा

गुणस्थानने छेहले समे योगना रोध करवा मांडचो एटले सूक्ष्म कियां अप्रतिपाति शुक्र ध्याननो त्रीजो पायो ध्यावतो ते जीव चउदमे गुणस्थान चढे. तिहां प्रथम बादरनो मनो योग रोके, पछी बादरनो वचन योग रोके. पछी वादरना काय योग रोके, पछी सुक्ष्म मतो योग रोके. पछी सुक्ष्म वचन योग रोके, पछी सक्ष्म काय योग रोके, एहवी रीते सुक्ष्म बादर रूप योगनो रोध करी थयो ते अयोगी. एटले थयो ते अयोगी कहतां ते जीव चउटमे गुणस्थाने अयोगी पद प्रतें पासे. अने एहवी रीते अयोगी पद प्रतें केम पाम्यो ? तोके भाव सेलेसता अचल अभंगी. एटले भाव सेलेसता कहतां भावना

११५

अकंप अडगपणा थकी, अने अचल कहतां चले नहीं एडवो स्थिरता रूप भाव, अने अभंगी कहतां एहवी रीते आव्यो थको तै भावनो भंग पर्ते न थाय. अने एहवी रीते ते भावनो भंग पर्ते न थाय त्पारे, पंच लघु अक्षरे कार्य कारी. एटले पंच लघु अक्षर कहतां चउटमा गुणस्थाने जीव पोहच्यो त्यारे: अड उ ऋ छ, ए पंच छघु अक्षर रूप उचार करे, एटला कालमां कार्य कारी कहतां, ते जीव पोतानो सर्व कार्य प्रतें नीपजावे. अने एहवी रीते सर्व कार्य प्रतं केम नीपजावे ? तोके, भवोपग्राही कर्म संतति विडारी, एटले भवोपग्राही कहतां भवने आश्रीने. अने कर्मनी संतित कहतां कर्म रूप

पुद्गलनी संतित वाकी रही हती तेहने विडारी कहतां चुरी वालीने क्षय पतें करी. अने एहवी रीते चुरी वालीन क्षय करी त्यारे ॥ ३७॥

चालः---

सम श्रेण एक समये पुहता जे लोकांति। अफुसमाण गति निर्मल चेतन भाव महंत ॥ चरम त्रिभाग विहीन प्रमाणे जसु अवगाह। आत्म प्रदेश अरूपा खंडा नंद अवाह॥ ३८॥

अर्थ:-सम श्रेणै एक सपये पुहवा

११७

जे छोकांति. एटले समश्रेणै कहेतां पाधरी श्रेणै: अने एक समय कहतां एक समयने विषे पोहता जे लोकांति एटले पोहता जे लोकांति कहतां चउदराज लोकने अंते अजरामर स्थानके सिद्ध क्षेत्र कहतां जे क्षेत्रने विषे अनंता सिद्ध परमात्मा विराजमान थका वर्त छै, ते क्षेत्रने विषे पोहता एटले शिष्य कहे केम पोहता ? तोके, अफ़समाण गति निर्मेल चेतन भात्र महंत. एटले अफ़ु-समाण कहतां वीजा प्रदेश अणकरसे एटले जे इहां आकाशरूप क्षेत्रना प्रदेश फरस्या हता तेहीज समश्रेणीना तिहां फरस्या छै. पिण वीजा प्रदेश अणफरसै. अने गति कहेतां पहनी गतियें वर्तता पींहच्या अने निर्मल

कहतां कमें रूप मेल थकी रहित. अने एहबी रीते कमें रूप मलथकी रहित थया स्यारे चेतन मात्र महंत. एउले चेतन भाग कहतां शुद्ध ज्ञानादि चेतना गुण रूप भावे करीने सहित, अने महंत कहेतां एहवी मोटी शक्तिना धणी जाणवा. अने वली सिद्ध परमात्मा केहवा है ? तोके. चर्म त्रिभाग विहीन प्रमाणे जस अवगाह. एटले चर्म त्रिभाग कहेतां छेहला शरीरनो त्रीजो भाग,अने विहीन कहतां घटा-डीते. अने प्रमाणे कहतां वे भागना शरीर प्रमाणे आत्म प्रदेशनो घनकरी, जस्र अवगाह एटले जस कहतां जेहनी, अने अवगाह कहतां ते प्रमाणे अवगाहना करी, सिद्ध क्षेत्रने विष विराजमान थका वर्ते छे. अने वली सिद्ध केहवा

ं अध्यात्मगीताः

११९

छै ? तो के, आत्म प्रदेश अरूपा खंडा नंदा बाह एटले आत्म प्रदेश अरूपा कहतां आत्मानो स्वरूप असंख्यात प्रदेश रूप अरूपी
छै अने अखंडा कहतां कोईनो खंड्यो खंडाय
नहीं, भेद्यो भेदाय नहीं, छैद्यो छैदाय नहीं,
सदाकाल शाश्वतो वर्ते छै, अने नंदा कहतां
आनंदमयी अने अवाह कहतां ए आनंद प्रगट्यो छै पिण केहवो छै ? तोके, अवाध्य
एटले बाधा रूप पीड़ाथकी रहित जाणवो अने
वली सिद्ध परमात्मा केहवा छै ? ॥ ३८॥

ढाल:--

जिहां एक सिद्धारमा तिहां छे अ-नंता । अवन्ना अगंधा नहीं फास-

१२० अध्यात्भगीताः

मंता ॥ आत्म गुण पूर्णतावंत संता। निराबाध अत्यंत सुखा स्वादवंता ॥ ३९॥

अर्थः — जिहां एक सिद्धात्मा तिहां छे अनंता एटल जिहां एक सिद्धात्मा कहतां जेणे क्षेत्रे एक सिद्ध परमात्मा ल, तेणे क्षेत्रे अनंता सिद्ध परमात्मा भेला मिलीने रहाा छे. पिण ते सिद्ध केहवा छे? तोके, अवसा अगन्धा नहीं फासमंता एटले अवसा कहतां पांच वरण थकी सिद्ध रहित छे. अने अगधा वे गंधथकी पिण रहित छे. अने वली सिद्ध केहवा छे? तोके, नहीं फासमंता एटले नहीं फासमंतीं कहतां आठ फरस रूप शरीरथकी

१२१

पिण सिद्ध रहित छे. अने वली सिद्ध केहवा छै ? तोके, आत्म गुण पूर्णतावंत संता. एटले आत्म गुण कहतां पोताना आत्माना ज्ञानादि अनंत गुण, अने पुरण कहतां एहवी रीते सम्पूर्ण पणे अने संता कहतां संतभावे छतापणे प्रगट्या छै. अने वली सिद्ध केहवा छे? तोके, निराबाध अत्यन्त सुखा स्वादवंता एटले, निरावाध कहतां सर्वे प्रकारे अबाध्य एटले बाधा रूप पीड़ाथकी सिद्ध रहित छे. अने वली सिद्ध केहवा हैं? तोके, अत्यंत सुख स्वादवंता एटले अत्यंत स्रख कहतां च्यारे निकायना देवताना इंद्रीय-जनित प्रद्रलीक जे सुख ते त्रणे कालना लें ने भेला करिये, तेहने अनन्त गुणा वर्ग र्वागत करिये; विण सिद्ध परमात्मा अजरामर

स्थानके आत्मिक सुख अनुभवे छै, ते सुख ने तोले एक समय मात्र पिण न आवे. अने स्वादवंता कहतां ए विभाविक सुखने अभावे स्वभाविक सुखनो आस्वादन पर्ते करे छै. अने वळी सिद्ध परमात्मा केहवा छै ? ॥३९॥

चालः—

कर्ता कारण कार्य निज परिणामिक भाव । ज्ञाता ज्ञायक भोग्य भोका ग्रुद्ध स्वभाव ॥ श्राहक, रक्षक, व्यापक, तन्मयताये लीन, पूरण आतम धर्म प्रकाश रसे लयलीन ॥४०॥

१२३

अर्थ:-कर्त्ता कारण कार्य निज परि-णामिक भाव एटले कर्ता ते सिद्धनो जीव अने कारण कहतां पोताना ज्ञानादि अनन्त गुण पर्ते कारण रूप नीपना छे. अने कार्य कहतां ते गुणम रमण करवा रूप कार्य जाणवो. अने निज परिणामिक भाव. एटले निज कहतां पोतानो, अने परिणामिक भाव कहतां नैगम, संग्रह नयनें मते जीवनी सत्ताये परिणामिक भाव रह्यो हतो तेहवो जे एवंभूत नयनें मते सिद्धि रूप कार्य मतें नीपनो तेहने विषे वर्ते छे. अने वली सिद्ध परमात्मा केहवा छैं ? तो के, ज्ञाता ज्ञायक भोग्य भोक्ता **शुद्ध** स्वभाव एटले जाता कहतां ज्ञाने करीने, अने ज्ञायक कहतां अनेक ज्ञेय पदार्थ प्रते

जाणे है, अने वली सिद्ध परमात्मा केहवा है ? तो के, भोग कहतां पोताना ज्ञानादि अनन्त गुण रूप पर्याय पर्ते, अने भोक्ता कहतां तेहना भोगने विषय सदाकाल निरंतर पणे वर्ते है. अने वली सिद्ध परमात्मा केहवा है ? तो के. श्रद्ध स्वभाव एटले श्रद्ध कहतां निर्मल कर्म रूप उपाधि थकी रहित, अने स्वभाव कहतां एहवो पोतानी स्वभाव पते नीपनो छे' अने वली सिद्ध केहवा छे ? तोके, ग्राहक, रक्षक, व्यापक, तन्मयताये लीन. एटले ग्राहक कहतां ए पर स्त्रभाव विभाव दशाना अनादि कालनो ग्रहणपणो हतो ते निवारीने पोताना स्वरूपनो ग्रहण कर्यों है. अने वली सिद्ध परमात्मा केहवा है?

१२५

तो के. रक्षक कहतां पोताना स्वरूप थकी भिन्न कहतां एहवी पुद्रलादि अनित्य वस्त तेहना अनादिकालना रक्षक हता तिहां थकी मति निवारीने पोताना स्वभाव रक्षक पणे प्रणम्या है. अने वर्ली सिद्ध परमात्मा केहवा छै ? तो के, व्यापक कहतां ए पर परिणति रूप विभाव दशाने अनादि कालनो व्यापक पणो हतो. तिहां थकी मति निवारीने पोताना व्यापक पणे जनम्या छे. अने तन्मयताये छीन. एटले तन्मयताये कहतां तेहने विषे तन्मय रूप एकाग्रता पणे लीन थका वर्से है. अने वली सिद्ध परमात्मा केहवा छै ? तो के पूरण आतम धर्म प्रकाश रसे लयलीन, एटले

पूरण कहतां सम्पूर्ण, अने आत्मधर्म कहतां पोतानो अनन्त गुण रूप आत्मिक धर्म पते अने प्रकाश कहतां तेहनां सत्तागतने विषे प्रकाश प्रते प्रगट्यों है अने रसे लयलीन. एटले रसे कहतां तेहना रसनें विषे सदाकाल लयलीनपणे वर्ते है एटले हिवे द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावरूप चार भांगे करी सिद्धनो स्वरूप ओलखावे है ॥ ४० ॥

ढाल:---

द्रव्यथी एक चेतन अलेशो। क्षेत्रथी जे असंख्य प्रदेशी॥उत्यात वली नाश ध्रुवकाल धम्मी। शुझ उपयोग गुणभाव शर्म ॥४१॥

१२७

अर्थ:—द्रव्यथी एक चेतन अलेसी. एटले द्रव्यथकी सिद्धने एक चेतन कहिये. एटले चेतन कहतां शृद्ध ज्ञानादि चेतना रूप गुणे करीने सहित माटे चेतन कहिये. अने अलेसी कहतां कृष्णनील कापोतादि छ लेज्यायकी सिद्ध रहित छे माटे अलेशी कहिये. क्षेत्रथी जे असंख्य प्रदेशी. एटले क्षेत्र थकी सिद्धने स्वक्षेत्र रूप असंख्यात प्रदेशी कहिये. उत्पात नाश ध्रुव काल धर्म. एटले काल थकी सिन्दने उत्पात कहतां अभिनव पर्चाय ना जाणवा-देखवापणानी समय २ उपजवी थातो जाय अने नाश कहतां पूर्व पर्यायना जाणवा-देखवापणानो समय २ व्यय कहतां नाश थातो जाय. अने ध्रव कहतां सिद्धने

ज्ञानादि अनन्त गुण प्रगड्या छे: ते सदाकाल ध्रवना ध्रव पणे शाश्वता वर्ते छे. अने धर्म कहतां एहवी रीते सिद्धने ज्ञान, द्योन, चारित्र आदि अनंत गुण रूप धर्म प्रगट्या है; तेहने विषे सदाकाल पर्यायनी उत्पात व्यय थड रह्यो छै. अने वली सिद्ध केहवा छे ? तो के, श्रद्ध उपयोग गुण भाव शर्म. एटल भाव-थकी सिद्ध परमात्माने गुण भाव कहतां पो-ताना ज्ञानादि अनन्त गुण भाव रूप प्रगट्या छै, तेह रूप शर्म कहतां जे घर, अने शुद्ध उपयोग कहतां तेह धरने विषे सदाकाल निरंतरपणे सिद्ध परमात्मा, श्रुद्ध कहतां निर्मल उपयोगवंत थका वर्ते छे. एणी शीते द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावे करी सिद्ध परमात्मानो

१२९

स्वरूप जाणवोः अने वली सिद्ध परमात्मा केहवा छैं ? ॥ ४१ ॥

चालः--

सादि अनंत अविनाशी अप्रयासी परिणाम । उपादान गुण तेहिज कारण कारय धाम ॥ गुद्ध निक्षेप चतुष्टय जुत्तो रत्तो पूर्णानंद।केवल नाणो जाणे तेहना गुणनो छंद ॥४२॥

अर्थः—सादि अनन्त अविनाशी अप-यासी परिणाम. एटले वली सिद्ध केहवा छे ? के, सादि अनन्त. एटले सादि अनन्त कहतां ह

एक सिद्ध आश्रय जे सिद्धि वर्या तेहनी आदि छे. ते आदि मे सिद्धि वर्या पिण तेहनो पाछो फरि अंत नथी. जे फलाणे दिन सिद्ध पाछा संसार में आवसे (अर्थात नही आवे) तेहनें सादि अनन्त भांगो कहिये. अने वली सिद्ध केहवा छे ? के, अविनाशी एटळे अविनाशी कहतां ए सिद्धि पद निपनो छै. पिण फिरि पाछो विनाश पणो नथी. अने वली सिद्ध केहवा है ? के अप्रयासी परिणाम. एटले अप्रयासी कहतां सिद्ध प्रयास विना अनंतो आत्मिक सुख पते भोगवे छे. अने परिणाम कहतां सिद्ध परमात्मा सदा काल निरंतर पणे पोताना परिणामिक भावनें विषे रह्या वर्चे छे. उपादान गुण तेहिज

रइर

कारण कार्य थाम. एटले वली सिद्ध केहवा छै ? के उपादान कहतां पोतानो आत्मा; अने गण तेहिज कारण कहतां पोताना ज्ञानादि अनन्त गुण कारण रूप प्रगटचा छे. अने कार्य कहतां अनेक ज्ञेय पदार्थ जाणवा-देखवा रूप पर्यायनो उत्पाद व्यय समय २ होय रह्यो छे अने एहवी रीते धाम कहतां घर, एटले पोताना आत्मस्वरूपर्ने निवास पते करचो छे; एटले ए त्रणे एक समय एकता पणे प्रणमे छे. शुद्ध निक्षेप चतुष्टय जुत्तो रत्तो पूर्णानन्दः एटले वली सिद्ध केहवा छे ? तोके शुद्ध निक्षेप चतुष्ट्य जुत्तो रत्तो. एटले शुद्ध कहतां निर्मल, निक्षेप चत्रष्ट्रय कहेतां चार निक्षेपे करी

ने, जुत्तो कहतां जुक्त प्रते वर्ते छै.

त्यारे शिष्य कहे. चार निक्षेपे करीने सिद्ध नो स्वरूप केम जाणिये ? त्यारे गुरु तद्दित् (तद् व्यतिरिक्त) शरीर आश्रये चार निक्षेपा कहे छे. एटले नाम सिद्ध कहतां सिद्ध ऐसो नाम त्रणे काल एक रूप शास्वतो वर्ते छे॥ १॥

अने थापना सिद्ध कहतां देहमान मध्येथी त्रीजो भाग घटाड़ीने वे भागना शरीर प्रमाणे आत्म प्रदेशनो घन करी थापना रुप क्षेत्र अवगाही रहाा छे.॥ २॥

अने द्रव्य सिद्ध कहतां शुद्ध निर्मल असंख्यात प्रदेशने विषे ज्ञानादि अनन्त गुण रूप छती पर्याय वस्तु रूप प्रगटघो छे.

133

इति तद्वित शरीर आश्रये द्रव्य जाणको ॥३॥
अने भावथकी सिद्धनो स्वरूप कहतां
सामर्थ पर्व्याय प्रवर्तना रूप अनन्तो धर्म
प्रगट्यो छै; तेणे करीने सदा काल नव
मवोक्षयनी वर्त्तना रूप पर्व्यायनो उत्पात व्यय
समय समय अनन्त अनन्तो होय रह्यो छै,
तेणे करीने सिद्ध परमात्मा अनंतो सुख भोन्
गवे छे॥ ४॥

एणी रीते ए चार निक्षेपे करीने सिद्ध परमात्मा रत्तो कहतां सदा काल तेहने विषे रक्त प्रतं वर्ते छे अने पूर्णानंद कहतां एहवी रीते सम्पूर्ण आत्मिक सुखनो आनंद प्रतें भोगवे छे. केवल नांणी जाणे तेहना गुणनो छन्द. एटले केवल नांणी कहतां केवली

भगवान, अने जाणे कहतां एहवी रीते सि-द्रनो स्वरूप प्रत्यक्ष पणं जाणे देखे; अने गुणनो छन्द कहतां ए सिद्ध परमात्माने अनेत गुण रूप समृह पर्ते प्रगट्यो छे, तेहने विषे अनन्तो छुख भोगवे छे ते केवली भग-वाननेज गम्य छे; पण छदमस्त ग्रुनीना जाण्यामां न आवे ॥ ४२ ॥

ढाल:--

एहवी शुद्ध सिद्धता करण ईहा। इंद्रिय सुख थकी जे निरीहा। पुद्गली भावना जे असंगी। ते मुनि शुद्ध परमार्थ रंगी॥ ४३॥ अर्थः—एहवी शुद्ध सिद्धता करण ईहा,

१३५

एटले एहवी कहतां आगल वस्वाणी तेहवी, अने शुद्ध कहतां निर्भल, अने लिद्धता कहतां एहवी रीते सिद्ध परमात्माना सम्पदा प्रतं. ते करण ईहा एटले करण ईहा कहतां एहवी सिद्धि रूप सम्पदा प्रगट करवाना जे मनिने ईहा (इच्छा) पतं वर्ते ते मनि केहवा छे ? तो के इंद्रिय सुख कहेतां पंचेन्द्रीयना त्रेवीस विषय रूप पुद्गलीक जे सुख, अने निरीहा कहतां तेहनी इहा रूप वंच्छा थकी रहित थका वर्ते छे. अने वली ए म्रनि केहवा छे तो के प्रदुलीक भावना जे असंगी. एटछै पुदुलीक भाव कहतां पोताना स्वरूप थकी भिन्न कहतां जदो एहवो श्रभाश्रभ विभाव दशा रूप जे प्रदर्शक भाव, अने जे कहतां

ते मुनि, अने असंगी कहतां तेहनी वंछा रूप संगथकी रहित न्यारा पर्ते वर्ते छे. ते मुनि शुद्ध परमार्थ रंगी. एटले ते मुनिराज शुद्ध कहेतां निर्मल बुद्धिना धणी, अने परमार्थ कहतां साध्य एक साधन अनेक, एणी रीते सत्तागतना धर्मने साथे. एहवी रीते परम कहतां उत्कृष्टो अर्थ साधवाने रंगी कहतां जेहनो चित्त पर्ते रंगाणो छे. अने एहवी रीते चित्त पर्ते रंगाणो त्यारे ? ॥ ४३ ॥

चालः--

स्याद्वाद आत्मसत्ता रुचि समिकत तेह । आत्मधर्मनो भासन निर्मल ज्ञानी जेह । आत्मरमणी चरणी

१३७

ध्यानी आत्मलीन । आत्मधर्म रम्यो तेणे भव्य सदा सुख पीन ॥ २४ ॥

अर्थ:—स्याद्वाद आत्मसत्ता रुचि समकित तेह. एटले वली ए मुनि केहवा छै ?
तोके स्याद्वाद कहतां अनेकता नयनी अपेक्षाये स्याद्वाद रूप नित्य अनित्यादि आठ
पक्षे करीने; आत्मसत्ता रुचि कहतां एहवी
रीते पोतानी आत्मसत्ताने ओलखीने तेहने
पगट करवानी रुचि पतें वतें. अने एहवी
रीते आत्मसत्ता पगट करवानी रुचि पतें
वर्ति त्यारे. समिकत तेह. एटले तेह कहतां
ते मुनिराज शुद्ध भासन रूप सम्यकत्व भावे

करीने सहित जाणवा, अने एहवी रीते सम्यक् भावे करीने सहित होय त्यारे. आत्मधर्मनो भासन निर्मेल ज्ञानी केह. एटले आत्मधर्मनो भासन कहतां शुद्ध निश्चय नये करी जोतांतो पोतानी आत्मसत्ताने विषे ज्ञानादि अनन्त गुण रूप यूर्ध रहा है. तेहनो भासन कहतां पतीत पतें प्रगटे. अने एहबी रीते प्रतीत प्रते पगरी त्यारे निर्मेल ज्ञानी जेह. एटले जेह कहतां ते म्रनि, अने निर्मल ज्ञानी कहतां ज्ञानावर्णादि कर्म रूप आर्वणने अभावै: निर्मेल जाणवणा रूप ज्ञान तेहने मगटे. अने एहवी रीते निर्धेत जाणपणा रूप ज्ञान प्रगटको त्यारे, आत्मरमणी चरणी ध्यानी आत्मलीन एटले आत्मरमणी कहतां

१३९

ते म्रनि सदा काल निरंतरपणे पोताना आत्म स्वरूपने विषे रमण पर्ते करे. अने एहवी रीते रमण प्रतें करचो त्यारे, चरणी, एटले चरणी कहतां ए शुद्ध चारित्रते विषे जे उपयोग तेहनो जाणवो. अने एहवी रोतें शुद्ध चारित्रने विष उपयोग वर्ल्यो त्यारे ध्यानी आत्मलीन. एटले ध्यानी कहतां पोताना आत्म स्वरूपना ध्यानने विषे, अने लीन कहतां तेहने विषे सटा काल तलालीन पणे वर्चे अने एहवी रीते तलालीन पणे वत्यों त्यारे. आत्मधर्म रम्यो तेणे भव्य सदा सुखपीन. एटले आत्म-धर्म कहतां शुद्ध निश्चय नये पोतानी आत्म-सत्ताने विषे ज्ञानादि अनन्त गुण रूप धर्म रहा है, ते धर्मने ओलखी मतीत करी।

अहो भव्य ! अहो उत्तम ! तेहना ध्यानने विषे सदाकाल रम्यो कहतां रमण प्रतें कर्यों अने एहवी रीते रमण करतां थकां सदा सुखपीन एटले सदा सुखपीन कहतां ते जीवने सदाकाल पीन कहतां पुष्ट सुख पतें जाणवो. त्यारे शिष्य कहे एहवी रीते पुष्ट सुखनी प्राप्ति केम नीपजे ? ॥ ४४ ॥

ढाळ:---

अहो भव्य तुम्हें ओलखो जैन धर्म । जिणै पामिये शुद्ध अध्यातम मर्म ॥ अल्प कालै टलै दुष्ट कर्म । पामिये सोय आनन्द हार्म ॥ ४५॥ अर्थः—अहो भग्य हम्हे ओहस्तो

181

जैन धर्म. एटल्ले अहो भव्य ! अहो उत्तम ! अहो सुलभवोधी जीवो ! तम्हे ओलखो जैन धर्म जिन कहतां वीतराग, राग द्वेष थकी रहित एहवा जे सामान्य केवली तेहने विषे राजा समान, एहवा जिनेश्वर देव, त्रिगडाने विषे बेसीने वस्तुधर्म जेहवी अंतरंग सत्तागते रहाो छे तेहवों जे प्रकाइयो. ते धर्मने ओछखी प्रतीत कर्यों थकी. जेणे पामिये शद अध्यात्म मर्म. एटले शुद्ध कहतां निर्मल विभाव दशा रूप उपाधि थकी रहित. एहवी अध्या-त्मनो मर्भ कहतां अंतरंग जाणपणा रूप ज्ञाने करी स्वरूप भासनतारूप मर्भ कहतां प्रतीतपर्ते प्रगटी अने एहवी रीते स्वरुप भासनतारुप प्रतीत मते प्रगरी त्यारे. अस्य काले रले दुष्ट कर्म.

पटले अल्प कहतां थोड़ा कालमे, अने दुंछ कहतां आकरा आत्मग्रणने घातना करणहार एहवा ज्ञानावर्णादि जे कर्म टले कहतां नाज प्रते पामे. अने एहवी रीते कर्मनो नाश प्रते थाय त्यारे पामिये सोय आनन्द शर्म. एटले स्व कहतां पोतानो आत्मिक स्रखनो आनंद कहतां एहवो आनंद नित्यानंद परम सुख प्रतें. अने शर्म कहतां जेहनो स्व स्थान प्रतें जिहां अनंता सिद्ध परमात्मा वसे छै, एहवी स्वस्थान कहतां घर प्रतं पामे. त्यारे शिष्य कहे-जिहां अनेता सिद्ध परमात्मा वसे छे तै घर प्रतें केम पामिये ?॥ ४५॥

चाल:---

नय निक्षेप प्रमाणे जाणे जीवा-

१४३

जीव । स्व पर विवेचन करतां थाये लाभ सदीव ॥ निश्चे ने व्यवहारे विचरे जे मुनिराज । भवसागरना तारण निर्भय तेह जहाज ॥ ४६॥

अर्थ:—नय निक्षेप प्रमाणे जाणे जीवाजीव. एटले नय कहतां नैगमादि सात नये
करी, अने निक्षेप कहतां नामादि चार
निक्षेपे करी, जाणे जीवाजीव एटले जाणे
जीवाजीव कहतां जीव अजीव रूप नव
तत्व षद् द्रव्यनो स्वरूप पर्ते जाणे तेहने
साधु श्रावकपणो जाणवो. त्यारे किष्य
कहे—नैगमादि सात नये करी, अने नामादि
चार निक्षेपे करी जीव अजीव रूप नव तत्व

षट्द्रव्यनो स्वरूप किम जाणिये ? त्यारे हिषे प्रथम गुरु कृपा करि, सात नये नव तत्वनो स्वरूप पर्ते ओलखावे छे.

एटले नैगम नयने मते सर्वे तत्व छै, जे कारण सर्वे तत्वने चाहे छे १. त्यारे संग्रह नयना मतवालो सर्वनो संग्रह करी बोल्यो (कहें) — एक तत्व. एटले जेहने मन मान्यो ते तत्व, बीजा सर्वे अतत्व जाणवा २. एटले व्यवहार नयना मतवाले बाह्य स्व-रूप देखीने भेद वेंहचवा मांड्या. एटले ए नयना मतवालो दीसता गुण देखे ते माने. मारे बे तत्व-एरले एक जीव तत्व १ अने बीजो अजीव तत्व २. एटले प्रथम जीवना के भेट-एक सकल कर्म क्षय करी लोकने

जध्यात्मगीताः

१४५

अंते विराजभान ते सिद्ध, अने वाकीना बीजा संसारी. ते संसारीना वे भेद-एक अयोगी अने बाकी बीजा सयोगी. एटले चौदमा ग्रुणस्थानना जीव ते अयोगी, बाकी बीजा सयोगी. ते सयोगीना वे भेट-एक केवली. बाकी बीजा छद्मस्थ. एटले तेरमा गुणस्थानना जीव ते केवली अने वाकी बीजा छदास्थ. एटले छग्रस्थना वे भेट-एक क्षीणमोही अने वाकी वीजा उपसंतमोही. एटले वारमा गुण-स्थानना जोव ते श्रीणमोही अने बाकी बीजा उपसंतमोही ते उपसंतमोहीना वे भेद-एक अकर्षाई बीजा सक्रषाई, एटले अग्यारमा गुणस्थानना जीव ते अकषाई, अने बाकी बीजा सकपाई. ते सकपाईना वे भेद. एक

सुक्ष्मकषाई अने बाकी बीजा बादरकषाई. एटले दशमा गुणस्थानना जीव ते सुक्ष्मकषाई अने वाकी बीजा बादरकपाई ते. बादरक-षाईना बे भेद एक श्रेणीयतिपन्न, अने बीजा श्रेणीरहित. एटले आठमा नवमा गुणस्थानना जीव ते श्रेणीपतिपन्न अने बाकी बोजा श्रेणी र-हित.ते श्रेणीरहितना वे भेद एक अप्रमादी अने बाकी बीजा सर्वे प्रमादी एटले सातमा गुण-स्थानना जीव ते अपमादी, अने बाकी बीजा सर्वे प्रमादी ते प्रमादीना वे भेद-एक सर्व विरति अने बीजा देशविरति. ते देशविरतिना बे भेद-एक विर्ति परिणाम अने बीजा अविर्त्ति-परिणाम, ते अविर्त्तिना वे भेद-एक अविर्त्ति समिकती अने बीजा मिध्यात्वी. ते मिध्या-

१४७

त्वीना वे भेट-एक भव्य, बीजा अभव्य. ते भव्यना वे भेद-एक गंठीभेदी अने बीजा जीव गंठी अभेदो. एटले एणी रीते व्यवहार नयना मतवालो जेहवो देखे तेहवा भेद वेहचे. वली जीवना वे भेद-एकत्रस १ अने बीजा थावर २ एटले थावर कहतां प्रध्वी १ अप २ तेंड ३ वायु ४ अने वनस्पति ५ ते सुक्ष्म अने बादर करतां १० (दश) भेद अने पर्याप्तो अने अपर्याप्तो करतां २० भेद जा-णवा. अने प्रत्येक वनस्पति परर्याप्तो अने अपर्याप्तो, एणी रीते एकेन्द्री थावरना २२ भेट जाणवा.

हिवे त्रसनो स्वरूप कहे छे. एटले त्र-सना ४ भेद-देवता १ नारकी २ तिर्यंच ३

अने मनुष्य. ४ ते मध्ये देवताना ९९ भेद पर्च्याप्ता अने अपर्ध्याप्ता थईने १९८ भेद जाणवा. नारकीना सात पर्ध्याप्ता, अपर्ध्याप्ता थईने १४ भेद. अने तिर्धेच जीव, गर्भज, सम्रुच्छिम एणी रीते पर्ध्याप्ता अने अपर्ध्याप्ता थईने २६ भेद. * मनुष्यना १०१ भेद पर्ध्याप्ता अने अपर्ध्याप्ता थईने २०२ अने १०१ समुच्छिम, एणी रीते ३०३ भेद. इम सर्वे त्रस थावरना थईने व्यवहार नयने मते

* बेन्द्री १ तेन्द्री २ चौरिंद्रीना ६ पर्याप्ता अपयीप्ता करने ६ मेद अने पंच इंन्द्री तिर्यंचना २० मेद, जलचर १ थलचर २ खेचर ६ उरपिर ४ भुजपिर ५ ना पर्याक्षा अपर्याप्ता, गर्भन अने इमुर्चिडम करने सर्व २६ मेद जाणवा.

१४९

जीवना ५६३ भेद जाणवा ॥ १ ॥

हिवे अजीवना भेद वेहचे छे. (देखांडे है) एटले अजीवना २ भेट-एक रूपी अने वीजा अरूपी. एटले अरूपी कहतां धर्मास्ति-काय स्कन्ध (खंध) १ देश २ अने प्रदेश ३. अधर्मास्तिकाय स्कन्ध (खंध) १ देश २ अने प्रदेश ३. आकास्तिकाय स्कन्ध (खंध) १ देश २ अने प्रदेश ३. अने अद्वा कहतां काल. सर्वे थईने १० भेद जाणवाः हवे धर्मास्तिकाय द्रव्यथकी ? क्षेत्रथकी २ कालथकी ३ भावथकी ४ नेगुणथकी ५. एणी रीते अधर्मास्तिकाय, आकास्तिकाय. तथा काल सर्वे थईने २० भेद जाणवा. अने आगला १० भेद मांही भेलतां अरूपीना सर्वे

थईने ३० भेद जाणवा ॥ २ ॥

हिवे रूपी अजीवनो स्वरूप कहे है. एटले रूपी कहेतां (स्पर्श) फरसना ८ गन्धना २ रसना ५ वर्णना ५ संस्थानना ५ एणी रीते २५ भेट ते मध्ये पांच रसना १०० पांच वर्णना १०० पांच संस्थानना १०० अने आठ स्पर्श अने वे गन्ध ए दशना २३० एटले सर्वे थईने रूपीना भेद ५३० कहिये. एणी रीते व्यवहार नयने मते अजीवना रूपी अरूपीना थईने ५६० भेद जाणवा ॥३॥ एणी रीते व्यवहार नयने मतवाले जीव अजीव रूप वे तत्त्वनी वेहचण करी देखाडी

वली शिष्य कहे-रिजु सूत्र नयने मते करी तस्त्रनो स्वरूप केम जाणिये ? त्यारे

१५१

गुरु कहे—कोई जीव शुभाशुभ परिणामे करी पुण्य पाप रूप आश्रवना दलीया बांधे तेहने अजीव कहिये एटले ए चार नय मे ए छ तत्त्व जाणवा ॥ ४॥

वर्ली शिष्य कहे—शब्द नयने मते करी तत्वना स्वरूप कम जाणिये ? त्यारे गुरु कहे—शब्द नयने मते चोथे गुणस्थाने सम-किती जीव, पांचवे गुणस्थाने देशविरती जीव, छठे सातवें गुणस्थाने सर्वविरती जीव, अन्त-रंग सत्तागत ना भासन रूप संवर भाव में वर्तता समय २ महा निर्जरा प्रते करे छै॥६॥

वर्छा शिष्य कहे—समिभिरूढ नयने मते करी तत्वनो स्वरूप किम जाणिये ? त्यारे .गुरु कहे–जे ए नयना मतवालो श्रेणी भावने

ग्रहे छे, माटे नवमा दशमा गुणस्थानथी मांडी यावत् तेरमां चौदमा गुणस्थान पर्यंत केवली भगवान पिण संवरभावमे वर्त्तता महानिजर्रा प्रतें करे छे ८ तेहने भव शरीर आश्रये द्रव्य मोक्ष पद कहिये ॥ ६ ॥ ॥ ९ ॥

अने एवंभूत नयने मते सकल कर्म क्षयकरी लोकने अंतें विराजमान सादिअनं-तमे भागे वर्त्तता एहवा सिद्ध परमात्मा तेहने भाव मोक्ष पद कहिये ॥ ७ ॥ ९ ॥ एणी रीते साते नये करी तत्वनो स्वरूप जाणवो

हिवे नामादि ४ निक्षेपे करी पर द्रव्यनो स्वरूप ओलखावे छे. एटले नामजीव कहतां नैगम नयने मते गये काले जीवतो हतो आगामी काले जीवसे अने वर्त्तमान काले

१५३

पिण जीवे छे. एहवी रीते त्रणे काल एक रूप शाक्वतो वर्ते तेहने नामजीव कहिये॥१॥

अने स्थापनाजीव कहतां जीव एहवा अक्षर लिखीने थापवा, ते संग्रह नयने मते असद्भाव स्थापना रूप जीव जाणवो. अने मांचा नीवाणमां जीव ते संग्रह नयने मते सद्भाव स्थापना रूप जीव जाणवो. ॥ २ ॥

अने द्रव्यजीव कहतां रिज्ज व्यवहार नयने मते एकेद्री थकी पंचेद्री पर्यंत पहिले गुणस्थाने अनाउपयोगे मिथ्यात्व भावे वर्ते तेहने द्रव्यजीव कहिये (अणुवओगो हवं) ए अनुयोग द्वार सूत्रनो वचन छै॥ ३॥

अने भावजीव कहतां शब्द नयने मते भौथा गुणस्थान सुं मांडी, यावत् छठा सातमा

गुणस्थान पर्यंत जीव अजीवनी ओछ-खाण, स्व परनी वेहचण करी जीव स्वरूपना उपयोगमां समिकत भावे वर्त्ते तेहने भाव-जीव कहिये (उवओगोभावं) ए अनुयोग द्वारनी साख छै॥४॥ एणी रीते चार निक्षे-पामे पांचे नये करी जीवनो स्वरूप जाणवो.

हिवे नामथकी धर्मास्तिकाय ऐसो नाम
?. अने स्थापना थकी धर्मास्तिकाय ऐसा
अक्षर लिखवा, ते स्थापना रूप धर्मास्तिकाय
जाणवो २. अने द्रव्यथकी धर्मास्तिकाय द्रव्य
असंख्यात प्रदेसी ३. अने भावथकी धर्मातितकाय द्रव्य चलण सहाय रूप जाणवो ४.

हिवे नामथकी अधर्मास्तिकाय ऐसो नाम १. अने स्थापना थकी अधर्मास्तिकाय

१५५

ऐसा अक्षर लिखवा, ते स्थापना रूप अधर्मा-स्तिकाय जाणवो २. अने द्रव्य थकी अधर्मा-स्तिकाय द्रव्य असंख्यात प्रदेसी ३. अने भावथकी अधर्मास्तिकाय द्रव्य स्थिर सहाय रूप जाणवो ४.

हिये नाम थकी आकास्तिकाय एसो नाम ? अने स्थापना थकी आकास्तिकाय सेसा अक्षर लिखना, ते स्थापना रूप आका-स्तिकाय जाणनो २ अने द्रव्य थकी आका-स्तिकाय द्रव्य अनन्न प्रदेसी ३. अने भाव-थकी आकास्तिकाय द्रव्य अनुगाहना रूप जाणनो ४.

हिये नामथकी कालद्रव्य एसो नाम १. अने स्थापना थकी कालद्रव्य एसो अक्षर

िछखना, ते स्थापना रूप काल जाणवोर अने द्रव्य थकी कालनो एक समय लोकमे सदा काल शाश्वतो वर्ते छै३. अने भाव थकी काल द्रव्य नवां पुराणा वर्त्तना रूप जाणवो ४.

हिवे भावथकी पुद्गलास्तिकाय ऐसो नाम १. अने स्थापना थकी पुद्गलास्तिकाय ऐसा अक्षर लिखवा, ते स्थापना रूप पुद्ग-लास्तिकाय जाणवो २. अने द्रव्यथकी पुद्-गल द्रव्यना अनन्ता परमाणुंवा लोकमे सदा काल शास्त्रता वर्ते छे ३. अने भाव थकी पुद्गल द्रव्य गलण पूरण मिलण विखरण रूप जाणवो ४.॥ ६॥

एणी रीते जीव अजीव रूप षट् द्रव्य मे चार चार निक्षेपा जाणवा.

१५७

हिवे नव तत्त्व नो स्वरूप नय रूप चार निक्षेपे करी ओलखावे छे. तिहां प्रथम जीव अजीव रूप पट् द्रव्य नो स्वरूप कहाो.

हिंवे उदय भाव रूप पुण्य में निक्षेपा उतारे छे. एटले नाम पुण्य कहतां नैगम नयने मते गये काले प्रण्य एहवो नाम वर्ततो हतो अने आवते काले पिण पुण्य एहवो नाम वर्त्तस्यै. अने वर्तमान काले पिण ते नाम वर्त्ते छे. एहवी रीते नैगम नयनें मते त्रणे काल एक रूप साञ्चतो वर्ते. तेहर्ने नाम प्रण्य कहिये १ अने स्थापना पुण्य कहतां पुण्य ऐसा अक्षर छिखीने थापत्रा ते संग्रह नयनें मते असदभाव स्थापना रूप प्रण्य जाणवोः अने कमे सत्ताना प्रकृति रूप दछीया जीवनी

सत्ताये लागा छै, ते संग्रह नयने मते सद्भाव स्थापना रूप पुण्य जाणवो २ अने द्रव्यपुण्य कहतां उदय भाव ने जोगे व्यवहार नयने मते ते दलीयानो उदय थयो ते भव शरीर आश्रय उदय भाव रूप द्रव्य पुण्य जाणवो ॥ ३॥

अने भाव पुण्य कहतां रिजु सूत्र नयने मते मन, वचन, कायाये करी व्यवहार नयने मते ऊपर थकी पुण्य रूप दलीयानो भोग-वणो ते भाव रूप पुण्य जाणवो.

हिवे पुण्य रूप करणीनो करवो, ते ऊपर निक्षेपा लगावे छे. एटले नाम पुण्य कहतां पुण्य एहवो नाम ते नैगम नयने मते त्रणेकाल एक रूप पणे वर्ते छे १. अने

१५९

स्थापना पुण्य कहतां पुण्य ऐसा अक्षर लिखीने थापवा, ते संग्रह नयनें मते असद-भाव स्थापना रूप पुण्य जाणवो. अने कोई जीव पुण्य रूप करणी करे छे एहबी मृति स्थापवी, ते सद्भाव स्थापना रूप पुण्य जाणवो २. अने द्रव्यपुण्य कहतां ऊपर थकी अरुचि भावे अणा उपयोगे व्यवहार नयने मते पुण्य रूप करणीनो करवो, ते सर्वे तद्-वित शरीर आश्रय द्रव्य पुण्य जाणवो ३. अने भाव प्रणय कहतां रिज सूत्र नयने मते मन, वचन, कायाये करी एक चित्ते व्यवहार नयने मते ऊपर थकी पुण्य रूप करणीनो करवो ते सर्वे भाव पुण्य जाणवो ४.

हिवे उदय भाव रूप पापमां निश्लेपा

लगावे छे. एटले नाम थकी पाप कहतां पाप ऐसो नाम ते नेगम नयने यते त्रगे काल एक रूप पणे वर्त्ते छे ?. अने स्थापना पाप कहतां पाप अक्षर लिखीने स्थापवा ते संग्रह नयने मते असद् भाव स्थापना पाप जाणवो. अने कर्म सत्ताना पकृति रूप दलीया जीवनी सत्ताये लागा छे ते संग्रह नयने मते सद्भाव स्थापना रूप पाप जाणवो २. अने द्रव्य पाप कहतां उदय भावने जोगे व्यवहार नयने मते ते दलीयांनो उदय थयो ते सर्वे भव शरीर आश्रय उदय भाव रूव द्रव्यं पाप जाणवो है अने भाव पाप कहतां रिज सूत्र नयने मते मन, वचन कायाये करी व्यवहार नयने मते ऊपर थकी पाप रूप दलीयानी भोगवणो ते सर्वे भाव

रहर

रुप पाप जाणवो ४.

हिवे पाप रूप करणीनो करवो ते ऊपर निक्षेपा लगावे छे एटले नाम पाप कहतां पाप ऐसो नाम, ते नैगम नयने मते त्रणे काल एक रूप पणे वर्ते छे १. अने स्थापना पाप कहतां पाप एहवा अक्षर लिखीने थापवा, ते संग्रह नयने मते असद्भाव स्थापना रुप पाप जाणवो. अने कोई जीव पाप रुप करणी करे छै एहवी मूर्ति स्थापवी ते सद्भाव स्थापना रूप पाप जाणवो २ अने द्रव्य पाप कहतां ऊपर थकी अरुचिभावे अणाउपयोगे व्यवहार नयने मते पाप रूप करणीनो करवो. ते सर्वे तद्वित (तद्वव्य-तिरिक्त) शरीर आश्रय द्रव्य पाप जाणवो 6

३. अने भावपाप कहतां रिज्ज सूत्र नयने मते मन, वचन रूप, कायाये करी एकचिते व्यव-हार नयने मते उपस्थकी पाप रूप करणीनो करवो, ते सर्वे भावपाप जाणवो ४.

हिवे आश्रव में निक्षेपा छगावे छै.
एटछे नामआश्रव कहतां आश्रव ऐसो
नाम, ते नैगम नयनें मते त्रणे काछ
एक रूप पणे वर्ते छे १. अने स्थापनाआश्रव कहतां आश्रव एहवा अक्षर छिखीने
स्थापवा, ते संग्रह नयने मते असद्भाव
स्थापना रूप आश्रव जाणवो, अने आश्रव
रूप मूर्ति स्थापवाने संग्रह नयनें मते सद्भाव स्थापना रूप आश्रव जाणवो २ अने
दुन्यआश्रव कहतां बेताछीस प्रकार रूप

183

आश्रव ने घड़नाले करी व्यवहार नयने मते शुभाश्वम आश्रव रूप दलीयानो ग्रहण करवो ते सर्वे तद्वित् शरीर आश्रय, द्रव्यआश्रव कहिये ३. अने भावआश्रव कहतां रिजु व्यवहार नयने मते मन, वचन, कायाये करी उद्यभावने जोगे ते दलियानो भोगवणो, तेहनें उदयभाव रूपभाव आश्रव कहिये ४.

हिवे संवर मे निक्षेपा उतारे छे. एटले नामसंवर कहतां जे संवर ऐसो नाम, ते नैगम नयने मते त्रणे काल एक रूप जाणवो १. अने स्थापनासंवर कहतां जे संवर ऐसा अक्षर लिखीने स्थापना, ते संग्रह नयने मते असद्भाव स्थानना रूप संवर जाणवो. अने संवर रूप मूर्ति स्थापनी, ते संग्रह नयने मते

सदुभाव स्थापना रूप संवर जाणवी २. अने द्रव्यसंवर कहतां जे व्यवहार नयने मते उपरथकी अरुचि भावे लोक देखाडवा रूप पोषापडिकमणा सामायक आदे अनेक प्रकारे संवरनी करणी करवी, ते सर्वे तदवित शरी-रआश्रय द्रव्यसंवर हथा रूप जाणवो ३. अने भावसंवर कहतां जे रिज़ सूत्र नयने मते मन. वचन, कायाये करी यथाप्रवृत्ति रूप करण-ना परिणामे पोसा पडिकमणां व्रत पचक्खाण आदे व्यवहार नयने मते ऊपरथकी संवर रूप करणाना करवो ४.

एटले ए च्यार नयना च्यार निक्षेपा यथाप्रहृत्ति करण रूप संवर जागवो.

विलि नाम थकी संवर कहतां जे संवर

१६५

ऐसो नाम, ते नैगम नययं मते जाणवो १. अने स्थापना थकी संवर कहतीं जे संवर ऐसा अक्षर लिखोनें स्थापवा, ते संग्रह नयने मते असद्भाव स्थापना रूप संवर जाणवी. अने संवर रूप मूर्ति स्थापवी, ते संग्रह नयने मते सद्भाव स्थापना रूप संवर जाणवो २. अने द्रव्यसंवर कहतां जे रिज़ सूत्र नयने मते मन, वचन, कायाये करी व्रत पचक्खाण रूप उपरथकी व्यवहार नयने मते संवर रूप करणीनो करवो, ते सर्वे तद्वित शरीर आश्रय द्रव्य संवर जाणवो 🧎 अने भाव संवर कहतां जे शब्द नयने मते जीव अजीव रूप. स्वसत्ता पर सत्तानी वेहचण करी स्थिरता रूप परिणामे आगळ द्रव्य निक्षेपा

१६६

अध्यात्भगीताः

मध्ये रिज व्यवहार नये संवर रूप करणी कही, ते करतां थकां महा निर्जरा प्रते करें ते सर्वे भाव संवर जाणवो. एणी रीते संवर में पांच नय में चार निक्षेपा जाणवा ४

हिवे निर्जरांभे निक्षेपा उतारे छै एटले नाम थकी निर्जरा कहतां जे निर्जरा ऐसो नाम, ते नैगम नयने मते त्रणे काल एक रूप पणे जाणवो १. अने स्थापना थकी निर्जरा कहतां जे निर्जरा एसा अक्षर लिखवा, ते संग्रह नयने मते स्थापना रूप निर्जरा जाणवी २. अने द्रव्यनिर्जरा कहतां जे व्यवहार नयने मते रिज्ज सूत्रना उपयोग सहित मिथ्यात्व भावे अकाम निर्जरा दस्त्री, ते सर्वे तद्वित् श्रार आश्रय द्रव्यनिजरा जाणवी ३. अने

१६७

भावनिर्भरा कहतां जे शब्द नयने मते जीव अजीव रूप पट्ट द्रव्य नव तत्वाो जाणपणो पतीत करी, रिजुना उपयोग सहित ऊपर थकी व्यवहार नयने मते बारे भेदे तपस्या रूप करणीनो करवो, ते भावनिजरा जाणवी ४. एणी रीते पांच नयमां चार निक्षेपा निर्मरा रूप जाणवा.

हिवे बंधमे निक्षपा उतारे छै एटले नाम
थर्का बंध कहतां जे बंध एसो नाम, ते नैगम
नयने सते जाणवो १. अने स्थापना थकी
बंध कहतां जे बंध ऐसा अक्षर लिखीने
स्थापना, ते स्थापना रूप बंध जाणवो २.
अने द्रव्य थकी वंध कहतां जे प्रकृतिबंध,
स्थिति बंध, रसवंध, पदेशवंध; एणी रीते

चार प्रकार बंध रूप दलीयां जीवनी सत्ताये वांध्यां छै; ते संग्रह नयने मते कमसत्ता रूप भव करीर आश्रय द्रव्यवंध जाणवो ३. अने भावबंध कहतां जे व्यवहार नयने मते ते दलीयानो उदय थयो, ते उदय भाव रूप भाव बंध जाणवो ४. एणी रीते उदय भाव रूप बंधमें त्रण नयमां ए च्यार निक्षेपा जाणवा.

वली नामथकी वंध कहतां जे वंध ऐसो नाम, ते नैगम नयने मते जाणवो ? अने स्थापना थकी वंध कहतां जे वंध ऐसा अक्षर लिखवा अथवा वंध रूप मूर्ति स्थापवी, ते स्थापना रूप वंध जाणवो २ अने द्रव्यवंध कहतां जे आगल चार प्रकारे बंध रूप

१६९

दलीया संग्रह नयने मते जीवनी सत्ताये रहा। छै, तेहनो स्थिति पाके व्यवहार नयने पते उदय थयो, ते सर्वे तद्वित श्रार आश्रय द्रव्यबंध जाणवो ३. अने भाव थकी बंध कहतां जे रिज सूत्र नयने मते मिथ्यात्व अवृत्त कषाय योग रूप सत्तावन ५७ बंध हेत् प्रमुख जीवना परिणाम, एटले तेहनी चिकासे, वली पाछो कर्म रूप दलीयानो बंध पांडे माटे रिज सूत्र नयने मते तेहने भावबंध कहिये ४. एणी रीते बंधमें चार नयमां चार निक्षेपा जाणवा.

हिवे मोक्षनीःकर्भ अवस्थामे निपेक्षा उतारे छे. एटले नाम थकी मोक्ष कहतां जे मोक्ष ऐसो नाम १. स्थापना थकी

ৃ ও ০

अध्यात्मगीता.

मोक्ष कहतां जे मोक्ष रूप मृति स्थापवी अथवा मोक्ष ऐसा अक्षर लिखवा २, अने द्रव्यमोक्ष कहतां जे समभिरूढ़ नयने मते शुद्ध शुक्कध्यान रूपातीत परिणाम रूप क्षपक श्रेणीये अज्ञान रूप राग द्वेपने मोहनी कर्मनो करचो क्षय .<mark>बारमे गुणस्थाने,</mark> अने केवल बान पाम्यां, एहवा केवली भगवानने भव श्रुशीर आश्रय द्रव्यमोक्ष पद कहिये ३. अने भावमोक्ष कहतां ेज एवंभ्रत नयने मते अष्ट कर्मने क्षये, अष्ट गुण सम्पन्न लोकनें अंते विराजमान पहवा सिद्ध परात्माने भावमोक्ष पढ जाणवो ४.

एणी रीते जीत अजीव रूप पर द्रव्य, नव तत्वमे नय संयुक्त निक्षेपा जाणवाः

अने प्रमाणे कहतां प्रत्यक्ष अने परोक्ष

१७१

ए वे प्रमाणे करीने जेणे नव तत्व, षट् द्रव्यनो स्वरूप प्रते जाण्यो छे. अने एहवी रीते जीव अजीव रूप नव तत्व षट् द्रव्यनो स्वरूप नय निक्षेप प्रमाणे करीने जाण्यो त्यारे. स्व पर विवेचन करतां थाये लाभ सदैव. एटले स्व पर विवेचन करतां कहतां जीव अजीवनो स्वरूप भिन्न २ प्रकारे जाणीने वेहचे.

त्यारे शिष्य कहे-जीव अजीवनो स्व-रुप भिन्न २ प्रकारे करी किम जाणे ? त्यारे गुरु कहे-जीव छे ते ज्ञानादि चेतनारूप गुण करीने सहित निश्चय नये करीने सत्ताये सिद्धसमान सदा काल शास्त्रतो वर्ते छे. अने व्यवहार नये करी जीवने पुण्य पाप रूप

१७३

अध्यात्मगीताः.

शुभाशुभ फल्लनो भोक्ता जाणवो; अने अजीव कहतां पांचद्रवय कितनारहित अजीवरूप जड़स्वभाव (ते) न जाणे सुखने, न जाणे दु:खने. त्यारे शिष्य कहे—ए तो सामान्य प्रकारे अर्थ कह्यो पिण विशेष रीते स्वपरनी वेहचणरूप जीवनो स्वरूप किम जाणिये?

त्यारे गुरू कहे-एगोहं. एटले एगोहं कहतां हं एक छं, म्हारो कोई नथी ?.

सासियो अप्पा एटले सासियो अप्पा कहतां म्हारो जीव शाक्वतो छै २.

नाण दंशण संयुक्तो. एटले नाण दंशण संयुक्तो कहतां हूं ज्ञान दशेणे करीने सहित छूं ३.

⁺ धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ धद्रहास्तिकाय ४ ओरकाछ ५.

१७३

सो सविवाहिरा भावा, ते सर्वे संयोग लक्षणा एटले सो सविवाहिरा भावा कहतां जे म्हारा स्वरूप थकी बाह्य वस्तु कहतां जे अलगी ते सर्वे संयोगे मिली छे; अने वियोगे जाशे, तेहमां म्हारे स्थो विगाड थाशे ? ४.

अने संयोग मूला जीवाणं. एटले संयोग मूला जीवाणं कहतां ए संयोगी वस्तुने विषे जीव मुंझाणो. एटले पत्ता दुःखं परम्परा. एटले पत्ता दुःखं कहतां ते जीव दुःखनी परम्परा पते पामे ५.

माटे, तमहं संयोग संवंध एटले तमहं संयोग सम्बन्ध कहतां ए संयोगी वस्तु म्हारा स्वरूप थकी भिन्न कहतां जुदी छे-ए शर्रारादि पुत्र कलत्र परिवार मधुख ६.

१७४.

अध्यातमगीता.

सबंतिविहेण वोसरे. एटले सबंतिविहेण कहतां हुं मन, वचन, कायाये करीने वोस-रावुं छुं ७.

हुं चेतन छुं, ए पुद्गलनो स्वभाव ते अचेतन छे ८.

हुं अरूपी छुं, ए पुद्गल रूपी छे. म्हारी ज्ञानादि चेतना लक्षण स्वभाव छे, आ पुद्ग-लनो जड़ स्वभाव छे ९.

हुं अमूर्त्तिछुं, आ पुद्गल मूर्ति छै १०.

हुं स्वभाविक छुं, आ पुद्गल विभा-विक छे ११.

हुं शुचि कहतां पवित्र छुं, आ पुद्गछ अपवित्र छे १२.

म्हारी शाक्त्रतो स्वभाव छे, आ पुद्रलीक

१७५

वस्तु मने मली छै, ते सर्वे अशाक्वती छै १३.

म्हारो ज्ञानादि रूप छे, आपुदगलनो पुरण गलण रूप छे. १४.

म्हारो अचलित स्वभाव छै. एटले किवारे स्वरूपथकी चल्हं नहीं, अने पुद्गलनो चलित स्वभाव छै १५.

म्हारो ज्ञान, दर्शन, चारित्र, मयी स्वरूप छे, आपुदगलनो वर्णगंघादि रूप छे, हुं वर्णगंघादिक सुंरहित छुं १६.

सुधोहं. एटले सुधोहं कहतां हुं शुद्ध निर्मल छुं १७.

बुधोहं. एटले बुधोहं कहतां हुं ज्ञानानंद-छुं १८.

निर्विकल्पोऽहं. एटळे निर्विकल्पोइं कहतां

१७६

अध्यात्मगीता.

हुं सर्वे विकल्प सुं रहित छुं म्हारो स्वरूप न्यारो छे १९.

देहातीतोऽहं. एटले देहातीतोऽहं कहतां आ देह रूप जे शरीर तेह थकी हुं रहित छुं. २०.

अने अज्ञान राग द्वेष रूप जे आश्रव ते म्हारो स्वरूप नहीं, हुं एण सो न्यारो छुं. २१.

अनंत ज्ञानमयी, अनंत दर्शनमयी, अनंत चारित्रमयी, अनंत वीर्यमयी ए म्हारो स्वरूप छे. २२.

शुद्ध. एटले शुद्ध कहतां हुं कर्म रूप मलसुं रहित छु २३.

बुद्ध. एटले बुद्ध कहतां हु ज्ञानस्वरूपी छुं. २४.

१७७

अत्रिनाशी एटले अविनाशी कहतां म्हारो कोई काले नाशपणो नथी २५.

अजरा एटले अजरा कहतां **हूं जरा** स्रं रहित छं २६

अनादि एटछे अनादि कहतां म्हारी आदि नर्था २७.

अनंत. एटछे अनंत कहतां म्हारो कोई काले अंत कहतां छेडो पिण नथी २८.

अक्षय. एटले अक्षय कहतां म्हारो कोई काले क्षय नथी २९.

अक्षर एटले अक्षर कहतां हूं कोई काले खर्द नहीं ३०.

अचल एटले अचल कहतां हूं काई काले स्वरूप सूं चलूं नहीं ३१.

अकल एटले अकल कहतां म्हारो स्वरूप केम सुं कल्यो जाय नहीं ३२.

अमल. एटले अमल कहतां हूं कर्म रूप मलसुं रहित न्यारो छूं ३३.

अगम. एटले अगम कहतां म्हारी कोयने गम नथी ३४.

अनामी. एटले अनामी कहतां हूं नाम सूं रहित न्यारो छुं ३५.

अरूपी. एटले अरूपी कहता हुं ए विभाव दशाना रूप सुंरहित छुं ३६.

अकर्मी एटले अकर्यी कहतां हुं कर्म रूप उपाधि सुं रहित हुं ३७.

अवंधक. एटले अवंधक कहतां हुं कर्म

१७९

रूप बंधन सुं रहित, म्हारो खेळ न्यारो है ३८.

अणुदीय. एटले अणुदीय कहतां हुं जदय भाव सुं रहित छुं ३९.

अयोगी. एटले अयोगी कहतां हुं मन, बचन, कायाना योग सुंन्यारो छुं ४०.

अभोगी. एटले अभोगी कहतां हुं शुभा-शुभ रूपविभाव दशाना भोग सुं रहितछुं ४१.

अरोगी एटले अरोगी कहतां हुं कर्म रूप रोग सुंन्यारों छं ४२

अभेदाः एटळे अभेदी कहतां हुं कोईनी भेद्यो भेदाऊ नहीं ४३.

अवेदी. एटले अवेदी कहतां हुं त्रण वेद सुं न्यारो हुं ४४.

अछेदी. एटले अछेदी कहतां हु कोईनो छेदचो छेदाऊँ नहीं ४५

अखेदी. एटले अखेदी कहतां हुं स्वरूप रमण में खेद पाग्नं नहीं ४५.

असर्खाई. एटले असर्खाई कहतां म्हारं कोइ सर्खाई भूत (साक्षीभृत) नथी. हुं म्हारे पराक्रमे करी सहित छुं पिण म्हारा अवला (उलटा) परिणमन थकी वंधाणो छुं ४७.

अने हुं सवलो (सुलटो) नणमीस त्यारे छुटीज्ञ. पिण मने कोई बांचवा छोडवा सामर्थवान नथी ४८.

अलेशी. एटले अलेशी कहतां हुं छ ६ लेश्याथी रहित न्यारी छुं अने लेश्यारूप ते

१८१

धुद्रल छै, अने महारो रूप ते ज्ञानामंद छै ४९.

अशरीरी. एटले अशरीरी कहतां हुं शरीर रूप जड़ सुं रहित शुद्ध, चिदानंद, पूर्ण ब्रह्म छुं ५०.

अभाषी एटले अभाषी कहतां हुं भाषा रूप पुद्गल सुं रहित पूरण देव छुं. ए भाषा रूप ते पुद्गल छे ५१.

अनाहारी. एटले अनाहारी कहतां हुं च्यारं आहार रूप पुद्गलना भोग सें रहित, अने पर्ध्याय रूप भागना विलासी छुं ५२.

अन्यावाध. एटळे अन्यावाध कहतां हुं

^{*}असणं १ पाणं २ खादिम् ३ स्वादिम् ४

बाधापिड़ा रूप दुःख सुं रहित—अनंत सुख विलासी छुं ५३.

अनअवगाही. एटले अनअवगाही कहतां म्हारो स्वरूप कोई द्रव्य अवगाहि सके नहीं ५४.

अगुरुलघु. एटले अगुरु कहतां मोटो नहीं अने अलघु कहतां छोटो पण नधी. वली भारे नहीं, हलवो नहीं ५५.

अपरिणामी. एटले अपरिणामी कहतां हुं मन रूप परिणाम सुं रहित छुं ५६.

अनेन्द्री. एटले अनेन्द्री कहतां हुं इंद्री रूप विकार मुं रहित-न्यारो, इच्छायोगी छुं ५७.

अमाणी एटले अमाणी कहतां हुं दश

१८३

पाण रूप पुद्गल सुं रहित. म्हारो खेल न्यारो हे ५८.

अयोनी एटले अयोनी कहतां हुं चो-रासी लाख जीवायोनी रूप परिश्वमणपणा सुं रहित, निश्चय देव छुं ५९.

असंसारी. एटले असंसारी कहतां हुं चार गति रूप संसार छुं रहित; पूरण आत्माराम छुं ६०.

अमर. एटले अमर कहतां हुं जन्म, जरा, मरण रुप दुःख सुं रहित छुं ६१.

अपर एटले अपर कहतां हुं सर्व परम्परा सुं रहित, म्हारो खेल न्यारो छे ६२.

अन्यापी. एटले अन्यापी कहतां ए विभाव रूप जड़पणा सुं रहित, हुं म्हारा

स्वरूप में सदाकाल व्यापी रह्यो छुं ६३.

अनास्ति एटले अनास्ति कहतां म्हारो कोई काले नास्तिपणो नथी. हुं म्हारा स्व-द्रव्यादिके करीने सदाकाल अस्तिपणेज वर्तुं छुं ६४

अकंप. एटले अकंप कहतां हुं कोईनो कंपायो कंपूं नहीं. एम अनंतवीर्य रूप शक्तिनो धणी छुं ६५.

अविरोध एटले अविरोध कहतां हुं कर्म रूप शञ्जनो रोध्यो रुंधाऊं नहीं, सदा काल निर्लेष कर्म रूप मल सुं रहित न्यारो, हुं म्हारे परिणामिक भावे रह्यो वर्तुं छुं ६६.

अनाश्रव. एटले अनाश्रव कहतां हुं शुभाश्रभ विभाव दशा रूप आश्रव सुं रहित

864

सदा काल न्यारो वर्त् छुं. जेम डंकने संयोगे स्फटिकने कलंक लागे पिण मूल स्वभावे जोतांतो स्फटिक शुद्ध निर्मलो छे, तेम हुं म्हारे स्वभावे निर्लेष रह्यो वर्त् छुं ६७.

अलखः एटले अलख कहतां म्हारो खब्द छद्मस्तने लख्या मे न आवे ६८.

अशोक. एटले अशोक कहतां हुं जन्म, जरा, मरण भय रूप शोक संताप सुं रहित सदा काल निरोगी, अमर रूप वर्ते छुं ६९.

अलोक. एटले अलोक कहतां हुं लौकिक मार्ग सुं रहित, म्हारो खेल न्यारो वर्ते छै ७०.

लोकालोकज्ञायक एटले लोकालोकज्ञायक कहतां हूं ज्ञाने करीने लोकालोकनो स्वरूप एक समयमे जाणवा सामर्थवान् छुं ७१.

शुद्ध एटले निर्मल, कमेरूप मलसुं रहित छुं ७२. चिदानंद एटले चिद् कहतां ज्ञान अने नंद कहतां आनंद चारित्र रूप तेणे करीने हुं सहित वर्तु छुं एहत्रो म्हारो स्वरूप सदा काल शास्त्रतो छै. ७३.

एहवी रीते,एम वेहचण करतांथाये लाभ सदैव. एटले—थाये लाभ सदैव कहतां एहवी रीते अंतरंग भासन रूप वेहचण करतां थकां ते जीवनें सदैव कहतां सदा काल निरंतरपणे लाभ प्रते नीपजे. एटले एहवी रीते सदा काल लाभ प्रते केम नीपजे? तोके निश्चेने व्यवहारे विचरे जे मुनिराय. एटले निश्चेने व्यवहारे कहतां जीव अजीव रूप पट्ट द्रव्य नव तत्वनो स्वरूप निश्चय ब्यवहार नये

१८७

जाणपणा रूप अंतरंग प्रतीत करवी, ते थकी लाभ प्रते नीपजे

त्यारे शिष्य कहे-निश्चयव्यवहार नये जीव अजीव रूप षट्ट द्रव्य नव तत्वनो स्वरूम किम जाणिये ? त्यारे गुरु कहे-निश्रय नय करी सर्व जीव सत्ताये एक रूप सरीखा सिद्धसमान शाश्वता छै: अने व्यवहार नये करी जीवनी अनेक भांति देवता, नारकी, तिर्यच, मनुष्य रूप जाणवी अने कोई जीव शभ परिणामे करी पुण्य रूप आश्र-वना दलीया बांधे तेहने अजीव कहिये ५. ते निश्चय नये करी छोडवा योग्य अने व्यवहार नये करी आदरवा योग्यः

बली कोई जीव अशुभ परिणामे करी

पाप आश्रवना दलीया बांधे तेहने अजीब कहिये ते निश्चय नये करी छांड़वा योग्य अने व्यवहार नये करी छांड़वा योग्य.

हिवे संवरनो स्वरूप कहे छै. एटले व्यवहार नये करी संवरनो स्थरूप कहतां निवृत्ति प्रवृत्ति रूप चारित्र जाणवो. अने निश्चय नये करी संवर कहतां जे पोताना स्वरूपमें रमण करवो.

हिवे निर्जरानो स्वरूप कहे छै. एटले व्यवहार नये करी निर्जराना बार भेद जाणवा. अने निश्चय नये निर्जरानो स्वरूप कहतां सर्व प्रकारे इच्छानो रोध करि पोताना स्वरूपमे समता भाव वर्चेंबो.

१८९

हिते मोक्षनी:कर्मावस्थानो स्वरूप कहे छै एटले व्यवहार नये करी मोक्ष तेरमे चवद्वे गुणस्थानं केवलीनं कहिये. अने निश्चय नये मोक्षपद कहतां जे सकल कर्म क्षयकरी लोकने अंते विराजमान एहवा सिद्ध परमात्माने जाणवो एणी रीते नवतत्वनो स्वरूप निश्चय व्यवहार करी धारवो.

हिवे पट द्रव्यनो स्वरूप निश्चय व्यव-हार नय रूप ओलखावे छे. तिहां प्रथम जीवनो स्वरूप आगल कह्यो ते प्रमाणे जाणवो १. हिवे धर्मास्तिकाय २. अधर्मास्ति-कायनो स्वरूप कहे छे. एटले निश्चय नयथकी धर्म अधर्म लोकव्यापी खंघ असंख्यात प्रदेश रूप शास्त्रतो छे; अने व्यवहार नयकरी देश

मदेश अने अगुरु लघु जाणवों है हिंदे आकास्तिकायनो स्वरूप कहे छै. एटले निश्चयथकी आकास्तिकायनो खंध लोकालोकव्यापी अनन्त पदेशी शाश्वतो छै, अने व्यवहार नय करी देश मदेश अने अगुरुलघु
जाणवा ४. हिंदे कालनो स्वरूप कहे छै.
एटले निश्चय थकी कालनो एक समय
लोकमे सदाकाल शाश्वतो वर्ते छे. अने व्यवहार नय करी काल उत्पांत, व्यय रूप पलटण स्वभावे जाणवा ५

हिवे पुद्गलनो स्वरूप कहे छै. एटले निश्चय नये करा पुद्गलना अनंता परमाणु लोक में सदाकाल शाश्वता वर्चे छै. अने व्यवहार नये करी पुद्गलना खंध सर्वे

अध्यारमगीता.

228

अशाश्वता जाणवा ६.

एणी रीते निश्चय व्यवहारथकी षटद्रव्य नव तत्व नो स्वरूप जाणबोः ए परमार्थः अने एहवी रीते निश्चय व्यवहार रूप जाण पणे करी साध्यरूप निश्चय दृष्टि अन्तर ने विषे राखी: अने निष्टति पद्यति आदि बाह्य व्यवहार रूप क्रिया करतां थकां अने विचरे जे सुनिराज: एटले विचरे कहतां रीते स्याद बाद रूप जाणपणे करो भव्य प्राणीने हेत उपदेश करतां थका विचरे, जे कहतां ते मुनिराज, अने वली ते मुनि केहवा छै ? भवसागरना तारण निर्भय तेहि जहाज एटले भवसागर कहतां संसार रूप सागर कहतां जे समुद्र तेहने विषे भगता भगता अनंता

१९२ अध्यातमगीताः

कालचक वही गया पिण हजी जीव कांटा प्रतें न पाम्यां, एहवा अपागवार जे समुद्र तेहने विषेथी तारवाने ए सिन केहवा छै? निर्भय जहाज एटले निर्भय जहाज कहतां एहवा सुनीनी सेवा भक्ति रूप आसना वासना जे जीव करे छे, ते जीव संसार समुद्र में भ्रमता, निर्भय कहतां भव भ्रमण रूप भय टालवाने निर्भय जहाज प्रते पाम्यो. एटले जहाज होय तो पाते तरे अने जहाजने आश्रय तेहने पिण तारे. माटे एहवा जहानरूप मुनि-राज संसार रूप समुद्र पाते तरे, अने भव्य प्राणीने पिण तारे. अने वली ए मुनि केहवा छे ? ॥ ४६ ॥

१९३

ढालः—

वस्तु तत्वै रम्या ते नियंथ । तत्व अभ्यास तिहां साधु पंथ ॥ तिणै गीतार्थ चरणे रहीजे । ग्रुद्ध सि-द्धांत रस तो लहोजे ॥ ४७ ॥

अर्थ: — वस्तु तत्व रम्या ते निग्नंथ.
एटले वस्तु तत्व कहतां पोताना आत्मानो
वस्तु धर्म सत्तागतने विषे अनन्तो रह्यो छे,
ते धर्मने ओलखी, प्रतीत करी, अने रम्या
कहतां तेहना ध्यानने विषे प्रवर्त्या. अने वली
ए ग्रुनि केहवा छे ? तो के निग्नंथ. एटले
निग्नंथ कहतां, चौदह अभ्यंतर, नव विध
वाह्यनी गंठो तने ग्रुनिराज. एटले चौदह

अभ्यंतर कहतां त्रण वेद, अने हासादिक पट, एक मिध्यात्व ए दश, अने क्रोधादिक चार कपाय, ए चौदह प्रकारे अभ्यन्तरः अने धन, धान्य, क्षेत्र, वधु, रूपुं, सावन, दुपय, चउपय, क्रवय ए नव प्रकार बाह्य परिग्रहना. अने आगले चौदह प्रकार कहा ते अभ्यंतर परिग्रह जाणवोः एणी रीते बाह्य अभ्यंतर थइने त्रवीश प्रकारे परिग्रह रूप गंठीने भेदे कहतां छेदे तेहने साधु मुनि-राज कहिये. अने वली साध कोने कहिये? तो के, तत्व अभ्यासे तिहां साधु पंथ एटडे तत्व कहतां पोताना आत्मतत्वने निपजाववी, अने अभ्यासे कहतां तेहनां अभ्यासने विष सदाकाल निरंतर पणे जेहनो उपयोग प्रते

386

वर्से तिहां साधुपंथ जाणवा तेणे गीतार्थ चरण रहीं एटले तेण कहतां ते कारण माटे गीतार्थ मुनि के चरणे रहिजे अने एहवा गीतार्थ मुनिना चरण कमण सेवा थकी द्रयूं नीपजे ? तो के शुद्ध सिद्धांत रस तो लहिजे एटले शुद्ध कहतां निर्मल यथार्थ निःसंदेह पण सिद्धान्त कहतां एहवा आगम संबंधी या ज्ञान रस पते चाखीजे अने वली ए मुनि केहवा छे ? ।। ४७ ॥

श्रुत अभ्यासी चोमासी वासी लींबड़ी ठाम । शासनरागी सौ-भागी श्रावकना बहु धाम ॥ खर-तर गच्छ पाठक श्री दीपचंद सुप-

साय । देवचंद्र निज हर्षे गायो आतमराय ॥ ४८ ॥

अर्थ:--एटले श्रुतअभ्यासी कहतां श्रुत ज्ञानने अभ्यासे करीने यथार्थ स्वसत्ता, परसत्ताना भासन रूप उपदेश करतां: अने चौमासी वासी लींबडी ठाम. एटले लींबडी ग्रामने विषे चौमासो प्रते वसीने ए ग्रंथनी रचना प्रते करी. एटले लींबडी ग्राम केहवी **छे ? तोके. शासनरागी सोभागी श्रावकना** बह धाम. एटले शासनरागी कहतां जिन-शासन ना रागी, जिनशासनना उद्योत ना करणहार, जिनशासननी उन्नति कहतां महि-माना वधारणहार. एहवा सोभागी सिरदार.

१९७

यथार्थ भासन रूप आत्मउपयोगी व्यवहार क्रिया रूप आचारना प्रतिपालक, जिनशासन दीपावक, देव ग्ररु भक्तिकारक, एहवा श्रावक पुण्य प्रभावक, ज्ञानचर्चारक एहवा श्रावकना बहु कहतां घणा, अने धाम कहतां वसवाना घर प्रते जाणवा. श्री खरतर-गच्छ पाठक श्रीदीपचंद सुपसाय. एटले खरतर गच्छ मध्ये उपाध्याय श्रीदीपचंद गरुने पसाय कहता प्रसादे करीने: देवचंद्र निज हर्षे गायो आत्मरायः एटले तेहनो शिष्य देवचन्द्र मनीये, निज कहतां पोताने हर्षे करीने, गायो कहतां संस्तव्यो, अने आत्मराय कहतां आत्मराजानो यथार्थ पणे आत्मिक स्वरूप प्रतं वखाण्यो ॥ ४४ ॥

१९८

अध्यात्मगीता.

हालः--

आत्म ग्रुण रमण करवा अभ्यासै। शुद्ध सत्तारसीने उह्यासे । देवचंद्रे रची अध्यात्म--गीता। आत्म--रमणी मणी स प्रतीता ॥ ४९ ॥

अर्थः--आत्मगुण रमण करवा अभ्यास एटले आत्मगुण कहतां आत्माना ज्ञानादि अनंत गुणने विषे भव्य जीवने रमण करवा अभ्यासे, एटले तेहने विषे रमण करवा रूप अभ्यासने अर्थे: अने ग्रुड सत्तारसीने उछासे एटले शुद्ध कहतां निर्मल अने सत्तारसी कहतां आत्मसत्ताना रसिया, एइवा साधु मुनिराज तेहने उछासे देवचंदै रची आत्मगीता. एटले

१९९

देवचंद्र गणी गीतार्थ मुनीये आत्मगीता कहतां आत्मगीत रूप शिझाय पृते, रचि कहतां रचना पते करी ते रचना केहने अर्थे करी? नोके, आत्मरमणी मुनि सु प्रतीता एटले आत्मरमणी कहतां जेणे पाताना आत्मस्वरूपने विषे रमण पते करचां हे, एहवा मुणी कहतां जे मुनि अने सुकहतां भली तरह, प्रतीता कहतां तेहने स्वरूपनी पर्यात करवाने वास्ते.

श्री मारवाड़ मध्ये श्री पार्ठी नगरे श्राविका घाई लाइने सीखवाने अर्थे हेतु उप-देशने माटे संवत् १८८२ ना अपाढ वदी २ गुरुवारे ए ग्रंथनी वालाववीय रूप रचना प्रते करी॥ ४९॥

संवेगीमां जे सरदार । तेहना गुण कहतां

नहिं पार ॥ समरचां संकट दूरे टले। सेच्यांथी शिव सम्पद् मिले ॥ १ ॥ जिन
उत्तम पद पंकज रूप । तेहनें सेवे सुर नर
भूप ॥ अमी कुंअर कहे निज रूप । ए
अध्यात्म मीतानो स्वरूप ॥ २ ॥ अल्पचुद्धि
में रचना करी । शुद्ध करो पंडित जन मिली ॥
भणे गुणे वलि जे सांभले । तिम घर लक्ष्मी
लीला करे ॥ ३ ॥



